–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2787250
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
सितम्बर, 2003 वर्ष 2 अंक 7

क्या कामन सिविल कोड दंगा फसाद को रोक सकता है ?

हम से कहा जाता है कि भारत के एकत्व के लिए, सुरक्षा के लिए तथा सम्मिलित स्वदेशी चेतना के लिए ''यूनीफार्म सिविल कोड'' प्रचलित हो। तो मैं एक सीधी सी बात पूछता हूं, स्कूल का बच्चा भी इसका उत्तर दे सकता है कि पहला महायुद्ध जो हुआ था वह वास्तव में बर्तानिया और जर्मनी के बीच आरम्भ हुआ था जर्मन और अंग्रेज दोनों न केवल क्रिश्चयन हैं बल्कि प्रोटिस्टेंट भी हैं और उनका पर्सनल ला बिल्कुल एक है। यह कोई भी व्यक्ति पता लगा सकता है कि जहां तक ईसाई कानून का सम्बन्ध है वह एक है फिर यह दोनों दो दुश्मनों की तरह क्यों लड़े ? अगर यूनीफार्म सिविल कोड युद्ध को रोक सकता है तो उसको वहां रोकना चाहिए था। फिर दूसरे महायुद्ध का भी यही हाल रहा कि क्रिश्चयन और प्रोटिस्टेंट जिनकी संस्कृति भी, प्रसनल कानून भी और रहन सहन भी एक है वह इस तरह लड़े जैसे एक दूसरे के खून के प्यासे हों। आप न्यायालयों में भी जाकर देख आइये कि जो मुक़द्दमे आते हैं मुसलमान मुसलमान के ख़िलाफ मुद्दई (वादी) मुसलमान मुसलमान का प्रतिवादी है और मुसलमान मुसलमान की आबरू मिट्टी में मिला देना चाहता है। उसके घर पर हल चला देना चाहता है इन दोनों का पर्सनल ला एक है। कभी कभी तो दोनों का खून भी एक होता है। दोनों गुट एक खानदान और एक नस्ल से सम्बन्धित होते हैं। वास्तव में विरोध तथा शत्रुता का सम्बन्ध स्वार्थपरता से है धन लोभ से है, भौतिकता से है, अहंकार से है, व्यवस्था की खराबी से है, गलत शिक्षाक्रम से है, जिसने आचरण का विनाश कर दिया है। इस का सम्बन्ध प्रसनल ला की विभिन्नता से कदापि नहीं है। यह मैं डंके की चोट कहता हूं और चैलेंज करता हूं कि प्रसनल ला एक हो जाने से आचरण में एक कण भी अन्तर न आएगा। फिर क्यों बार बार इस ओर संकेत किया जाता है कि यूनीफार्म सिविल कोड होना चाहिए ताकि परस्पर मेल मिलाप पैदा हो।

मौलाना सै० अबुल हसन अली नदवी

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

- रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजे डार — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल हयी ह़सनी 6
- इस्लाम का पांचवां स्तम्भ हज — मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली हसनी 7
- आध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद — मो० हसन अन्सारी 12
- मुनाजात — मौ० मुहम्मद सानी ह़सनी 13
- नासिरुद्दीन और शाही कोष — आमिना उस्मानी 14
- जिहाद और जंग में अंतर — एस०एम०ए० गीलानी 17
- ईसाइयों के साथ सुल्तान फाते का सद्व्यवहार — डा० मु० इज्तिबा नदवी 18
- जिन्नात का परिचय — अबू मर्ग़ूब 20
- इस्लाम शत्रुओं के सरग़ना — मु० रफी रिसर्च स्कालर 21
- प्रश्नोत्तर — मु०सरवर फारूकी नदवी 22
- आपकी समस्याएं और उनका हल — मु० सरवर फारूकी नदवी 23
- इन्सानियत से बग़ावत — अली मियां 25
- यूरोप की धोखे बाज़ी — सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी 28
- बच्चियों की तालीम व तर्बियत — ख़ैरुन्निसा बेहतर 30
- ह़ज़रत शुअ़ैब की कहानीं — आसिफ़ अंजार नदवी 31
- बाबे करम — अमतुल्लाह तस्नीम 34
- सच्चा राही — क़ारी हिदायतुल्लाह 34
- इन्सानी जीवन में जज़्बात की भूमिका — ह़बीबुल्लाह आज़मी 35
- मधुमेह के शिकार — डा० अगरवाल 37
- बच्चे और माहौल — हबीबुल्लाह आज़मी 38
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — मुईद अशरफ नदवी 40

रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजे डार जहां काम आवे सुई कहां करे तरवार

—डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

दो घटनाएं –

हाजी जुम्मन साहिब बड़े किसानों में से थे। खेत के कामों में नौकरों के साथ खुद भी लगते। दो लड़के थे दोनों यूनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, जब वह अवकाश में घर आते तो पिता को खेतों में लगा देख कर वह भी खेत में काम करने लगते।

हाजी साहिब बड़े मिलंसार थे। कई डाक्टरों, इन्जीनियरों और ऊंचे व्यापारियों से घरेलू सम्बन्ध थे। एक दिन उन को सूचना मिली की उनके एक डाक्टर मित्र का ऐक्सीडेन्ट हो गया है और वह अस्पताल में भरती हैं। उसी समय उन को बताया गया कि उनके नौकर भगवान दास के पिता सजीवन को काल्रा हो गया है। वह तुरन्त अपने नौकर के घर पहुंचे, भगवान दास और उस के घर वाले बहुत ही व्याकुल थे। वह अपने साथ लाल दवा (पुटैशियम परमैगनेट) लेते गये थे। पहला काम तो उन्होंने यह किया कि घरवालों तथा मुहल्ले वालों को आदेश दिया कि वह लाल दवा डाले बिना पानी न पियें। जिस खाने पर मक्खियां बैठ चुकी हों उसे न खाएं। बासी खाने, घुले फल, खुली मिठाइयां न खाएं। दूसरा काम यह किया कि तुरन्त चूना मंगवा कर मल तथा उल्टी पर डलवाया और कहा इसे दूर ले जाकर गड्ढे में गाड़ दो या जला दो। यह दोनों काम बहुत ही कम समय में करवा कर सजीवन को काल्रा अस्पताल पहुंचा दिया तब अपने डाक्टर दोस्त से मिलने गये जिनके पैर में फ्रैक्चर हो गया था। जब वह पहुंचे तो कच्चा प्लास्टर चढ़ चुका था। हाजी साहिब को उनके घर वालों ने कई बार टोका भी कि पहले आप को डाक्टर साहिब को देखने जाना चाहिए परन्तु हाजी साहिब ने कहा ठीक है डाक्टर साहिब के पास पहुंचने के लिए मैं स्वयं व्याकुल हूं परन्तु मुझे पहले सजीवन की सहायता करना है।

हाजी जुम्मन साहिब के एक मित्र हाजी छंगा साहिब एक दूसरे गांव में रहते थे। वह हाजी जुम्मन से आयु में कम परन्तु धन में काफी बढ़े हुए थें उनके सम्बन्ध भी बड़े बड़े लोगां से थे। उनका सम्बन्ध तहसीलदार साहिब से भी था।

एक जुमे को सूचना मिली कि तहसीलदार साहिब की तबीअ़त ख़राब हो गई है। हाजी साहिब ने गुस्ल किया कपड़े बदले और तहसीलदार साहिब की अ़ियादत को निकल पड़े। इरादा किया कि तहसीलदार साहिब की अ़ियादत भी करूंगा और वहीं तहसील की मस्जिद में जुमा अदा करूंगा।

हाजी साहिब का एक नौकर था दरगाही उसकी मां काफी दिनों से बीमार थी। अल्लाह की मर्जी उसी जुमे को दस बजे उनका इन्तिक़ाल (देहान्त) हो गया। बेचारे दरगाही के पास कफ़न के पैसे न थे। वह हाजी साहिब के पास यह सोच कर गया कि हाजी साहिब अपने पास से कफ़न का इन्तिज़ाम कर देंगे नहीं तो क़र्ज़ तो दे ही देंगे। जिस वक़्त हाजी साहिब के पास पहुंचा हाजी साहिब तहसीलदार साहिब की अ़ियादत के लिए घर से बाहर आ चुके थे। दरगाही ने रूंधी आवाज़

में मां के इन्तिकाल की खबर सुनाई और कफ़न के पैसों की मांग की। हाजी साहिब को यह बात बे मौक़ा लगी। उन्होंने कहा इस वक़्त तो मैं तहसीलदार जी की अ़ियादत को जा रहा हूं।

दुखी दरगाही घर वापस आकर एक ओर बैठ कर रोने लगा। लोग समझ रहे थे कि मां के ग़म में रो रहा है मां का दुख तो उसे था ही परन्तु वह कफ़न की फ़िक्र में रो रहा था। महल्ले के एक साहिब ने भांप लिया और चुपके से दरगाही के हाथ पर ज़रूरत भर के पैसे रखे और कहा तेज़ी से काम करके जुमे की नमाज़ तक जनाज़ा तैयार कर दो। ऐसा ही हुआ। जुमे की नमाज़ के बाद जनाज़े की नमाज़ हुई और हाजी छंगा की वापसी से पहले ही मुर्दा दफ़न हो चुका था।

अल्लाह की मर्जी काफी दिनों बाद एक रोज़ एक ऐक्सीडेन्ट में हाजी छंगा बेहोश हो कर अस्पताल दाख़िल हुए। खून काफ़ी निकल चुका था। खून चढ़ाने की ज़रूरत थी। तहसीलदार साहिब भी अस्पताल पहुंचे हुए थे और ताजा खून की खोज में व्याकुल थे। चेक करने से पता लगा कि दरगाही के ख़ून का ग्रूप हाजी साहिब के ख़ून से मिलता है। वह हट्टा कट्टा था। उसने डाक्टरों से कहा कि जितनी जरूरत हो मेरा खून लेकर हाजी साहिब को बचाओ। लोग दरगाही के इस साहस पर चकित थे। दरगाही का ख़ून हाजी साहिब को चढ़ाया गया। हाजी साहिब ठीक हुए एक सप्ताह बाद वह घर आए तो उनको दरगाही की कुर्बानी बताई गई हाजी साहिब की आंखों में आंसू आ गये और उन्होंने स्वयं यह दोहा पढ़ा :–

रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजै डार।
जहां काम आवै सुई कहाँ कर तरवार ।।

फिर दरगाही को बुलाया अपने पास बिठाया और मां के देहान्त के समय वाली बात दुहरा कर बहुत बहुत क्षमा चाही। दरगाही बोला हमारे दिल में इस तरह की कोई बात आई ही न थी। अल्लाह आप को ज़िन्दा रखे और खुश रखे। हम गरीबों का भी आप के द्वारा भला होता रहे। हाजी जी ने दरगाही की बीवी को बुलवाकर अपनी बीवी के द्वारा उसे एक उचित रकम भली नीति से भेंट करवाई।

आंखों देखी :– अब हरे पेड़ काटना क़ानूनन मना है। जिस साल ज़मीनदारी का खातिमा हुआ उस साल और उसके कई साल बाद तक बाग़ों के कटने की एक हवा चल गई थी। उसी काल में एक ठेकेदार एक बाग कटवा कर लकड़ियां बैल गाड़ियों द्वारा एक ऊंची जगह एकत्र करवा रहा था। एक नवयुवक अपनी गाड़ी से लकड़ी उतार चुका था। उस ने जुवे को बाहरी ओर से उठाया और खुद ही खींच कर ऊंची जगह से नीचे लाने लगा। उसका ध्यान इस ओर न जा सका कि जब गाड़ी ढाल पर भागे गी तो वह उसे संभाल न सकेगा। ऐसा ही हुआ जब गाड़ी ढाल पर चली तो उसके वश में न थी। गाड़ी का शगुन (एक नोक दार लकड़ी जिसे पकड़ कर जुवा उठाते हैं) उसके सीने पर था, पूरी गाड़ी का बोझा उसे ढकेल कर नीचे ले गया जहां दूसरी बैल गाड़ी खड़ी थी उस से टकराते ही इस नवयुवक का काम तमाम हो जाता। परन्तु टकराने से पहले गाड़ी उलार हो गई अर्थात अगला भाग ऊपर को उठ गया खड़ी गाड़ी पर चढ़ गया और नवयुवक गिर कर गाड़ी के नीचे चला गया। उसे चोट तक न आई। एक बुढ़िया भी यह सब देख रही थी। उसने दौड़ कर नव युवक की बलाएं लीं। अपने पास बिठाया फिर कहा मैं तब तक तुम्हें जाने न दूंगी जब तक तुम अपनी कोई महत्वपूर्ण नेकी न सुना दो। नव युवक भी चकित था। थोड़ा सुकून लेकर बोला कि एक समय उसने एक अन्धे को कुंए में गिरने से बचाया था। बुढ़िया चिल्ला कर बोली सत्य कहते हो उसी के बदले में परमेश्वर ने आज तुम को बचा लिया।

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

जानवरों के साथ बरताव :

जमीन के जानवर और हवा की चिड़ियां भी तुम्हारी तरह एक उम्मत हैं। (अनआमः)

जिस तरह हम आपस में एक दूसरे को दुख नहीं पहुंचाते हैं। सब के आराम का ख़याल रखते हैं, इसी तरह जानवरों के साथ भी नर्मी का बरताव करना चाहिए। एक दिन हज़रत उबैदुल्लाह और अ़ब्दुल्लाह के पास कुछ लोग आए और पूछा एक शख़्स घोड़े पर सवार होता है और उसको कोड़ा मारता है, उसके विषय में आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से कुछ सुना है? वह बोले नहीं। उन दोनों की बड़ी बहन अन्दर से बोलीं खुदा खुद कहता है :–

ज़मीन के जानवर और हवा की चिड़िया भी तुम्हारी तरह एक उम्मत हैं।

एक सहाबी ने हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि मैंने अपने ऊंटों के लिए पानी के जो हौज़ बनाए हैं उन पर भूले भटके ऊंट भी आ जाते हैं अगर मैं उनको पानी पिलाऊं तो क्या मुझ को उस पर सवाब मिलेगा? फ़रमाया हर प्यासे या हर जानदार के साथ सुलूक (सद्व्यवहार) करने का सवाब मिलता है।

एक बार आप सहाबा के साथ किसी सफ़र के पड़ाव में थे और ज़रूरत से कहीं गये थे। जब वापस आए तो देखा कि एक साहिब ने अपना चूल्हा ऐसी जगह जलाया है, जहां ज़मीन में या दरख़्त में चींटियों की बिल थी। यह देख कर आप ने पूछा यह किस ने किया है? उन साहिब ने कहा या रसूलुल्लाह मैंने किया है। फ़रमाया बुझाओ। (ग़रज़ यह थी कि इन चींटियों को तकलीफ़ न हो या जल न जाए)

एक औरत के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस पर सिर्फ इस लिए अ़ज़ाब हो रहा है कि इसने एक बिल्ली को बांध दिया था और उस को खाना पानी न दिया था, वह इसी तरह बंधी बंधी मर गयी। फ़रमाया तुम लोग जानवरों के साथ जो बुराई करते हो अगर खुदा उन बुराईयो को मुआफ कर दे तो समझो बहुत गुनाह मुआफ़ कर दिये।

ज़रूरत के बिना किसी जानवर के क़त्ल को बड़ा गुनाह बताया गया है। फ़रमाया किसी ने अगर जानवर को उसके हक़ के बिन ज़ब्ह किया तो खुदा उसके विषय में उससे पूछेगा।

जो जानवर ज़रूरत से ज़ब्ह किये जाएं या मारे जाएं उनके मारने और ज़ब्ह करने में भी हर तरह की नर्मी करने का हुक्म दिया। फ़रमाया खुदा ने हर चीज़ पर इहसान करना फर्ज़ किया है इसलिए जब तुम लोग किसी जानवर को मारो तो अच्छे तरीके से मारो और जब ज़ब्ह करो तो अच्छे तरीके से ज़ब्ह करो। तुम में से हर शख़्स अपनी छुरी तेज कर ले और अपने ज़बीहे (जिस को ज़ब्ह करे) को आराम पहुंचाए।

जानवरों के आराम का ख़याल रखने का हुक्म दिया। फरमाया इन बेज़बान जानवरों के मुआमले में खुदा से डरो। उन पर सवार हो तो अच्छी हालत में रख कर सवार हो और उनको खाओ तो अच्छी हालत में रख कर खाओ।

जानवरों के आपसमें लड़ाने या उनके मुंह पर मारने या उन को दागने से भी हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रोका है।

अशआ़रे बरजस्तः

मक़बूल नदवी

फ़लसफ़ी को बहस के अन्दर ख़ुदा मिलता नहीं
डोर को सुलझा रहा है और सिरा मिलता नहीं
कौन समझाये तुझे मजनूं तेरा दीवाना पन
चाक है दामन तेरा और तू उसे सिलता नहीं
दोस्त जो तेरा हुआ, महबूब जो तेरा हुआ
उसको कोई डर नहीं, उसको कोई चिन्ता नहीं
मिस्ले आईना बना लो अपने तुम अख़लाक़ को
सांप शीशे पर कभी ऐ दोस्तो चलता नहीं
है कोई शहरे खमोशां कैसी वीरानी है यॉं
दे रहा हूं मैं सदा फिर भी कोई सुनता नहीं
सारी कोताही हमारी है हमें है एतराफ
बे सबब कोई किसी को देख कर जलता नहीं
बेच खाएं देश कों और देश की हर चीज़ को
नेता हैं इस देश के लोगो कोई जनता नहीं
जुस्तुजू, इख़लास और जुहदे मुसल्सल के बगैर
काम इस दुन्या में कोई भी कभी बनता नहीं
ता अबद ताज़ा रहे और मुज़महिल ना हो कभी
फूल गुलशन में कभी ऐसा कोई खिलता नहीं
हर तरह का शेर सुन लो आज तुम मक़बूल से
शेर बरजस्ता ही कहता है कभी लिखता नहीं

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

दुन्या की बे वकअ़ती –

१४८. हज़रत उक़बः बिन हारिस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने मदीना मुनव्वरः में रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के पीछे अ़सर की नमाज़ पढ़ी, आप (सल्ल०) ने सलाम फेरा फिर जल्दी से उठे और लोगों की गर्दन फांदते हुए अपनी बीवियों में से किसी के हुजरे तशरीफ़ ले गये, आप (सल्ल०) की उस जल्दी से लोग घबरा गये, कुछ देर के बाद आप बाहर तशरीफ़ लाए तो महसूस फरमाया कि आप की जल्दी से लोग, हैरत में हैं, तब आप (सल्ल०) ने फरमाया, कि मुझे याद पड़ा कि घर में चांदी या सोने की एक डली रह गई है, यह मुझे पसंद न आया, कि वह दिमाग़ में उलझन पैदा करती रहे। इसलिए मैंने जाकर उसको तक़सीम कर देने की हिदायत कर दी। (बुख़ारी)

इन्सान के अ़मल में अल्लाह की मस्लिहत होती है–

१४६.हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि एक आदमी ने कहा, कि मैं कुछ ज़रूर सदक़ः करूंगा, तो सदक़ः लेकर निकला और धोके में एक चोर को दे दिया, सुबह को लोगों में एक चर्चा शुरू हुई कि चोर को किसी ने सदक़ः दे दिया उस आदमी ने कहा ऐ अल्लाह तू ही हम्द और तअ़रीफ़ के लायक है मैं कुछ ज़रूर सदक़ः करूंगा, तो सदकः का माल लेकर निकला, और एक ज़ानिया (व्यभिचारी) को दे दिया, सुबह को फिर लोगों में चर्चा हुआ कि (फलां ने) ज़ानिया (व्यभिचारी) को सदक़ः दिया, उस आदमी को ग़लती का इल्म हुआ तो कहा, ऐ अल्लाह सारी तअ़रीफ़ें तेरे ही लायक हैं, मैंने तो ज़ानिया (व्यभिचारी) को सदक़ः दे दिया, मैं ज़रूर कुछ सदक़ः करूंगा, तो सदक़े का माल लेकर निकला और एक मालदार को दे दिया, सुबह को फिर इसका चर्चा हुआ कि एक मालदार को सदक़ः दे दिया, उसने कहा मेरे अल्लाह सारी तअ़रीफ़ें तेरे ही लिए है, एक बार तो चोर को दे दिया, फिर दोबारह एक ज़ानिया (व्यभिचारी) को दे दिया और तीसरी बार एक मालदार को दे दिया फिर आया तो उससे कहा गया कि चोर को सदक़ः देना अल्लाह की मसलिहत से था, कि शायद अब वह चोरी से बचे, ज़ानिया को भी देना शायद उसको ज़िना से रोकने का ज़रिया बन जाए, रहा मालदार तो हो सकता है, उसको तुम्हारे इस अ़मल से अ़िबरत हो, और खुदा के दिये हुए माल से वह भी खर्च करें। (बुख़ारी)

रसूलुल्लाहि (सल्ल०) सवाल करने वाले को वापस नहीं करते थे– १५०. हज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि०) से रिवायत है कि एक औ़रत बुनी हुई चादर लेकर हुजूर (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुई, और अर्ज़ किया कि अल्लाह के नबी, आप को पहनाने के लिए यह चादर मैंने अपने हाथ से बुनी है, हुजूर (सल्ल०) ने वह चादर कुबूल फ़रमा ली, उस वक्त आप सल्ल० को इस की ज़रूरत थी, फिर वही चादर ओढ़ कर हम लोगों के पास तशरीफ़ लाए एक व्यक्ति ने कहा यह चादर आप हमें दे दें, यह तो बड़ी खूबसूरत है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अच्छा, फिर आप मजलिस में बैठ गये, कुछ देर के बाद वापस तशरीफ़ ले गये, और चादर तह करके उस व्यक्ति को भेज दी, लोगों ने उस व्यक्ति से कहा तुम ने यह अच्छा नहीं किया आप ने उस को ओढ़ लिया था और उस वक़्त आप को इस की ज़रूरत भी थी, तूने हुजूर से यह चादर मांग ली, हालांकि तुम्हें यह मालूम है कि हुजूर किसी सायल को वापस नहीं फ़रमाते, उस व्यक्ति ने कहा, मैंने यह चादर पहनने के लिए नहीं मांगी बल्कि इस लिए मांगी है कि मरने के बाद यही मेरा कफन हो, हज़रत सहल फरमाते हैं कि यही चादर उसका कफ़न बनी।

(बुख़ारी)

ज्यादह चीज़ देने का हुकम –

१५२. हज़रत अबू सअ़ीद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग हुजूर (सल्ल०) के साथ सफर में थे कि उसी ज़माने में एक व्यक्ति, अपनी सवारी पर सवार हो कर आया, और दाएं बाएं देखने लगा, हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया जिसके पास कोई सवारी ज्यादह हो वह उस व्यक्ति को दे दे जिस के पास ज़रूरत से ज्यादा चीज़ें हो वह उसको देदे जिसके पास रास्ते में इस्तिमाल की चीज़ें न हो फिर आपने विभिन्न प्रकार के मालों का ज़िक्र किया,

(शेष पृष्ठ १३ पर)

इस्लाम का पांचवां स्तम्भ हज्ज

मौ० सैयद अबुल हसन अली नदवी

"और लोगों में हज का एलान कर दो, लोग तुम्हारे पास पैदल भी आयेंगे और दुबली ऊंटनियों पर भी, जो दूर–दराज़ रास्तों से पहुंची होंगी ताकि अपने फाइदे के लिए मौजूद हों और ताकि इन निश्चित दिनों में अल्लाह का नाम लें। उन चौपायों पर जो अल्लाह ने उनको दिये हैं, बस तुम भी इसमें से खाओ और दुःखी–मुहताज को भी खिलाओ। फिर लोगों को चाहिए कि अपना मैल कुचैल दूर करें और अपने वाजिबात को पूरा करें और चाहिए कि (इस) प्राचीन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें। (सूरः हज २७–२६)

इस्लाम का पांचवा स्तम्भ हज है। अगर कोई व्यक्ति इसकी शर्तों को पूरा करने के बावजूद हज न करे तो उसके लिए कुरआन व हदीस में ऐसे शब्द आये हैं जिनसे भय पैदा होता है कि इस्लाम के दायरे से और मुस्लिम समुदाय से ख़ारिज न हो जाये। हज विशेष समय में और विशेष स्थान पर अदा होता है अर्थात ज़िलहिज्जः के महीने में और मक्के में।

कुरआन मजीद में हज़रत इब्राहीम (अ०) का क़िस्सा और शान्ति की नगरी मक्के से उनका सम्बन्ध

हज़रत इब्राहीम (अ०) शहर के एक बड़े मुजाविर या पुरोहित के घर में पैदा हुए जिसका पेशा बुत बनाना था, और जो शहर के सबसे बड़े पूजाघर में पुरोहित था और अपनी आस्था और अपने पेशा दोनों से उस पूजाघरके साथ जुड़ा था। यह बड़ी कठिन स्थिति थी, क्योंकि जब अक़ीदा पेशे के साथ और धार्मिक भावना आर्थिक लाभ के साथ मिल जाती है और दोनों साथ चलने लगते हैं तो ऐसी दशा में पेचीदगी और दुशवारी पहले से कहीं अधिक बढ़ जाती है। इस कठोर और अन्धकारमय वातावरण में कोई ऐसी चीज़ न थी जो ईमान और महब्बत को उभार सके और इस मुशरिकाना और बुत परस्ताना जिहालत (अज्ञानता) और हिमाक़त के ख़िलाफ़ बग़ावत पर आमादा कर सके, लेकिन उस "क़ल्बे सलीम" (स्वच्छ हृदय) की बात ही और थी जिसको नुबूवत (पैग़म्बरी) और नवयुग के निर्माण के लिए तैयार किया जा चुका था। वह अपनी बग़ावत उस मरहले (सोपान) से शुरू करते हैं जहां कभी कभी दुन्या के बड़े से बड़े इन्क़लाब का गुज़र नहीं होता। यह घरेलू ज़िन्दगी का स्टेज है, उस घर का स्टेज जहां इन्सान पैदा होता है, पलता बढ़ता है और जवान होता है और हर उस चीज़ का यह तक़ाज़ा होता है कि वह यहीं ज़िन्दगी गुज़ारे। अब वह सारी बातें पेश आती हैं जिनका कुरआन मजीद ने अपने साफ़, स्पष्ट, व्यापक और चकित कर देने वाली शैली में उल्लेख किया है। इनमें हज़रत इब्राहीम (अ०) का बुतों को तोड़ाना, पुजारियों की इस सख़्त नराज़गी, हैरत और लाचारी और इस बाग़ी नौजवान से बदला लेने का शिक्षा, उनके लिए अलाव जलाना, और उसका हजरत इब्राहीम (अ०) के हक़ में ठंडा और सलामती का कारण बन जाना, जाबिर बादशाह के सामने हज़रत इब्राहीम (अ०) का सारगर्भित सवाल व जवाब सब चीज़ें शामिल हैं।

यह इन्कार और बग़ावत इस नतीजे तक पहुंचती हैं कि सारा शहर उनका दुश्मन हो जाता है। पूरी सोसाइटी उनसे नाराज़ नज़र आती है। हुकूमत भी उनका पीछा करती है और यातना देती है लेकिन वह इनमें से किसी की भी परवाह नहीं करते और इसको कोई महत्व नहीं देते। ऐसा मालूम होता है कि जैसे वह इस प्रतीक्षा में थे और इन परिणामों में प्रत्याशा में थे। वह अपने शहर से ठंडे दिल व दिमाग के साथ बहुत खुश और सन्तुष्ट होकर हिजरत करते हैं, चले जाते हैं, इस लिए कि उनकी अस्ल पूंजी अर्थात ईमान की दौलत उनके हाथ में होती है, वह अकेले और बेयार व मददगार सफ़र करते हैं। उनके साथ एक आदमी भी नहीं होता। इस सफ़र में उनको इन्सानों का एक ही नमूना नज़र आता है। वही बुत परस्ती, शिर्क व जिहालत (अज्ञानता) और वासनाओं की गरम बाज़ारी जिस को छोड़कर अपमान का सामना करना पड़ता है, वह अपनी पत्नी को जिन पर बादशाह की बुरी नज़र थी, लेकर कामयाबी के साथ वहां से निकल जाते हैं। इसके बाद शाम पहुंचते हैं, सीरिया की जलवायु

उनको रास आती है और वहीं बस जाते हैं और तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत और बुतपरस्ती की निन्दा का कार्य दोबारा शुरू कर देते हैं।

सीरिया में जहां, हरियाली और खाद्यान्न के साधन प्रचुर मात्रा में थे और जहां नैसर्गिक सुन्दरता भी थी, उनका जी लगता है। लेकिन शीघ्र ही उनको एक ऐसे भूखण्ड की ओर जाने का हुक्म मिलता है जो हरियाली और शादाबी में सीरिया के बिल्कुल विपरीत है। लेकिन हज़रत इब्राहीम (अ०) अपना कोई हक नहीं समझते और किसी क्षेत्र और वतन से उनको लगाव नहीं, वह हुक्म के बन्दर हैं, और सारी दुन्या को अपना वतन समझते और वसुधैव–कुटुम्बकम् के पक्षधर हैं। उनको हुक्म मिलता है कि अपनी पत्नी हाजिरा और दूधपीते बच्चे को लेकर यहां से हिजरत कर जाएं।

एक ऐसी घाटी में पहुंचाने के बाद जिस के चारो ओर जले हुए पहाड़ों के अलावा कुछ न था, जहां की जलवायु और मौसम बहुत सख़्त, पानी का अभाव, हर तरफ़ सन्नाटा था और कोई दोस्त व हमदर्द भी न था जिससे दिल को सन्तोष मिलता, उनको यह हुक्म मिलता है कि अपनी कमज़ोर पत्नी और अपने छोटे बच्चे को अल्लाह के भरोसे और मात्र उसके हुक्म की तामील में छोड़कर यहां से चले जाएं। और इस तरह कि न घबराहट, न बेदिली और न उकताहट, न अधीरता, न अल्लाह के वादे में शंका, बल्कि इसके बजाय मानवीय अनुभवों के विरुद्ध बग़ावत, प्राकृतिक संसाधनों का विरोध, साधनों से निश्चिन्त और अलग–थलग, और अल्लाह पर उस समय भरोसा हो जब क़दम फ़िसलने लगें और बदगुमानी पैदा होने लगे।

उनके जाने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सब बाते घटित होती हैं जिनका डर था। बच्चा प्यास से बेताब हो जाता है, और मां भी प्यासी हो जाती है। लेकिन इस बियाबान में पानी कहां, वहां तो छोटे–छोटे गढ़े भी न थे जिनमें बचा खुचा पानी मिल जाता। मां की ममता जोश मारती है। उनको खतरे का एहसास होने लगता है और वह पानी की तलाश में या किसी ऐसे काफ़िले की तलाश में जिस के पास पानी मिल जाये, बेताब व बेक़रार होकर प्रेमपूर्वक दो पहाड़ियों के बीच में दौड़ने लगती है। दूसरी पहाड़ी के पास पहुंचने के बाद फौरन बच्चे का ख़याल आता कि वह न जाने किस हाल में हो, इसलिए रुके बिना फिर दोबारा वापस आकर इत्मीनान करती हैं कि वह बच्चा ज़िन्दा और खुशहाल है। इसके बाद फिर रहा नहीं जाता और वह दोबारा फिर उसी पहाड़ी की ओर दौड़ जाती है कि शायद कहीं कोई आदमी नज़र आ जाये या किसी जगह पानी दिखाई पड़ जाय। एक ओर वह बेताब व बेकरार होती हैं दूसरी ओर वह धीरज नहीं खोती। यद्यपि वह नबी की पत्नी और नबी की मां हैं, वाह्य साधनों और प्रयास व तदबीर को ईमान व धैर्य के विपरीत नहीं समझती। वह बेक़रार अवश्य हैं किन्तु तनिक भी निराश नहीं। खुदा पर पूरा भरोसा है लेकिन थक हार कर बैठ नहीं जाती। ऐसा दृश्य शायद आसमान ने कभी नहीं देखा था। अल्लाह की रहमत जोश में आई और चमत्कार यह हुआ कि एक स्रोत वहां फूट पड़ा, यह वह ज़मज़म का पवित्र और अमिट स्रोत है जो न कभी सूखता है न इसमें कोई कमी आती है। वह सारी दुन्या और तमाम नस्लों के लिए काफी है और आज तक सारी दुन्या उससे लाभान्वित हो रही है। अल्लाह ने इसके पानी को स्वाथ्यवर्धक भी बनाया है, इसमें पौष्टिकता भी है, सवाब भी और बरकत भी।

अल्लाह ने हज़रत हाजिरा की इस बेक़रारी को ऐसा दर्जा दे दिया कि दुन्या के बड़े से बड़े बुद्धिमान और विचारक को और बड़े से बड़े बादशाह को इसका पाबन्द कर दिया, फलतः जब तक इन दो पहाड़ियों के बीच 'सअी' न कर लें उनका हज पूरा नहीं हो सकता। यह दोनों पहाड़ियां वास्तव में हर लौ लगाने वाले की मंजिल हैं, और यह 'सअी' इस दुन्या में मोमिन (सत्यवान) के नज़रिये की बेहतरीन मिसाल है, क्योंकि वह भी बुद्धि और भावना और एहसास और अ़कीदे का संगम होता है, वह अक़्ल से भी पूरी तरह काम लेता है लेकिन कभी कभी अपनी उन भावनाओं के सामने भी माथा टेक देता है जिन की जड़ें अ़क़्ल से भी जियादा गहरी और मजबूत होती हैं। वह एक ऐसी दुन्या में रहता है जो प्रेरणा, वासना, श्रृंगार व सजावट और घटाओं से भरी हुई है लेकिन सफ़ा व मरवा पहाड़ियों के बीच 'सअी' करने वाले की तरह वह किसी तरफ़ नज़र उठाये और किसी और चीज़ में अटके बिना और किसी दूसरी जगह ठहरे बिना तेजी के साथ वहां से गुज़र जाता है। उसको सबसे अधिक चिन्ता अपने लक्ष्य और अपने भविष्य की होती है। वह अपनी ज़िन्दगी के कुछ गिने चुने चक्करों की तरह समझता है। यहां उसके सारे किया कलाप का निचोड़ दो शब्दों में "प्रेम" और "ताबेदारी" है।

अब यह बच्चा 'इस्माईल' कुछ सयाना होता है और उस उम्र को पहुंचता है जब बाप को अपने बच्चे से स्वाभाविक रूप से अधिक लगाव होता है, वह अपने बाप के साथ बाहर जाता है, उनके साथ दौड़ता भागता है और

साथ साथ रहता है उनके पिता जिनमें इन्सानी हमदर्दी कूट–कूट कर भरी थी, अपनी आंखों की ठंडक और जिगर के टुकड़े से बड़ा प्रेम रखते हैं, और यही सबसे बड़ी मुश्किल है। महब्बत को सब कुछ गवारा है, शिर्कत गवारा नहीं, वह प्रतिद्वन्दी को कभी सहन नहीं कर सकती, यह आम इन्सानी महब्बत का हाल हैतो यहां तो मुआमला अल्लाह की महब्बत का था, हज़रत ख़लील का दिल अल्लाह के लिए मखसूस है। जब हज़रत इब्राहीम (अ०) को अपने प्यारे बेटे की कुर्बानी का इशारा मिलता है। नबियों का स्वप्न "वही" के बराबर होता है, इसलिए जब कई बार उनको इशारा मिला है तो वह समझ गये कि अल्लाह की यही मन्शा है और उनको यह काम करना है। वह अपने बेटे का इम्तिहान लेते हैं क्योंकि यह काम उनकी रज़ामन्दी के बिना कर पाना कठिन है। बेटा भरपूर धैर्य का आश्वासन देता है। कुरआन मजीद में इरशाद है :–

अनुवाद –" उन्होंने कहा, बेटा मैंने स्वप्न देखा है कि मैं तुम्हें ज़ब्ह कर रहा हूं, सो तुम भी सोच लो, तुम्हारी क्या राय है। वह बोले, ऐ मेरे बाप आप कर डालिये जो कुछ आप को हुक्म मिला है, आप इन्शा अल्लाह मुझे सब्र करने वालों में पायेंगे।" (सूरः साफ़्फ़ात – १०२)

अब वह बात पेश आती है जिसके सामने अ़क़्ल हैरान है। बाप अपने प्यारे बेटे को लेकर बाहर निकलते हैं और खुदा के इशारे पर अपने बेटे की कुर्बानी करने जा रहे हैं और यह भी अपने रब के और अपने पिता के आज्ञापालन में उनके साथ चल रहे हैं, दोनों का उद्देश्य एक है अपने मालिक का हुक्म बजा लाना और बिना हीला हवाला उस के आगे सर रख देना। रास्ते में उनको शैतान मिलता है जिसने इन्सान को हमेशा बहकाने की कोशिश की है, वह उनको बहकावे में डालता है, उनका हमदर्द बनकर उन्हें अपने इरादे से मुकरने की कोशिश करता है, लेकिन वह उस की एक नहीं चलने देता, और अल्लाह के हुक्म की तअ़मील के लिए कमर कस लेतें हैं। अब वह क्षण आता है जिसको देखकर फ़िरिश्ते भी बेचैन हो जाएं और दानव और मानव भी। वह अपने लड़के को ज़मीन पर लिटा देते हैं और जब्ह करने की पूरी कोशिश करते हैं, अब अल्लाह की मर्जी बीच में हस्तक्षेप करती है, इसलिए कि उद्देश्य हज़रत इस्माईल का ज़ब्ह करने का नहीं था बल्कि उस महब्बत को ज़ब्ह करना था जो खुदा की महब्बत में शरीक हो जाती है। और प्रतिद्वन्दी बनने लगती है, और यह महब्बत गले पर छुरी रखते ही ज़ब्ह हो चुकी थी। हज़रत इस्माईल तो इसलिए पैदा हुए थे कि वह ज़िन्दा रहें, फूलें फलें, उनसे नस्लें चले और अन्तिम नबी ह० मुहम्म सल्ल० भी उन ही की सन्तान में हों, इसलिए वह अल्लाह की मर्जी पूरी होने से पहले ही ज़ब्ह कैसे हो सकते थे। अल्लाह ने हज़रत इस्माईल के "फिदयः" के तौर पर जन्नत से एक मेंढ़ा भेजा ताकि उसको उनकी जगह ज़ब्ह करें और हज़रत इब्राहीम (अ०) के तमाम अनुयायी और उनके बाद की तमाम नस्लों के लिए सुन्नत बना दिया।

कुर्बानी के दिनों में वह इसी "महान बलिदान" (अ़ज़ीम कुर्बानी) की याद ताज़ा करते हैं और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों को खर्च कर के कुर्बानी देते हैं।

अनुवाद – "फिर जब दोनों ने हुक्म को स्वीकार कर लिया और (बाप ने बेटे को) करवट पर लिटा दिया, और हमने तुम्हें आवाज़ दी ऐ इब्राहीम तुम ने ख़्वाब को सच कर दिखाया (वह समय ही अ़जब था) हम सच्चों को ऐसे ही बदला दिया करते हैं, बेशक यह भी खुला हुआ इम्तिहान था और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके बदले में दिया, और हमने पीछे आने वालों में यह बात रहने दी कि इब्राहीम पर सलात हो" (सूरः साफ़्फ़ात १०३–१०६)

हज़रत इब्राहीम (अ०) और शैतान के इस किस्से को भी अल्लाह ने अमर बना दिया, और उन जगहों पर जहां शैतान उनका रास्ता रोक रहा था और उनको बहका रहा था, कंकरियां मारने का हुक्म दिया और इसको हज की एक क्रिया बना दिया। इसका उद्देश्य यह है कि शैतान से नफ़रत पैदा हो, उससे बग़ावत की अभिव्यक्ति हो। यह वह अदा है जिसमें एक मोमिन को बड़ी लज़्ज़त महसूस होनी चाहिए। कहानी के इस किरदार (आचरण) को दोहराते समय उसको यह महसूस होता है कि वह बुराई की ताकतों के साथ संघर्षरत है।

अब इस घटना पर एक ज़माना गुजर जाता है, यह बच्चा अब जवान हो चुका है। अल्लाह ने उसे पैग़म्बरी दी है। हज़रत इब्राहीम (अ०) के इस दीन के लिए अब एक ऐसे केन्द्र की ज़रूरत थी जिससे ईमान को बल मिलता, सम्बल प्राप्त होता इस दुन्या में बादशाहों के महल और बुतों के घर तो बहुत थे, लेकिन अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह ही की अ़िबादत के लिए अब तक कोई घर न था। जिसमें सत्यनिष्ठा के साथ उसकी पूजा होती और उसकी अ़िबादत करने वालों और ज़ियारत करने वालों के लिए हर प्रकार के प्रदूषण और अपवित्रता से पाक व साफ़ रखा जाता। अब जब कि दीन अपने पैरों पर खड़ा हो गया है और मुस्लिम उम्मत की बुन्याद पड़ चुकी

है, हज़रत इब्राहीम (अ०) को कअ़बे के निर्माण का निर्देश दिया जाता है। एक ऐसा घर जो सारी मानवता के लिए अम्न का गहवारा (केन्द्र) हो, और जहां केवल अल्लाह की अ़िबादत की जाय बाप बेटे दोनों मिलकर इस पवित्र घर का निर्माण करते हैं, जो देखने में बहुत सादा और मामूली हैं लेकिन अपनी बड़ाई के लिहाज़ से बहुत बुलन्द है। बाप बेटे दोनों पत्थर ढोते हैं और उसकी दीवारें उठाते हैं। यह घर ईमान व निष्ठा की उन बुन्यादों पर काइम किया गया जिसकी नज़ीर दुन्यां में और कहीं नहीं मिलती। अल्लाह ने उसे खूब–खूब चाहा, उसे अमर बनाया, उसको सौन्दर्य दिया और उसे दुन्या के लिए आकर्षण का केन्द्र बना दिया। लोग वहां सर के बल बल्कि आंखों और पल्कों के बल आते हैं और उस पर जान व दिल निछावर करते है, यह घर हर प्रकार के दिखावे और सजावट से खाली है और एक ऐसी नगरी में स्थित है जो सभ्यता और संस्कृति के हंगामों से बहुत दूर है लेकिन फिर भी इसमें वह आकर्षण है कि लोग इसकी तरफ़ खिंच खिंच कर टूटे पड़ते हैं और इसकी एक झलक देखने के लिए बेताब रहते हैं। जब वह घर बनकर तैयार हो गया तो ग़ैब (अदृश्य) से यह सदा आई, आकाशवाणी हुई –

अनुवाद – "और लोगों में हज का एलान कर दो, लोग तुम्हारे पास पैदल भी आएंगे और दुबली ऊंटनियों पर भी जो दूर दूर से आई होंगी ताकि अपने लाभ के लिए आ मौजूद हों" और ताकि खास दिनों में अल्लाह का नाम लें उन चौपाओं पर जो अल्लाह ने उन्हें दिये हैं, बस तुम भी उसमें से खाओ और दुखियारों को भी खिलाओ, फिर लोगों को चाहिए कि मैल कुचैल दूर करें और अपने वाजिब को पूरा करें और चाहिए कि इस प्राचीन घर का तवाफ़ (परिक्रमा) करें। (सूरः हज २७,२८,२९)

हज़रत इब्राहीम (अ०) के ज़माने में यह दुन्या कारणों की गुलाम थी और लोग इन पर आवश्यकता से अधिक भरोसा करने लगे थे बल्कि यह समझ बैठे थे कि उनका अपना अस्तित्व है और प्रभावशाली है फलतः इन कारणों (असबाब) ने पालनहारों (अर्बाब) का स्थान ले लिया। इस चीज़ ने एक नई बुतपरस्ती पैदा कर दी। हज़रत इब्राहीम का जीवन वास्तव में इन्हीं "बुतगरों" और "बुतपरस्तों" के विरुद्ध बग़ावत थी। वह विशुद्ध एकेश्वरवाद (तौहीद) और अल्लाह की पूरी क़ुदरत पर ईमान की दअ़वत थी, आहवान था और इस बात का खुला एलान कि वही तमाम चीज़ों को अस्तित्व प्रदान करता है, वही असबाब को पैदा करता है, और वही उनका मालिक है वह जब चाहता है असबाब को असबाब पैदा करने वाले से विलग करता है और चीज़ों से उनके गुणों को समाप्त कर देता है और उनसे वह चीज़ें प्रकट होती हैं जो उसकी विरोधी होती हैं, उसको जब चाहता है और जिस चीज़ के लिए चाहता है, प्रयोग करता है और जिस काम पर चाहता है लगा देता है। लोगों ने हज़रत इब्राहीम (अ०) के लिए भट्टी तैयार की और कहा :

अनुवाद : "इन्हें तुम जला दो और अपने माबूदों का बदला ले लो अगर तुम्हें (कुछ) करना है।"

(सूरः अंबिया–६८)

लेकिन हज़रत इब्राहीम (अ०) जानते थे कि आग अल्लाह के इरादे के अधीन है, जलाना उसका स्थायी गुण नहीं जो कभी उससे अलग नहीं हो सकता, यह एक गुण है जिसे अल्लाह ने उसमें अमानत के तौर पर रखा है, उसकी लगाम उसी के हाथ में है जब चाहे ढील देदे और जब चाहे खींच ले और उसी को देखते देखते चमन बनादे, इस ईमान व यक़ीन के साथ वह उसमें इत्मीनान के साथ प्रवेश कर गये और वही हुआ जो उन्होंने सोचा था।

अनुवाद – "हमने हुक्म दिया ऐ आग तू ठंडी और आराम देने वाली हो जो इब्राहीम के हक़ में। और लोगें ने उनके साथ बुराई करनी चाही थी, सो हमने उन्हीं (लोगों) को नाकाम कर दिया।" (सूरः अंबिया–६९–७०)

सामान्यतः यह समझा जाता है कि जीवन पानी, उपजाऊ मिट्टी और खेत व बागों पर काइम है, अतएव इन दिनों भी लोग अपने गोत्रों और खानदानों के लिए ऐसे क्षेत्र की खोज में रहते थे जहां यह चीज़ें उपलब्ध हों और जहां बसा जा सके। हज़रत इब्राहीम (अ०) ने एक आम विश्वास के विपरीत काम किया उन्होंने अपने छोटे से परिवार के लिए जिसमें पुत्रऔर पत्नी शामिल थे एक ऐसी गैर आबाद घाटी का चयन किया जहां पानी नहीं था न ही कुछ उगता था, न व्यापार का अवसर जो अलग थलग व्यापारिक केन्द्रों और राजमार्गों से दूर स्थित यहां पहुंचकर उन्होंने अल्लाह से दुआ की कि वह उनकी रोज़ी रोटी में बरकत दे, दिलों को उनकी ओर फेर दें और हर प्रकार के खाने पीने से चीज़ें और फल वहां पहुंचते रहें। उन्होंने दुआ की :

अनुवाद – ऐ हमारे परवरदिगार मैंने अपनी कुछ औलाद को एक ग़ैर खेत वाले मैदान में आबाद कर दिया है, तेरे महान घर के निकट, इसलिए कि वे लोग नमाज़ पढ़ें सो तू कुछ लोगों के दिल इनकी तरफ फेर दे, और उन्हें खाने को फल दे जिससे यह शुक्रगुजार रहें। (सूरः इब्राहीम–३७)

अल्लाह ने उनकी दुआ क़बूल

फ़रमायी और उन के शहर को हर प्रकार के फलों और अपने विभिन्न वरदानों से भर दिया।

अनुवाद–"क्या हमने उनको अम्न व आमान करने वाले हरम में जगह नहीं दी जहां हर प्रकार के फल खिंचे चले आते हैं, हमारे पास से बतौर खाने के, लेकिन इनमें से अक्सर लोग (इतनी बात भी) नहीं जानते।" (सूरः क़सस–५७)

हज़रत इब्राहीम (अ०) ने अपने घर वालों को एक ऐसी ज़मीन में लाकर छोड़ दिया जहां हलक़ तर करने के लिए पानी भी न था, किन्तु ऐसी रेगिस्तानी और पथरीली ज़मीन से अल्लाह ने एक सोता–जारी कर दिया। रेत से पानी स्वतः उबलने लगा, और आज तक उसी प्रकार जारी है। लोग जी भर के उसको पीते हैं और पीपे भर कर अपने साथ ले जाते हैं।

वह अपने घर वालों को एक ऐसी वीरान और ग़ैरआबाद जगह छोड़ देते हैं जहां आदमी का साया भी नज़र नहीं आता लेकिन देखते देखते वह जगह ऐसी आबाद हो जाती है कि दुन्या के हर इलाके के लोग वहां देखे जा सकते हैं। हज़रत इब्राहीम (अ०) का जीवन उनके युग की सोसाइटी की हद से बढ़ी हुई भौतिकवादिता के विरुद्ध एक चुनौती था और ईश्वरीय ताक़त पर भरपूर भरोसे की अभिव्यक्ति अल्लाह हमेशा असबाब (कारण) को ईमान के अधीन बना देता है।

हज हज़रत इब्राहीम (अ०) के कर्मों की यादगार है

हज और उससे सम्बन्धित तमाम किया–कलाप वस्तुतः तौहीद (एकेश्वरवाद), अल्लाह पर भरोसा, उसके रास्ते में कुर्बानी, कारणों को नकारने और खुदा के आज्ञापालन और खुशनूदी को अपने जीवन में उतारने की कोशिश का नाम है। वह आदत, रस्म व रिवाज, झूठे स्टेन्डर्ड, बनावटी मूल्यों के विरुद्धएक खुली हुई बग़ावत और ईमान, सच्चे प्रेम, अद्वितीय त्याग व बलिदान व निःस्वार्थ भावना का नवीनीकरण है। वह हज़रत इब्राहीम (अ०) के रास्ते पर चलने, और उनकी शिक्षा व दअ़वत के झंडे को ऊंचा रखने की दअ़वत है।

हज का वातावरण अध्यात्मक पाकीज़गी से इस क़दर भरा होता है कि कठोर से कठोर हृदय भी मोम और पत्थर जैसे दिल भी पानी हो जाता है। वह आंखें जिन से कभी भय या प्रेम को दो आंसू भी न टपकते थे, मक्का पहुंचकर रो पड़ती हैं। ठंडे दिलों में एक बार फिर गरमाहट आ जाती है और अल्लाह की रहमत बरसती है, शैतान को मुंह छिपाने की भी जगह नहीं मिलती।

हज के दिनों में वातावरण को मानो किसी करन्ट ने छू लिया हो। दूर–दूर से आने वाले मुसलमान वीरान और खाली दिलों को फिर से आबाद करते हैं। स्वयं भी ईमान, प्रेम और उल्लास का खज़ाना लूटते हैं। और अपने देश वापस जाकर अपने दूसरे भाइयों को भी उनसे लाभान्वित करते हैं। हज अज्ञानों में ज्ञान का शौक पैदा करता है, कमज़ोरों के हौसिले बुलन्द करता है निराश लोगों को आशावान बनाता है।

इस्लामी भाईचारे की अभिव्यक्ति

हज इस्लामी भाईचारे की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदार करता है, यह देश, जाति, भाषा और इलाक़ाई इकाइयों के विरुद्ध इस्लामी कौमियत की जीत है। मक्का पहुंचकर तमाम हाजियों का एक पहनावा होता है जिसे 'इहराम' कहते हैं जो मात्र दो बिना सिली हुई चादरें होती हैं, हज के दिनों में सारे हाजियों का एक ही तराना होता है :

अनुवाद – "मैं हाजिर हूं ऐ मेरे अल्लाह मैं हाजिर हूं। मैं हाजिर हूं तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाजिर हूं। सारी तारीफें और निअ़मतें तेरे लिए हैं और हुकूमत व बादशाहत भी, तेरा कोई शरीक नहीं।"

इनमें हाकिम व महकूम आक़ा व नौकर, अमीर व फ़क़ीर और छोटे बड़े का कोई भेद–भाव नहीं होता यही हाल हज के सारे कार्यों का है। सफ़ा और मरवा की दो पहाड़ियों के बीच सब साथ दौड़ते हैं, मिना सब साथ सफ़र करते हैं अ़रफ़ात साथ जाते हैं। सब एक साथ वापस आते हैं, एक साथ चलते हैं, एक साथ ठहरते हैं।

हज एक निश्चित अवधि में मक्का में ही अदा होता है

हज उन्हीं मुसलमानों पर फ़र्ज़ है जिनके पास हज का पूरा खर्च और बाल–बच्चों के लिए इतना खर्च हो कि वह उसके पीछे गुज़ारा कर सकें। रास्ते का अम्न कअ़बा शरीफ़ तक पहुंचने के साधन और सिहत व कूवत (स्वास्थ्य) भी ज़रूरी है कि यह सफर किया जा सके।

हज की इबादत का सम्बन्ध मक्का और उसके पास स्थित मिना और अरफात के स्थलों से है। इन के मनासिक (कृतियों व संस्कार) वहीं अदा होते हैं और यह मनासिक जिलहिज्जः की आठ तारीख से बारह तारीख की अवधि में अदा किये जाते हैं। इसके अलावा किसी अवधि अथवा स्थान पर हज अदा नहीं हो सकता। हज अल्लाह के दो प्रिय पैगम्बरों इब्राहीम व हज़रत इस्माईल अ० की तौहीद की भावना, गहरा प्रेम और उनके त्याग बलिदान की यादगार और उनके आशिकाना अ़मल की नक़्ल है।

आध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद

मो० हसन अंसारी

मानव विकास के आधुनिक इतिहास में भौतिक विकास के साथ भौतिकवादी दृष्टिकोण का बोल बाला बढ़ा है। मान्यतायें बदली हैं, परिवेश बदला है, मौलिक और सांस्कृतिक वातावरण में बदलाव आया है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में नित नये आविष्कार तथा खोज ने इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ होते होते मानव समाज में भौतिकवादी सोच का दबदबा काइम कर दिया। पैसा ही माई बाप बन गया। जिसकी लाठी उसकी भैंस की कहावत न केवल यथार्थ बन कर सामने आयी बल्कि हमारे दैनिक जीवन का एक आवश्यक अंग बन कर रह गई है। आज इससे दामन बचाकर निकल जाना दिल गुर्दे वाले ही का काम है। आराम व आशाइस, सुख–सुविधा, साज–सज्जा से सुसज्जित इन्सानियत की बारात रौशनी की जगमगाहट में चकाचौंध धूम–धाम, बाजे गाजे के साथ आगे बढ़ती ही जा रही है पर उसे यह खबर नहीं कि बारात का दूल्हा पीछू खड्ड में गिरा पड़ा है।

आप के सभ्य समाज में कुछ एक अपवाद के साथ, मानवीय मूल्यों का उपहास उड़ाया जा रहा है, बर्बरता फल फूल रही है। फरेब, धोखाधड़ी और झूठ का बाजार गर्म है, तरह तरह के विचार और फ़साद आये दिन जन्म ले रहे हैं। माद्दः परस्ती (वस्तुवाद, नेचरियत), स्वार्थ, दौलत की हवस, काम–वासना की गुलामी, हठधर्मी, नफ़्स परस्ती अशलीलता , अत्याचार, शोषण और अन्याय का दौर–दौरा है। छोटे से बड़ा हर व्यक्ति अपने को असुरक्षित महसूस करता है। दुन्या के कुछ शक्तिशाली देश अन्य देशों के आर्थिक स्रोतों को अपने प्रभुत्व के छाया तले रखकर उनका शोषण करने के दरपै हैं। भाषा और क्षेत्रवाद के नाम पर इन्सान इन्सान के बीच दीवारें खड़ी की जा रही हैं। अपने उत्पादों के लिए मार्केट कैपचरिंग की होड़ है। मीडिया के करतब अपनी बाजीगरी की चरमसीमा हासिल कर चुके हैं। सद्भाव, तप, त्याग, शील, दया, धैर्य, सहिष्णुता, उपकार, विनय, प्रेम और भाईचारा, विलुप्त प्राय हो रहे हैं। भौतिकवादी दृष्टिकोण और भौतिक विकास ने न केवल पर्यावरण प्रदूषण की भयंकर समस्या को जन्म दिया है अपितु राजनीति में मुद्रा के रेले की जो बाढ़ आई हुई है उसने लोक तान्त्रिक व्यवस्था को पूरी तरह प्रदूषित कर दिया है और मानवता (अपने तमामतर भौतिक संसाधनों से उत्पन्न आधुनिक सभ्यता की चकाचौंध के बावजूद और ज्ञान विज्ञान की पराकाष्ठा के बावजूद) अज्ञानता (जिहालत) की अंधियारियों में भटक कर रह गई है।

समस्या का समाधान क्या है ? मसअलः का हल क्या है ? ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में क्या तरक़्क़ी न हो? साइंस और टेकनालॉजी का विकास न हो? मीडिया क्या काम करना बन्द करदे ? नहीं । नहीं !! कदापि नहीं। असल ज़रूरत आध्यात्म को समाज में इस प्रकार पुर्नस्थापित करने की है कि वह भौतिकवादी दृष्टिकोण की जगह ले ले। समाज में सही–गलत, सत्य–असत्य हलाल–हराम, न्याय–अन्याय, धर्म–अधर्म लोक–परलोक का सही एहसास पैदा हो। इनके बीच के अन्तर को समझा जाये। इस दिशा में हमारी सोच सर्जनात्मक और सकारात्मक हो। इस कार्य के लिए आशावादी दृष्टिकोण अपनाया जाये। नेकी और एहसान का माहौल बने। भौतिक विकास मानव कल्याण के लिए हो। उसके विनाश के लिए नहीं। हम ज्ञान–विज्ञान, साइंस और टेकनालॉजी के गुलाम न बनें। वे हमारी गुलामी में रहें। इस नेक काम के लिए समाज के बुद्धिजीवी वर्ग और धार्मिक वर्ग के लोगों को आगे आना चाहिए।

हज़रत अबू बक्र व उमर (रज़ि०) गांधी जी की नज़र में

यह बात बहुत मशहूर है कि जब १९३७ ई० में बहुत से सूबों में इण्डिया एक्ट स. ३५ ई० के अंतर्गत कांग्रेस की पहली बार मिनिस्ट्रियां बनीं तो गांधी ने अपने अख़्बार हरिजन में लिखा और सम्भव है मुख्य मंत्रियों को पत्र भी लिखे हों जिस का सारांश यह था कि "मैं तमाम मंत्रियों से कहता हूं कि हुकूमत में हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) और हज़रत उमर (रज़ि०) की मिसाल सामने रखना, जिन्होंने दर्वेशी में एक अज़ीम तरीन (विशाल) सलतनत की सरबराही (नेतृत्व) की है।

(मनहजे इन्किलाबे नबवी पृ. १०६ द्वारा डा० ए० अहमद)

मुनाजात

मौ० मु० सानी हसनी

ऐ ख़ुदा मालिके आसमानो ज़मीं
साहिबे लौहो कुर्सी वो अर्शे बरीं
ज़िक्र तेरा मुबारक हयात आफ्रीं
जां फ़ज़ा, दिलकुशा, दिलकशो दिलनशीं
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा है नाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम
ख़ालिके दो जहां रब्बे कौनो मकां
जिन्नों इन्सों मलक तेरे मिन्नत कशां
रहम करता है तू है बड़ा मेहरबां
तेरे दर पर ही मिलती है सबको अमां
तेरी रहमत पे क़ाइम है आलम तमाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम
तेरे दर के सिवा और कोई नहीं
कोई तुझ से बड़ा और बरतर नहीं
कोई तेरा शरीक और हमसर नहीं
जो झुके और कहीं वो मेरा सर नहीं
पाक सब से है तू ऐ खुदाए अनाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम
दोनों आलम में रौशन तेरा नाम हो
दिन ब दिन हर तरफ़ ग़ालिब इस्लाम हो
हम से यारब तेरे दीन का काम हो
बेहतर आग़ाज़ हो नेक अंजाम हो
सारी दुन्या में जारी हो हक़ का निज़ाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम
लम्हा लम्हा हर इन्सान की ख़ैर कर
हर नफ़्स हर मुसलमान की ख़ैर कर
दम बदम अहले ईमान की ख़ैर कर
क़ल्ब की ख़ैर कर जान की ख़ैर कर
आफ़ियत से रहें सब ख़वासों अवाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

अल्लाहु अकबर

(पृष्ठ ३० का शेष)

तो चटाई जरूर रखो। जो कमरा ठंडा देखो उसमें फर्श, तकिया, पंखे और दूसरी आराम की चीज़ें मौजूद रखो। कोठरी जिसमें खाने पीन की चीज़ें रखी जाती है उसको प्रत्येक दिन देखती रहो। हर चीज़ क्रम से रखी हो कि आसानी से निकाल सको। चूहे आदि नुक़सान न करें।

कपड़े के बक्स दूसरी कोठरी में अपनी अपनी जगह रखो। उसमें कोई चीज़ खाने की न रहे कि चूहे नुक़सान पहुंचायें। इन बाक्सों को बराबर देखती रहो कि तुम्हारी चूक से कीड़े न लगजायें। (जारी)

अनुवाद तथा प्रस्तुति : मो० हसन अंसारी

(पृष्ठ ६ का शेष)

फरमाया, यहां तक कि हम यह महसूस करने लगे हैं जरूरत से ज्यादह चीज़ों में हम से किसी का कोई हक़ नहीं।

(मुस्लिम)

आपसी महब्बत की मिसाल — १५३. हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अशअ़रियों के खर्चे जन्म से जब कम हो जाते थे, और शहर में रहने वाले उनके अहल व अयाल का खाना पीना भी कम होता, तो उनके पास जो कुछ होता, उसके एक कपड़े में जमा करते और फिर एक बर्तन से बराबर आपस में तक़सीम कर लेते, वह हम में से है और हम उनमें से

(बुख़ारी, मुस्लिम)

भलाई की अहमियत— १५५. हज़रत तमीम बिन औस दारी (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया दीन ख़ैर ख्वाही और नसीहत का नाम है। आप ने तीन बार यह फ़रमाया, हमने सवाल किया, अल्लाह के नबी, किस के लिए ? आप ने फरमाया अल्लाह और उसकी किताब के लिए और उसके रसूल, मुसलमान पैशवाओं और उनके अवाम के लिए।

(मुस्लिम)

भलाई हर मुसलमान का हक है— १५६. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने नमाज़ कायम करने, ज़कात देने और दिल में हर मुसलमान के लिए ख़ैर का ज़ज़्बा रखने को हुजूर (सल्ल०) से बैअ़त की

(बुख़ारी, मुस्लिम)

हर मुसलमान को भलाई का जज़्बा रखना चाहिए—१५७. हज़रत जैद बिन अलाक़ा से रिवायत है कि मैंने जरीर बिन अब्दुल्लाह को बहते सुना कि मैं रसूल (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी मैं इस्लाम की आप से बैअ़त करता हूं। आप ने मुझ पर यह शर्त लगाई कि इस (इस्लाम) के साथ हर मुसलमान के लिए भलाई का जज़्बा रखने की भी बैअ़त करें, तो मैंने उस पर बैअ़त की और इस मस्जिद के खुदा, की क़सम मैं तुम्हारा खैर ख्वाह हूं।,

जो अपने लिए पसंद करे वही अपने भाई के लिए पसंद करें— १५८. हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम में से कोई मुकम्मल मोमिन उस वक्त तक नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिए वहीं न पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है। (बुखारी व मुस्लिम)

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

नासिरुद्दीन और शाही कोष

आमिना उस्मानी

नासिरुद्दीन गुलाम वंश का प्रसिद्ध बादशाह हुआ है। उसने हिन्दुस्तान पर बीस साल तक शासन किया लेकिन इस पूरी अवधि में उसने बादशाह को अल्लाह की अमानत (पूंजी) और शाही कोष को जनता का माल समझा और कभी भी उसे व्यर्थ में खर्च नहीं किया। वह स्वयं अपना और अपने घर वालों का खर्च कुर्आन पाक लिखकर चलाता था। सरकारी कोष से एक पैसा लेना भी पाप समझता था। कहते हैं कि उसकी बेगम स्वयं खाना पकाती थी। एक बार जब हाथ जल जाने पर बेगम ने बादशाह से एक नौकर की इच्छा प्रकट की तो नासिरुद्दीन ने उसे समझाया कि "मेरे पास तो इतना धन नहीं है कि नौकर रख सकूं और कोष जनता का माल है। यदि मैं इसमें से अपने ऊपर खर्च करूंगा तो कियामत में (हिसा किताब के दिन) इस बारे में पूछताछ होगी। अतः जिस प्रकार हो सके काम चला लो और परलोक की पकड़ से बच जाओ।"

यह घटना यद्यपि घरेलू जीवन से सम्बन्धित है फिर भी इस घटना से नासिरुद्दीन से सादा जीवन तथा ईमानदारी का पता लगता है कि ऐसा आदमी मुश्किल ही से किसी का हक़ मारेगा तथा किसी पर अत्याचार व जुल्म करेगा। फिर यह भी स्पष्ट है कि मुसलमान उस समय कम संख्या में थे और हिन्दू अधिक संख्या में थे कोष का रूपया उनके ही कल्याण कारी कामों पर खर्च होता होगा। नासिरुद्दीन इस कोष से रूपया लेकर अपनी जनता का हक़ मारना नहीं चाहता था।

ग़यासुद्दीन बलबन की न्यायप्रियता

ग़यासुद्दीन बलबन नासिरुद्दीन का प्रधानमंत्री था जो बाद में स्वयं दिल्ली का सुल्तान बना। उसके शासन काल में मलिक बक़बक़ बदर मुनीर ऐबक शाही गार्ड का उच्च अधिकारी था उसे बहुत ही अधिक शाही समीपता प्राप्त थी। सुल्तान ने उसे बदायूं का गवर्नर बनाकर चार हजार सवारां का दस्ता रखने की अनुमति दे दी थी। उसने एक बार क्रोध की हालत में अपने एक फ़र्राश को कोड़ों से इतना पिटवाया कि वह मर गया। कुछ दिनों बाद सुल्तान ग़यासुद्दीन बलबन किसी काम से बदायूं गया। उस समय फ़र्राश की बीवी ने नालिश कर दी। सुल्तान को जब इस घटना की जानकारी हो गयी, तो उसने आदेश दिया कि उस औरत के सामने अपराधी सूबेदार को खड़ा करके इतने कोड़े मारे जाएं कि वह मर जाए। इस आदेश पर तुरन्त पालन किया गया और इसी के साथ बदायूं के डाक अधिकारी को भी जिसने इस निर्मम घटना की सूचना नहीं दी थी सूली पर लटका दिया गया। (तारीखे फीरोज़ शाही १.४०)

कश्मीर का मुसलमान शासक और हिन्दू जनता

इसी प्रकार एक और मुसलमान जो कश्मीर में शासन करता था बड़ा ही जनता से प्यार करने वाला, न्यायप्रिय और नम्र स्वभाव का हुआ है, उसने अपनी ग़ैर मुस्लिम जनता के साथ इतना प्रेम व दया और सहानुभूति का व्यवहार किया कि आज तक अपने पराये सब लोग उसे याद करते हैं। उसकी महानता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि "मिलाप" जैसे समाचार पत्र ने अपने १८ नवम्बर १९२८ के प्रकाशन में इस बादशाह के आदर्श जीवन पर प्रकाश डालते हुए एक लेख प्रकाशित किया यहां हम सार दे रहे हैं –

"सुल्तान जैनुलआबिदीन जिसे महानता के कारण बड़ा बादशाह कहते हैं कश्मीर में एक आदर्श मुस्लिम शासक हुआ है। उसने कश्मीर में बड़े उद्योग लगवाए। नहरों को ठीक कराया। खेती बाड़ी का विकास किया और दूसरे जन कल्याण के काम किये। उसकी सम्पूर्ण जीवनी पाठकों के सामने प्रस्तुत की जाएगी। अकबर जो हिन्दू क़ौम का प्रशंसक है लेकिन जब मुकाबले में दोनों के कारनामें सामने आयेंगे तो विश्वास है कि बड़ बादशाह हिन्दुओं की प्रशंसा व आदर के मामले में अधिक योग्य साबित होगा। उसके शासन काल में सबसे बढ़कर जो सुख कश्मीर की जनता को प्राप्त था वह यह कि इसके होते पक्षपात, अत्याचार व दमन का नाम भी न था। शेर और बकरी के एक घाट पर पानी पीने का उदाहरण उसी के शासन काल में देखने को मिलता है। किसी का साहस न था कि कोई किसी पर अत्याचार करे, अत्याचार की

बात तो दूर किसी मुसलमान का यह साहस न था कि वह एक सामान्य हिन्दू का भी दिल दुखाए बल्कि यह बादशाह हिन्दुओं को मुसलमानों से अधिक प्रिय रखता था। वह हर जाति वह हर धर्म का सम्मान करने में हर समय लगा रहता था।"

आगे चलकर बड़ बादशाह की धार्मिकता उदारता के सम्बन्ध में यही पत्र लिखता है कि –

"उसने हिन्दुओं की देखभाल यहां तक की कि उनसे एक सन्धि लिखवा ली कि वे अपने धर्म के विरुद्ध कोई ऐसा काम नहीं करेंगे कि जिससे उनके विश्वासों में अन्तर पैदा हो जाए और उनका धर्म कमज़ोर हो जाए अर्थात वे टीका लगाएं। वे अपने को हिन्दू कहें और जो कुछ उनके धार्मिक ग्रन्थों में लिखा है उस पर अमल करें हिन्दुओं के मेलों व तीर्थों में बादशाह स्वयं भाग लेता था ताकि कोई आदमी उनके धार्मिक कामों में हस्तक्षेप न करने पाये और पंडितों के बेटे को जो अरबी फ़ारसी के विद्वान थे बड़े–बड़े पदों पर रखा।'

आगे पत्र लिखता है कि :–

"बड बादशाह ने एक हिन्दू ब्राहमण को शिक्षा मंत्री नियुक्त किया। मन्दिरों के खर्च के लिए जागरीरें प्रदान कीं और सुल्तान के आदेश से हर मन्दिर के साथ एक पाठशाला का भी निर्माण किया गया जिनमें हिन्दू छात्र स्वतंत्रता पूर्व अपनी धार्मिक शिक्षा प्राप्त करते थे। अनुवाद विभाग का अधिकारी भी एक कश्मीरी ब्राहमण था जिसके मातहत बड़ेयोग्य मुसलमान रहते थे।"

कहने का तात्पर्य यह है कि बादशाह की दया भावना और न्याय प्रियता पर आधारित कारनामे इतने अधिक हैं कि बहुत कम बादशाह इस का मुकाबला कर सकते हैं यह भी प्रसिद्ध है कि हजारों हिन्दू इसकी दानवीरता की प्रशंसा सुनकर कश्मीर में रहने बसने लगे थे। सोचने की बात यह है कि जिस क़ौम ने किसी दूसरी क़ौम पर विजय प्राप्त की हो क्या वह इस प्रकार की सुविधाएं और आसानियां पराजित कौम को प्रदान करती हैं? उसके धर्म, सभ्यता, उसकी संस्कृति और उसकी परम्पराओं व रीति रिवाजों को सुरक्षा के लिए क्या इस प्रकार कार्य करती हैं? शक्ति व सत्ता रखते हुए क्या पराजित कौम के उपासना गृहों, मन्दिरों और मठों को बाकी रखती है? अपने मृदुल स्वभाव व दया भाव से काम लेते हुए उनके खर्च के लिए लाखों रूपयां की जागीर प्रस्तुत करती है?

लोधी और तुग़लक़ के कार्यलय में हिन्दू जनता

प्रसिद्ध इतिहासकार "दाऊदी" ने लिखा है कि सिकन्दर लोधी एक अवसर पर हिन्दुओं की धार्मिक स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने और हिंसा से काम लेने पर उतारू था। उसने उलेमा (मुस्लिम विद्वानों) की ऐ मीटिंग बुलायी। उलेमा ने सवाल किया कि "हिन्दुओं के बारे में दिल्ली के पूर्व शासकों की कार्यप्रणाली क्या थी? सुल्तान ने जवाब दिया "उस समय तक उन्होंने हिन्दुओं के साथ पूर्णरूप से उदारता का व्यवहार किया है।"

मलिकुल उलमा ने कहा "यह तो बिल्कुल अनुचित है कि हिन्दुओं के मन्दिरों को तोड़ा जाए या उनके साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार किया जाए या उनको उनकी धार्मिक रस्मों की अदाएगी से रोका जाए। यह सब किसी भी तरह जायज़ नहीं हो सकता।"

यह सुनकर सुल्तान अत्यन्त क्रोधित हो गया और तलवार हाथ में लेकर कहा "तुम काफ़िरों का पक्ष लेते हो?" मलिकुलउलमा ने जवाब दिया "हर व्यक्ति का जीवन खुदा के हाथ में है बादशाह ने पूछा है तो शरीअ़त की बात बता दी। यदि बादशाह उनका सम्मान करना चाहे। फिर यह पूछना बेकार ही है" इस धर्मशास्त्री की ईमानदारी से बादशाह पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने अपना विचार बदल दिया।

हम इस ऐतिहासिक हवाले की उपेक्षा नहीं कर सकते। हिन्दुओं का विचार इन मुसलमान शासकों को बारे में क्या था?

फीरोज़शाह और मुहम्मद तुगलक़ के बारे में यहां तक मशहूर था कि उन्होंने ज्वालामुखी के मन्दिर में मूर्ति पर छतरी लगायी थी (१–३१८) हो सकता है कि यह घटना बिल्कुल ही निराधार हो लेकिन इससे इतना तो पता चलता है कि इनमें कुछ बादशाहों को किस हद तक पक्षपात से अलग समझा जा सकता था।

इतिहासकारों ने जिज़्या के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है लेकिन यह मानना मुश्किल है कि जिज़्या जिसके बदले हिन्दू हर प्रकार की अनिवार्य सेवाओं से मुक्त रहते थे और जो उनकी जान व माल की सुरक्षा का भी जिम्मेदार था वह किस प्रकार आपत्तिजनक समझा जाता था। इस बारे में मिस्टर थामस का कथन यहां दे देना उचित होगा–

"जिज़्या वस्तुतः एक सरसरी

सा इन्कम टैक्स था जिसकी मात्रा विभिन्न वर्गों की क्षमता की दृष्टि से कम व ज़्यादा होती थी। एक प्रकार से वह पक्षपातपूर्ण अवश्य था लेकिन वह सरलता से जमा हो जाने वाला और अंग्रेजी इन्कम टैक्स के उलझावे वाले तरीक़ों से कहीं अधिक साफ सुथरा था।''

बर्नी ने लिखा है कि एक बार देवमिर के राजा ने अपना वार्षिक राजस्व कर अलाउद्दीन को नहीं भेजा। उसके विरुद्ध सैनिक कार्रवाई हुई जिसमें राजा हार गया और गिरफ़्तार होकर बादशाह के सामने लाया गया। अलाउद्दीन ने उस पर बड़ी दया व कृपा की। उसे राय रायां की उपाधि दी। एक लाख टका प्रदान किया गया। परिवार सहित सम्मान के साथ उसे उसकी रियासत में ही वापस भेज दिया। राजा भी फिर सदैव बादशाह का आज्ञापालक रहा और राजस्व कर समय पर ही भेजता रहा।

मसालिकुल अबसार के लेखक ने एक और घटना लिखी है जिससे दिल्ली के मुसलमान शासकों की कार्य प्रणाली पर प्रकाश पड़ता है। सुल्तान मुहम्मद ने एक हिन्दू राजा के विरुद्ध जिसकी रियासत देवगिरी के निकट थी एक सेना भेजी। वह आज्ञापालक बनकर बादशाह के पास आ गया। जब सुल्तान के सामने आया तो उसने राजा पर उपहारों की वर्षा कर दी। राजा ने माल व दौलत बादशाह की सेवा में पेश करना चाहा लेकिन सुल्तान ने उसे हाथ लगाने से इन्कार कर दिया। उसने कहा कि तुम दिल्ली में रहो और अपनी रियासत में अपना उत्तराधिकारी भेज दो। बादशाह ने खर्च के लिए राजा का वज़ीफ़ा निर्धारित कर दिया और अपनी जनता समझकर उसकी रियासत में लोगों के लिए बहुत सा धन भेजा।

अफ़ीफ़ के बयान से मालूम होता है कि फीरोज़शाह के जमाने में यह कार्य प्रणाली व अच्छा व्यवहार बराबर मौजूद था। लिखा है कि राय जाज नगर एक लम्बे समय तक सुल्तान फ़ीरोज़ से मुकाबला करता रहा लेकिन जैसे ही उसने सुल्तान के सामने आज्ञा पालन की बात रखी तो सुल्तान ने शाही वस्त्र, उपहार उसकी हुकूमत और अन्य चीज़ें महताओं व राजाओं के हाथ उसके पास भेज दी।

नगर कोट के राजा ने विद्रोह किया और बाद में क्षमा याचना की तो सुल्तान ने अत्यन्त सूझबूझ के साथ काम लेते हुए अपना हाथ उसकी पीठ पर रखा फिर उसे शाही वस्त्र व छतरी देकर बड़े सम्मान के साथ क़िले में वापस भेज दिया।

मुस्लिम शासन काल में हिन्दू सिपाही और सैनिक अफ़सर

हमारे मूल स्रोत में इसका अत्यधिक सबूत मिलता है कि दिल्ली शासन की सेना में चाहे वह केन्द्रीय हो या राज्य स्तर की, हिन्दू सिपाही और सैनिक अधिकारी मौजूद थे यद्यपि उनका अनुपात तुर्की सिपाहियों व अधिकारियों की तुलना में कितना भी कम रहा हो।

फ़ख़्रे मुदब्बिर का बयान है कि कुतुबुद्दीन ऐबक की सेवा में तुर्कों, ग़ौरियों, बारासानियों और खिलजियों के अलावा हिन्दुस्तानी सेना भी मौजूद थी जिसके अफ़सर राजा व ठाकुर आदि थे। एक संस्कृत की पांडुलिपि से पता चलता है कि मध्य प्रदेश के एक इलाके छेदी के मुस्लिम गवर्नर जलाल (ख्वाजा) ने जो जोगनीपुरा के बादशाह की ओर से वहां शासन करता था अपनी सेना में खरपरा सिप्राहियों को भर्ती किया था। ये खरपरा सिपाही उस इलाके में पाए जाने वाले शिलालेखों के अनुसार हिन्दू थे और अपने साहसी कारनामों व लड़ने भिड़ने के लिए प्रसिद्ध थे। उपारेक्त शिलालेख के अनुसार जलाल ख्वाज़ा की मातहती में हिन्दू सैनिक अधिकारी भी थे जिन्होंने इस इलाके के स्थानीय लोगों के लिए एक बाग और गऊमठ भी स्थापित किया था।

असामी का बयान है कि गद्दी से हटाए जाने के बाद जब रज़िया सुल्तान ने मुल्के तोनिया के साथ मिलकर १२४० ई० में दिल्ली पर सैनिक हमला किया तो उसकी विशाल सेना में असंख्य स्वयं सेवी हिन्दू सिपाही मौजूद थे तो अधिकांश टोडर, चितोटी, खोखरा और बीरा जातियों पर आधारित थे।

ग़यासुद्दीन बलबन के काल में बहुत से हिन्दू सिपाही और सैनिक अधिकारी केन्द्रीय व राज्यों की सेना में मौजूद थे असामी के अनुसार शहज़ादा (जो बलबन का बड़ा बेटा,उत्तराधिकारी और मुल्तान का गवर्नर था) की सेना में एक सैनिक अधिकारी मंगली नाम का था जो शायद हिन्दू था और जिसने मंगलों के हमले में जिसमें शहज़ादा क़त्ल हुआ अपने सैनिक दस्ते के साथ बड़ी बहादुरी दिखायी थी। मंगोलों की पराजय के बाद ही शाहजादा क़त्ल हुआ था।

जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल में जब बलबन के भतीजे

और कटरा मानकपुर के गवर्नर मलिक छज्जू ने विद्रोह किया और दिल्ली पर कब्ज़ा करने के इरादे से सेना चढ़ायी तो बर्नी के अनुसार उसकी सेना में मोरो मलख की भांति हिन्दू सिपाही व अधिकारी थे जिनको उसने रावत और पापक कहा है।

इतिहासकारों का विचार है कि बर्नी के वाक्य "रावतान व पायकान माअरूफ़" से तात्पर्य हिन्दू सैनिक अधिकारी हैं। मुहम्मद बिन तुग़लक ने जिस प्रकार हिन्दुओं की सरपरस्ती की थी और सेना व हुकूमत में उनको उच्च पद प्रदान किए थे उस पर सुल्तान का पुराना मुसाहिब और हुकूमत का सबसे महत्वपूर्ण इतिहासकार ज़ियाउद्दीन बर्नी अपनी नाराज़गी को व्यकत करते हुए कहता है कि – "वे मूर्तिपूजक व बहुदेववादी जो ख़ारजी और ज़िम्मी थे अच्छे वस्त्र पहने घोड़ों पर सवार और झंडा लहराते फिरते थे और हुकूमत के उच्च पदों पर पदासीन कर दिए गए थे।

मुहम्मद बिन तुग़लक के शासन काल की हमारे पास काफ़ी जानकारी है जो यह साबित करती है कि इस काल में हिन्दुओं की बहुत अधिक उन्नति व प्रगति हुई और सुल्तान ने उन पर हुकूमत के उच्चपदों के दरवाज़े खोल दिए थे। सुल्तान का पुराना दोस्त ज़ियाउद्दीन बर्नी सुल्तान की इस नीति के कारण उस पर कड़ी आलोचना करता था। कभी उसके मूल स्रोत के बयानों से यह साबित होता है कि कम से कम छः हिन्दुआं को उसके काल में जागीरदार का पद दिया गया था। अजमेर में एक शिला लेख मिला है जिसके अनुसार नानक या मानक सुल्तानी नामक हिन्दू को ७३३ हि०, १३३२.३३ ई० में अजमेर का जागीरदार नियुक्त किया गया था। शायद इसी ज़माने में या इसके लगभग रत्न नामक हिन्दू को सहवान (सीवसतान–सिन्ध) की जागीर मिली थी। वह इब्ने बतूता के कथनानुसार वित्तीय मामलों का विद्वान था। जब वह सुल्तान से मुलाकात के लिए आया, तो सुल्तान ने उसकी बड़ी प्रशंसा की और उसे 'अज़ीमुश्शान" की उपाधि से सुशोभित किया। फिर नौबत व झंडे के साथ उसे सहवान की जागीर दी गयी लेकिन उसके इस महान पद पर सिन्ध के दो मुसलमान अमीरों वनार व क़ैसर को आपत्ति हो गयी और उन्होंने रत्न की शायद १३३३.३४ ई० में किसी समय हत्या कर दी।

सुल्तान उनकी इस विद्रोही हरकत पर आग बगूला हो गया और उसने मुल्तान के गवर्नर एमादुल मलिक सरतेजी की कमान में उनको दंडित करने के लिए एक सेना भेजी। यद्यपि वानर भाग जाने में सफल हो गया फिर भी क़ैसर रूमी और दूसरे विद्रोही को पराजय हुई और बाद में उनको मौत के घाट उतार दिया गया।

जिहाद और जंग में अन्तर

एस०एम०ए० गीलानी

न जिहाद का शाब्दिक अर्थ जंग है न पारिभाषिक। दुनिया के यह तीन कायदे हैं, कुछ कहते हैं कि नेक के साथ नेक बर्ताव करो और बुरों को भी मौका दो कि वह अपनी बुराई का विस्तार करें, जिसने एक गाल पर थप्पड़ मारा तो उसके सामने दूसरा गाल भी पेश कर दो। सांपों को पालो, बिच्छुओं का पोषण करो। इनके मुकाबले में दूसरा गिरोह है जो कहता है कि अपनी या कौमी खुदी अपने अस्तित्व अथवा राष्ट्रीय गौरव को बाक़ी रखने के लिए सब को खत्म करो नेक हो या बद, यही जीवन–संघर्ष (जतनहहसम तिव मगपेजमदबम) का कानून है। लेकिन इस्लाम तीसरा कानून पेश करता है नेकों के साथ नेक हो और जो नेक नहीं हैं कोशिश करो कि वह भी नेकों के गिरोह में शामिल हो जायें इसी कोशिश का नाम जिहाद है जिस की शुरूआत तब्लीग़ (प्रचार प्रसार) से होती है। संघर्ष की स्थिति में यदि विरोधियों से मुकाबले की भौतिक शक्ति न हो बल्कि नेकों की मद (पेटा) बन जाने की आशंका हो तो तब्लीग़के लिए दूसरे मैदान का चयन करना चाहिए, इसी कानून का नाम कानूने हिज्रत है। और अगर मुकाबले की ताक़त हो तो व्यक्तिगत बलिदान से अगर गिरोह जीवित रहता हो या छोटे गिरोह के त्याग से बड़ा गिरोह सुरक्षित हो जाता हो तो यथा सम्भव इसी की कुर्बानी करनी चाहिए लेकिन अगर इसका भी मौका न हो तब आम जंग का एलान करना पड़ता है, लेकिन दूसरों को नेक बनाने, अमरत्व प्रदान करने के लिए मरने पर आमादा हो जाना जिहाद है और आपने को अपनी कौम को बाक़ी रखने के लिए दूसरों को मिटाना जंग है जिहाद से इसको कोई वास्तःनहीं है।

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो०हसन अंसारी

ईसाइयों के साथ
सुल्तान फ़ातेह का सद्-व्यवहार

डा० इज्तिबा नदवी

रूमी सलतनत की पूर्वी राजधानी कुसतुनतुनिया का ईसाइयों के निगाह में धार्मिक व राजनैतिक महत्व था। वह पूर्वी देशों पर हमला करने और चढ़ाई करने के कारण सब के लिए समान रूप से आकर्षण का केन्द्र था। प्राकृतिक रूप से भी वह बड़ा सुरक्षित और अत्यन्त शक्तिशाली शहर था। इस्लामी सेना रूमियों को पराजित करती हुई, उस शहर तक पहुंच कर रुक जाती थी और अन्त में किला बन्द रूमी विजयी हो जाते थे और सैनिकों को संगठित कर के पराजित क्षेत्रों को फिर प्राप्त ही नहीं कर लेते थे, बल्कि आगे बढ़कर दूसरी क़ौमों के लिए मुसीबत और ख़तरा भी बन जाते थे। इस शहर में रूमियों के सुरक्षित क़िले और बुलन्द गिरजा घर व शानदार महल और इमारतें थीं। यहां के यूरोप और रूस के अन्य शहरों को खाद्य सामग्री, सैनिक और राजनैतिक सहायता भी मिलती थी।

जब इस्लामी दावत अरब से निकल कर फारस और रूम के अधिकांश क्षेत्रों में फैल गयी, तो उन क्षेत्रों के लोगों ने मुसलमानों के अक़ीदे, विचार, आचरण और सद्व्यवहार से सुख शान्ति व सन्तोष की सांस लिया और सैकड़ों सालों की गुलामी से रिहाई और स्वतंत्रता महसूस की और दोबारा रूम ब फारस के क्रूर व अत्याचारी शासकों की ओर नज़र उठा कर भी नहीं देखा। यह परिस्थिति देख कर रूमियों ने कुस्तुनतुनिया को और अधिक समृद्ध व शक्ति शाली बनाकर मुसलमानों की दावत व आन्दोलन को रोकने के लिए षडयंत्र रचा और अनेक बाधाएं खड़ी करना शुरू कर दीं। वे अचानक हमला करके बरबाद कर देते और मुसलमानों को उससे बड़ा नुक़्सान और उनकी दावत व प्रचार के लिए बड़ा ख़तरा पैदा हो जाता। अतएव मुसलमानों ने कुसतुनतुनिया को फ़तह कर लेना आवश्यक समझा। इसके फ़तह हो जाने से न केवल रोज़ रोज़ की परेशानी व मुसीबत ख़त्म हो जाती बलिक यूरोप में दावत व सुधार के लिए रास्ता भी खुल जाता।

इसलिए हज़रत मुआवियह रज़ि. ने अपने शासनकाल में एक समुद्री बेड़ा बनाया और विशाल सेना (जिसमें मदीना पहुंचने पर नबी सल्ल० के पहले मेज़बान हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़ि०) सहित प्रमुख सहाब–ए–किराम भी थे) तैयार की। यह इस्लामी सेना रवाना हुई और जंग करती हुई कुसतुनतुनिया की सीमा तक पहुंच गई हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० इस बीच बीमार पड़ गए और उनके देहान्त का समय निकट आया तो उन्होंने वसीयत कीः उनको शहर से जितने निकट सम्भव हो, दफ़न किया जाए। अतएव इस्लामी सेना ने शहर से निकटतम जगह पर उनको दफ़न किया और फिर सेना वापस आ गयी।

इसके बाद भी मुसलमानों ने इस महान शहर को फ़तह करने की कोशिशें बराबर जारी रखीं। मगर यह गौरव उसमान की नेक व वीर नवयुवक पुत्र मुहम्मद सानी बिन मुराद बिन मुहम्मद प्रथम को प्राप्त हुआ। यही नवयुवक नबी सल्ल० की शुभ–सूचना का हक़दार ठहरा। मुहम्मद फातेह जिस समय उसमानी सलतनत का शासक हुआ, उस समय उसकी आयु केवल २२ साल थी। उसने तीस साल तक शासन किया। रूमी सलतनत की राजधानी कुसतुनतुनिया को फ़तह कर लेने के कारण मुहम्मद अल फातेह की उपाधि दी गयी।

संसार के इतिहास में बहुत ही कम योद्धाओं ने इतनी कम आयु में इतनी महान विजय प्राप्त की और बहुत कम शासकों ने उन जैसी सांस्कृतिक, राजनैतिक और रचनात्मक सफलताएं प्राप्त कीं। उनके पिता ने उनकी शिक्षा, सैनिक प्रशासनिक और राजनीतिक प्रशिक्षण पर बहुत ध्यान दिया था। अतः कम आयु के युद्ध कौशल में सिद्धस्त हो गए। ज्ञान और राजनीति के क्षेत्र में भी उन्होंने भारी सफलताएं प्राप्त कीं। अतएव उसने बड़े साहस, उच्च इरादे और ईश्वर प्रदत्त अपनी योग्यता व वीरता के बल पर अल्लाह की कृपा से १४५३ई० में रोमन एम्पायर की सबसे शक्तिशाली व समृद्ध राजधानी कुस्तुनतुनिया को फ़तह कर लिया और नबी करीम सल्ल० की हदीस के अनुसार अपने को साबित कर दिया।

"तुम लोग कुस्तुनतुनिया को अवश्य फ़तह करोगे तो क्या अच्छा होगा उसके सरदार और क्या ही अच्छी होगी वह सेना।"

कुस्तुनतुनिया की फ़तह के बाद शहर के बड़े–बड़े ईसाई धार्मिक नेता

पादरी तथा सामान्य ईसाई अत्यंत डरे हुए थे और यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि मुसलमान सेना के हाथों अब वे जान माल और इज़्ज़त व आबरू गंवा बैठेंगे। रूमी विजयताओं की तरह मुसलमान भी कुछ को मौत के घाट उतारेंगे, युवकों को गुलाम और युवतियों को लौंडी बना लिया जाएगा और कुछ को देश निकाला मिल जाएगा। परन्तु उनकी आशंका के विपरीत सुलतान ने सब नागरिकों को बड़े सम्मान व प्रेम के साथ सम्बोधित किया और उनकी उनके जान वमाल और मान मर्यादा तथा आबरू की सुरक्षा का वचन दिया। तो उनको अपने कानों पर विश्वास नहीं आ रहा था। सुलतान ने उन से कहा : तमाम ईसाई बिनाकिसी भय और डर के अपने घरों को चले जाएं किसी से कोई बुरा व्यवहार नहीं किया जाएगा, न किसी को कोई सज़ा दी जाएगी।' इसके बाद ईसाइयों की समस्याओं व मामलों को ठीक किया। उनके गिरजा घर उनके हवाले किए और उनका प्रबन्ध उनके हाथों में दिया। उनको उनकी रीति रिवाज व धार्मिक क़ानून के अनुसार जीवन गुज़ारने की पूरी आज़ादी दी। उनको अपने अपने रोज़गार पूर्वतः जारी रखने की छूट दी। उन्हें बड़े पादरी (पोप) के चयन का हक़ भी दे दिया गया। अतः उन्होंने जनादेयूस अपना पोप चुना।

सुलतान के निर्देश पर पूरे राज्य में नए पोप की नियुक्ति पर उसी प्रकार जश्न मनाया गया जिस तरह इसाइयों के शासन में दस्तूर था। नए पादरी से सुलतान ने कहा : तुम हमारे साथ मित्रता के मधुर सम्बन्ध बनाए रखो, तुम्हें वे सारे अधिकार, सुविधाएं और स्वतंत्रता दी जाएगी जो पहले तुम्हारे पास थीं। उसे एक सुन्दर घोड़ा भेंट किया और शाही सुरक्षा गार्ड का एक दस्ता उसकी सुरक्षा पर लगा दिया और उसके निवास स्थल तक दरबारियों को भेजा।

सुलतान फातेह ने आर्थोडक्स चर्च के क़ानूनों को मान्यता प्रदान की और उसकी सरपरस्ती स्वीकार की। कुस्तुनतुनिया की फ़तह के दौरान पादरियों और घरों के लूटे हुए सारे माल व सामान को तलाश करा कर गिरजा घरों और ईसाई खानकाहों को वापस किया सराहनीय बात यह है कि इस उच्च आचरण, और उदारता और विनम्रता का यह व्यवहार स्वयं अपनी ओर से किया। नगर पर फ़तह के समय ईसाईयों से सुल्तान या उसकी सेनाने न तो कोई सन्धि की थी और न कोई वचन दिया था।

इस उदार व्यवहार को देखकर कुस्तुनतुनिया और दूसरे क्षेत्रों के ईसाई नागरिकों ने सुलतान फ़ातेह और उसमानी सलतनत को अपने लिए अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत जाना। उन्होंने उदारता का जैसा व्यवहार उसमानियों की हुकूमत में पाया वैसा उनको अपने धर्म की बाज़नतीनी सलतनत में भी कभी प्राप्त नहीं हुवा था।

मुहम्मद फातेह और उसमानी खलीफाओं का यह सद्–व्यवहार का मामला केवल कुस्तुनतुनिया के ईसाईयों के साथ न था, बल्कि इसके बाद यूरोप का जो देश भी फ़तेह हुआ, उसके नागरिकों ने इसी प्रकार का व्यवहार देखा। यहां तक कि किलिफ़टन के साथी जो दूसरे इलाके के रहने वाले थे और ईसाई थे, उन्होंने तुर्की सलतनत के मुसलमान शासकों की छत्र छाया में रहने को अपने पक्षपाती और क्रूर ईसाई शासकों की तुलना में कहीं बेहतर समझा।

यूरोप के बहुत से न्याय प्रिय ईसाई समुदायों ने उसमानी सलतनत की उदार हृदयता और न्याय प्रियता का खुल कर उल्लेख किया। साथ ही उनके मुकाबले में ईसाई हुकूमतों और पादरियों द्वार दी जाने वाली यातनाओं की शिकायत की है और जब भी अवसर मिला उन्होंने मुस्लिम शासन में शरण ली।

सतरहवीं सदी ईसवी में अन्ताकिया के बड़े पादरी मकारियूस का यह बयान पढ़िये। उसने कैथोलिक ईसाइयों की ओर से अपने भाइयों और आर्थोडाक्स ईसाइयों के साथ अत्याचार पर खून के आंसू बहाए, जो इन चालीस पचास बर्सों में अत्याचारी अधर्मी कैथोलिक दुष्टों के हाथों मौत के घाट उतारे गए। शहीद होने वालों की संख्या सत्तर हजार से अधिक है। उन छोटी छोटी बच्चियों, महिलाओं और लड़कों का क्या गुनाह था कि उनको पोलेण्ड के क्रूर अधिकारियों ने क़त्ल करा दिया। यह अत्यन्त घटिया, घिनौना और बर्बर हरकत है। वे समझते है कि आर्थोडोक्स ईसाईयों का दुनिया से नाम व निशान मिटा देंगे। खुदा तुर्कों की सलतनत को सदैव बरकरार रखे, वे केवल एक निर्धारित जिज़्या वसूल करती है और धर्म के मामलों में किसी प्रकार की कोई गड़ बड़ी या हस्तक्षेप नहीं करती, चाहे उनकी जनता ईसाई हो, नसिरी हो, यहूदी हो या अन्य किसी धर्म की अनुयायी हो।

सुल्तान मुहम्मद फ़ातेह और उसमानी खलीफ़ाओं के सद्–व्यवहार और शानदार रवैये के ये कुछ नमूने हैं, जो उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। इस्लामी इतिहास के पृष्ठ इन जैसी घटनाओं से माला माल हैं और जगमगा रहे हैं।

जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

शैतान जिन्न खाने की बरकत (गुप्त लाभ) खाता है।

पिछले बयान से यह सिद्ध हो चुका कि अगर बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाना खाना आरंभ न करें तो शैतान जिन्न हमारे साथ खाने लगता है। निःसन्देह शैतान हमारी नजरों से ओझल है मगर खाना तो हमारे सामने है जो दिख रहा है इसमें से जो मात्रा कम हो वह हमारी जानकारी में आना चाजिए। हम कोशिश करके पता लगाते हैं जब भी हम को खाने में कोई कमी ज्ञात नहीं होती न तौल में, न गिन्ती में। इसी प्रकार रिवायत में जो बात गुज़री कि आखिर में जब बिस्मिल्लाह पढ़ ले तो शैतान ने जो खाया था सब उसको उगलना पड़ा। यह उगलना भी आश्चर्यजनक है। अगर उसने खाना उगला तो वह देखने में न आया। उसी खाने में उगला या अलग? जब आदमी का उगला नापाक है तो शैतान का उगला तो और नापाक होगा। साफ लगता है कि शैतान खाने की बरकत (गुप्त लाभ) खाता है वह खाने में शामिल होकर बरकत समाप्त कर देता है जिसे खा जाना कहा गया। यह खा जाना वैसे ही है जैसे गुनाह नेकियों को खा जाते हैं। कोई पक्की बात नहीं लेकिन यह भी हो सकता है कि बिस्मिल्लाह न करने से खाने की बरकत खत्म हो जाती है अब उस खाने से निकलने वाली बू या गैस में शैतान की गिज़ा रहती है लेकिन बिस्मिल्लाह कहते ही उसमें बरकत आ जाती है बल्कि जो खाना बे बरकती के साथ खाया गया उसकी बरकत भी लौट आती है। और शैतान जो खुश खुश उस खाने से लाभ उठा रहा था उससे वंचित हो जाता है और हदीस के अनुसार जो उस ने खाया उसको उगलना पड़ता है। सत्य ज्ञान तो अल्लाह ही को है यह सब अटकल की बातें हैं। हदीस से जितना सिद्ध है वह पीछे आ चुका परन्तु यह बात तो पक्की ही है कि बिस्मिल्लाह पढ़े बिना खाने से मुसलमान को हानि तो पहुंचती ही है। जैसे कभी जितने खाने से पेट भर जाता है उससे अधिक खाना पड़ता है, कभी अधिक खा लेने से कोई बीमारी लग जाती है। और यह तो होता ही है कि बे बरकत वाला खाना खाने से इबादात (उपासनाओं) तथा भले कामों में दिल नहीं लगता और यह इन्सान के लिए बड़ी हानि और शैतान के लिए इस में खुशी की बात है।

निष्कर्ष :

जिन्नों की ग़िज़ा (आजीविका) के विषय पर पिछली बातों का निष्कर्ष इस प्रकार है :—

१. कुर्आन शरीफ़ में जिन्नों की ग़िज़ा का वर्णन नहीं है।

२. सहीह हदीस से साबित होता है कि जिन्नों की ग़िज़ा (आहार) हड्डी, लीद, गोबर आदि में है।

३. सहीह हदसी से साबित होता है कि अगर बिस्मिल्लाह कर के न खाया जाए तो शैतान इन्सान के खाने पीने में भी शरीक हो जाता है।

हदीस के अर्थानुसार जो शख़्स यह माने कि जिन्न हड्डी और गोबर आदि खाते हैं तथा कुछ दशाओं में वह इन्सान के खाने पीने में भी शरीक हो जाते हैं लेकिन वह कैसे खाते हैं, कैसे हज़्म करते हैं इस को हम नहीं जानते तो ऐसा शख़्स सत्य पर होगा। यह भी हो सकता है कि जिस प्रकार वह नहीं दिखते जिस खाने पीने की चीज़ को छूते हों वह चीज़ भी ग़ाइब हो जाती हो।

यदि कोई सोच विचार कर इस परिणाम पर पहुंचे कि जिन्न लीद, गोबर, कोयला आदि तथा खाने से कोई सूक्ष्म (लतीफ़) वस्तु खाते हैं। और जिस प्रकार अअूज़ु बिल्लाहि मनश्शैतानिर्रजीम पढ़ने से शैतान से अल्लाह की सुरक्षा मिल जाती है उसी प्रकार बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाने पर शैतान खाने में शरीक हो जाता है और उस की बरकत (गुप्त लाभ) खत्म हो जाती है तथा आखिर में बिस्मिल्लाह कह लेने पर सारी बरकत मिल जाती है और शैतान ने जो कुछ खाया पिया है उसको उगलना पड़ता है और उसे कष्ट होता है। हदीस का ऐसा अर्थ लेनेवाला भी सत्य पर होगा।

यह बात किताब व सुन्नत से सिद्ध है कि शैतान या कोई भी जिन्न कोई वस्तु एक जगह से दूसरी जगह उठा ले गया परन्तु यह शक्ति उन की विशेष दशा की लगती है ऐसा नहीं है कि वह जब चाहें जो चीज़ चाहें एक जगह से दूसरी जगह उठा ले जाएं।

इस्लाम के शत्रुओं के सरग़ना : बुश और ब्लेयर

मो० रफ़ी रिसर्च स्कालर

(सम्पादक का लेखक से सहमत होना आवश्यक नहीं)

इराक में रासायनिक व परमाणु हथियारों के बहाने अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज डब्लू बुश और ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर इस्लाम के ख़िलाफ़ सलीबी (इसाइयत) जंग की शुरूआत की है। ऐसा समझा जाता है कि इन दोनों शक्तियों ने जानबूझ कर इस्लाम के विरुद्ध एक ऐसे षड्यंत्र के द्वारा अपनी सैनिक शक्ति का प्रयोग किया है जिससे मुसलमानों की ताकत को समाप्त कर उन्हें धीरे–धीरे तबाह व बरबाद कर दिया जाये। हालांकि अमरीका को अपने इराकी मिशन में उसे अनैतिक सफलता प्राप्त हुई है। जिसकी उसको एक लम्बे अर्से से बहुत बड़ी आवश्यकता थी। इराक पर क़ब्ज़ा करने के बाद उसका फरेबी काम अभी बन्द नहीं हुआ है। यह अनुमान लगाया जा रहा है कि आगे आने वाले भविष्य में ईरान, सीरिया तथा पाकिस्तान भी इसकी घटिया हरकतों का शिकार बनेंगे। इसका एक साफ कारण लोगों की समझ में आ रहा है कि सलीबी ताकतों के विरुद्ध सर उठाने वालों का अमरीका किसी न किसी बहाने यही हश्र (परिणाम) करेगा।

वर्तमान समय में ही लेबनान, अफ़गानिस्तान, फिलिस्तीन, कुवैत, सऊदी अरब, और पाकिस्तान तो पहले से ही किसी न किसी शक्ल में सलीबी ताकतों का शिकार बन चुके है। वैसे इनको छोड़कर कुछ देश और भी है, जिन पर अमरीका अपनी गिद्ध दृष्टि जमाये हुए हैं तथा इन पर कब्जा करने का कोई न कोई बहाना ढूंढ रहा है। इनमें ईरान, सीरिया तथा **U.A.E.** (संयुक्त अरब इमारात) का नम्बर आने वाला है।

अमरीकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन में बैठे इनके कूटनीतिज्ञों तथा वैज्ञानिकों ने इस्लामी देशों की सरकारों को समाप्त कर उन पर कब्जा करने के मन्सूबे पहले से ही तैयार कर रखे हैं। उनके अनुसार यह जानकारी मिल रही है कि पहली बार में मुस्लिम देशों के तेल और गैस के भण्डार पर अधिपत्य जमाकर अमरीका उनकी आर्थिक स्थिति को कमजोर करेगा, फिर उन्हें तबाह करने की कारवाई शुद्ध की जायेगी।

वास्तविकता तो यह है कि सऊदी शासक पहले से ही अमरीका के हामी बने थे। उन्होंने जमकर अमरीका परसती को अपनाया । उनकी कायरता तथा विलासितापूर्ण जीवन–यापन करने की आदत से सऊदी अरब को लगभग पिछले बारह वर्षों में अमरीका ने उन्हें पूर्णरूप से अपने कब्ज़े में कर लिया है। सन् १९९१ के खाड़ी युद्ध के बाद से ही अमरीका की हजारों की संख्या में सेना सऊदी अरब में पड़ी है, जिसका पूरा खर्च सऊदी सरकार को ही चुकाना पड़ता है। यह कैसी विडम्बना है कि संसार में सबसे अधिक खनिज तेल का उत्पादन करने वाला देश होने के बावजूद सऊदी अरब **I.M.F.** (इण्टरनेशनल मानीटरी फण्ड) और वर्ल्ड बैंक का कर्जदार हो चुका है।

अपनी सैन्य शक्ति के नशे में अमरीका इतना घमण्डी हो गया है कि इराकी हमले में सद्दाम हुसैन के लापता होने के बाद भी बुश ने सीरिया को धमकाते हुए कहा था कि "इराक पर हमले के समय सीरिया को हमारी (अमरीका और ब्रिटेन) की मदद करनी चाहिए थी। उसने ऐसा न करके गलती की है और अब मालूम हुआ है कि सीरिया ने इस युद्ध में इराक को पहले तो युद्ध सम्बन्धी हथियार दिये थे फिर सद्दाम हुसैन के कई निकटतम साथियों को अपने यहां खुफिया पनाह दे रखी थी। ऐसा करके सीरिया ने बहुत बड़ी गलती की है, इसकी सजा उसको मिल सकती है।" पूरा विश्व जार्ज बुश के इस सफेद झूठ को अच्छी तरह समझ रहा है फिर भी जार्ज बुश को ऐसे घिनौने कामों से कोई शर्म नहीं है।

दूसरी बात यह है कि जिन देशों ने इराक पर मुजरिमाना हमले की कारवाई में अमरीका और ब्रिटेन का सहयोग नहीं दिया अमरीका के अनुसार वह सभी देश दोषी हैं तथा अमरीका उनको भी दण्ड देने के लिए उन पर भी एक भयानक हमला करने के मूड में हैं। इस प्रश्न का उत्तर स्वयं अमरीका के पास है परन्तु बुश तथा ब्लेयर की आक्रामक नीति ने इस्लाम के विरुद्ध जो सलीबी युद्ध प्रारम्भ किया है उससे तो साफ ज़ाहिर है कि सीरिया जैसे छोटे–छोटे देशों पर भी शैतानी ईसाई सेना का हमला होने वाला है।

वास्तव में यह इस्लाम के विरुद्ध सलीबी युद्ध ही है जिससे इस बार असंख्य बमों की वर्षा करते समय अमरीकी सेना ने बसरा, नासिरीया, बगदाद तथा कर्बला सहित इराक के अधिकतर शहरों की मस्जिदों को अपने नापाक (अपवित्र) बमों का निशाना बनाया है। यही नहीं बगदाद, नासिरीया कर्बला और बसरा के शिया वर्ग के कुछ विद्रोही लोगों के द्वारा इस शैतानी सेना ने शहरों में लूटपाट कराना भी अमेरिकियों की सोची समझी साजिश का हिस्सा था। यह उस समय साबित हुआ जब बगदाद में पचास देशों के जांच दलों में केवल फ्रान्स, रूस और जर्मनी के जांच केन्द्रों को लूटा गया क्यों सर्वप्रथम इन्हीं देशों ने इराक़ पर अमरीका और ब्रिटिश हमले की जमकर निन्दा की थी। इन्हीं जांच केन्द्रों के अतिरिक्त चिकित्सालयों, राष्ट्रीय संग्राहालयों तथा सद्दाम हुसैन के महलों को भी बड़ी तेज़ी से लूटा गया।

मुसलमानों को यह बात खूब अच्छी तरह से समझनी चाहिए कि यहूदियों ने अपनी लाबी का मन्सूबा वर्षों पहले इस्लाम धर्म के बढ़ते हुए साम्राज्य विस्तार तथा उनकी सुदृढ़ता को समाप्त करने के लिए इस्लाम के विरुद्ध सलीबी युद्ध कराने का प्रोग्राम बनाया था। परन्तु सन् १९८० के दशक व उसके बाद २००१ में हुए न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर व अमरीकी रक्षा मंत्रालय पेंटागन पर अमरीका के ही विमानों का टक्कर कर कुछ इन्हीं के विद्रोहियों ने इसके घमण्ड को चूर करने का इरादा किया था। उसी समय से इसाइयत का इस्लाम पर हमला अधिक तेज हो गया।

अमरीका ने पूरे विश्व के मुसलमानों को संदिग्ध आतंकवादियों के रूप में जबरन मानकर उनके विरुद्ध तरह–तरह की शर्मनाक हरकतें कर रहा है। गत वर्ष अमरीकी शैतानों ने अफगानिस्तान की धरती पर बमों की बारिश करके सम्पूर्ण देश को लहूलुहान कर दिया था और २००३ में उसने इराक पर अपनी पुरानी हरकत को दुहराकर एक बहुत नापाक काम का परिचय दिया है। इससे उसकी छवि को करारा झटका लगा है फिर भी उसे इस बात का कोई एहसास नहीं है वह तो एक विवेकहीन पशु के समान है और उसका अगला लक्ष्य सीरिया, ईरान तथा अन्य कई मुस्लिम देश उसकी आक्रामक नीति का शिकार हो सकते हैं।

इस प्रकार की परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए मुसलमानों में एकता की भावना तथा अपने देशों के आपसी सहयोग मज़बूत करना चाहिए तथा उन्हें आपस में एकजुट होकर एक ऐसी योजना का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे उनकी शक्ति व देश का विकास हो तथा दुन्या की बड़ी से बड़ी शक्ति उन्हें हिला न सके। उन्हें आपसी मन–मुटाव को समाप्त कर अपने हित की बात को ध्यान में रखना चाहिए। परन्तु ऐसी विचार धारा का अनुसरण तभी किया जा सकता है जब कि मुसलमान अपने धर्म के अनुसार व पैगम्बर साहब के बताए हुए मार्ग पर चले और उसमें किंचित मात्र सन्देह न रहे।

प्रश्न द्वारा मु० अकरम

(१) क्या औरत साड़ी में नमाज़ पढ़ सकती है ?

(२) नमाज़ पढ़ते समय औरत का कितना हिस्सा खुला होना चाहिए और कितना बन्द होना चाहिए ?

(३) क्या हाफ़ आस्तीन के जम्पर में औरत की नमाज़ हो जाती है ?

(४) क्या हल्के कपड़े में औरत की नमाज़ होती है ?

(५) अगर मां से बहू का झगड़ा हो तो क्या मां के और लड़को को गुस्सा होना और बहू से कभी बात न करना वाजिब है।

(६) परेशानी में क्या दुआ तावीज़, जादू–टोना कराना वाजिब है ?

(७) क्या रोज़ी की बरकत के लिए दुकान में कुछ पढ़कर पानी छिड़कना या अगरबत्ती जलाना जाइज़ है ?

(८) क्या औरतें या आदमी खड़े होकर वाशबेसिन में वुजू कर सकते हैं ?

(९) घर पर क्या टाल–टाल कर नमाज़ पढ़नी चाहिए कि अव्वल वक्त पर।

(१०) औरतें साड़ी पहनकर या हाफ आस्तीन के जम्पर पहनकर बाहर घूमती हैं उनके लिए क्या हुक्म है ?

उत्तर द्वारा मु०सरवर फारूक़ी नदवी

१, २ – हां, औरत साड़ी पहन कर नमाज़ पढ़ सकती है बशर्ते कि चेहरा, हथेलिया, और पैर के पंजों के सिवा पूरा जिस्म ढका हो।

३– हाफ आस्तीन की जम्फर में औरत की नमाज़ नहीं हो सकती।

४– जिस कपड़े से औरत का बदन झलके उस में उस की नमाज़ नहीं होगी।

५– मां, बहू में झगड़ा हो तो उनको मिला देना वाजिब है। बहू के महरमों को उससे शरअी उज़्र के बिना बोल चाल बन्द करना दुरुस्त नहीं।

६. अल्लाह के कलाम से दुआ तावीज़ जाइज़ है, जादू टोना हराम है। लेकिन दुआ तावीज वाजिब नहीं है।

७. रोजी की बरकत के लिए दुआ करना चाहिए, पढ़ा पानी छिड़कना और खुशबू जलाना जाइज़ है।

८. ज़रूरत पर वाशबेसिन में खड़े होकर वजू कर सकते हैं।

९. नमाज़ मुकर्ररा वक़्त पर पढ़ना जरूरी है। देर से पढ़ने पर भी नमाज़ हो जाएगी परन्तु नमाज़ में सुस्ती करना बड़ा गुनाह है।

१०. औरतें जो कपड़े चाहें पहनें बस इन बातों का ख़याल रहे। न बदन झलके, न कपड़ा खूब चुस्त हो, न चेहरा, हथेलियां और पैर के पंजों के सिवा कुछ खुला हो। ना महरमों के सामने इतना परदा वाजिब है। अक्सर उलमा चेहरा बन्द रखना भी वाजिब बताते हैं।

आपकी समस्याएँ और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : तलाक़ के बाद इद्दत की कितनी मुद्दत होती है तफ़सील से बताएं ?

उत्तर : *अगर शौहर ने तलाक़ दे दी तो हैज़ (मासिक धर्म) आने तक शौहर ही के घर में, जिसमें तलाक़ मिली है वहीं बैठी रहे, उस घर से बाहर न निकले न दिन को न रात को, न किसी दूसरे से निकाह करे, जब पूरे तीन हैज़ खत्म हो जाएं, तो इद्दत पूरी हो गई, अब जहां जी चाहे जाए, मर्द ने चाहे एक तलाक़ दी हो या तीन तलाकें दी हों हां इसी तरह तलाक़ बाइन दी हो या रजअी सब का एक ही हुक्म है।*

प्रश्न : अगर छोटी लड़की को तलाक़ हुई हो ?

उत्तर : *अगर छोटी लड़की को तलाक़ मिल गई जिसको अभी हैज़ नहीं आता या इतनी बुढ़िया है कि अब हैज़ आना बंद हो गया है, इन दोनों की इद्दत तीन महीने है। तीन महीने बैठी रहे उसके बाद जहां चाहे निकाह करे।*

प्रश्न : अगर किसी के पेट में बच्चा हो तो उसकी इद्दत कितनी होगी ?

उत्तर : *अगर किसी के पेट में बच्चा है और उसी ज़माने में तलाक़ मिल गई तो बच्चा पैदा होने तक बैठी रहे यही उसकी इद्दत है, जब बच्चा पैदा हो गया तो इद्दत खत्म हो जायेगी। चाहे तलाक़ मिलने के थोड़ी ही देर बाद क्यों न बच्चा पैदा हुआ हो।*

प्रश्न : अगर हैज़ की हालत में तलाक़ मिली हो तब क्या करे ?

उत्तर : *अगर किसी ने हैज़ के जमाने में तलाक़ दे दी तो जिस हैज़ में तलाक़ दी है तो उस हैज़ का कुछ एतिबार नहीं, उस को छोड़कर तीन हैज़ और पूरे करे।*

प्रश्न : तलाक़ की इद्दत किस औरत पर है ?

उत्तर : *तलाक़ की इद्दत उस औरत पर है जिसको सोहबत (सम्भोग) के बाद तलाक़ मिली हो या सोहबत (सम्भोग) तो अभी नहीं हुई मगर शौहर बीवी में तन्हाई हो चुकी है तब तलाक़ मिली हो?*

प्रश्न : इद्दत के ज़माने का खाना कपड़ा किसके ज़िम्मे है ?

उत्तर : *इद्दत के ज़माने का खाना कपड़ा उसी मर्द के ज़िम्मे है जिसने तलाक दी है।*

प्रश्न : शौहर के मरने के बाद की इद्दत का क्या हुक्म है ?

उत्तर : *किसी का शौहर मर गया हो तो वह चार माह और दस दिन तक इद्दत में बैठे। शौहर के मरते वक्त जिस घर में रहा करती थी उसी घर में रहना चाहिए, बाहर निकलना ठीक नहीं हां अगर कोई ग़रीब औरत है जिस के पास गुज़ारे के मुताबिक खर्च नही, उसने खाने पकाने आदि की नौकरी कर ली, तो उसको बाहर जाना और निकलना ठीक नहीं है लेकिन रात को अपने ही घर में रहा करे, चाहे सुहबत (सम्भोग) हो चुकी हो या न हो चुकी हो और चाहे हैज़ आता हो या न आता हो सब का एक ही हुक्म है हां वह औरत पेट वाली थी और उसी हालत में शौहर मरा तो बच्चा होने तक इद्दत बैठे, अब महीने का कोई एतिबार नहीं, अगर मरने से दो चार घंटे बाद बच्चा पैदा हो गया तब भी इद्दत ख़त्म हो गयी घर भर में जहां जी चाहे रहे।*

प्रश्न : अगर किसी के शौहर के मरने या तलाक़ की खबर बहुत दिन बाद मिले तो क्या हुक्म है?

उत्तर : *किसी का शौहर मर गया उसे खबर नहीं मिली चार महीने दस दिन बाद ख़बर आई तो उसकी इद्दत पूरी हो चुकी, जब से ख़बर मिली है तब से इद्दत में बैठना ज़रूरी नहीं इसी तरह अगर शौहर ने तलाक़ दे दी मगर उसको मालूम न हुआ, बहुत दिनों के बाद ख़बर मिली जितनी इद्दत उसके ज़िम्मे थी उस ख़बर मिलने से पहले ही गुज़र चुकी। तो उसकी भी इद्दत पूरी हो गई अब इद्दत में बैठना वाजिब नहीं।*

प्रश्न : बीवी का रोटी कपड़ा मर्द के ज़िम्मे है या नहीं ?

उत्तर : *बीवी का रोटी कपड़ा मर्द के ज़िम्मे वाजिब है, औरत चाहे कितनी ही मालदार हो मगर खर्च मर्द ही के ज़िम्मेद है और रहने के लिए घर देना भी मर्द ही के ज़िम्मे है इसी तरह जितने दिनों तक शौहर की इजाज़त से अपने मां बाप के घर रहे उतने दिनों का रोटी कपड़ा भी मर्द से ले सकती है। इसी तरह औरत बीमार पड़ जाए तो बीमारी के ज़माने का रोटी कपड़ा पाने की हक़दार है चाहे मर्द के घर बीमार पड़े या अपने मैके में,*

लेकिन अगर बीमारी की हालत में मर्द ने बुलाया फिर भी नहीं आई तो अब उसके पाने की हक़दार नहीं रही और बीमारी की हालत में केवल रोटी कपड़े का खर्च मिलेगा, दवा, इलाज और डाक्टर का खर्च मर्द के ज़िम्मे वाजिब नहीं अपने पास से ख़र्च करे, अगर मर्द दे दे तो उस का एहसान है।

प्रश्न : हज के ज़माने का ख़र्च क्या शौहर के ज़िम्मे है या नहीं ?

उत्तर : *औरत हज करने गई तो इतने ज़माने का रोटी कपड़ा मर्द के ज़िम्मे नहीं, हां अगर मर्द भी साथ हो तो उस ज़माने का खर्च भी मिलेगा, लेकिन रोटी कपड़े का जितना खर्च घर में मिलता था उतना ही पाने की हक़दार है, जो कुछ ज्यादा लगे वह अपने पास से लगाए और जहाज़ या रेल का खर्च भी मर्द के ज़िम्मे नहीं है।*

इसी तरह रोटी कपड़े में दोनों की रिआयत की जाएगी अगर दोनों मालदार हों तो अमीरों की तरह रोटी कपड़ा मिलेगा और औरत अमीर हो या औरत ग़रीब है और मर्द अमीर, तो ऐसा रोटी कपड़ा दे कि अमीरी से कम हो, और ग़रीबी से बढ़ा हुआ हो।

इसी तरह अगर औरत बीमार है कि घर का कारोबार नहीं कर सकती या ऐसे बड़े घर की है कि अपने हाथ से पीसने कूटने खाना पकाने का काम नहीं कर सकती बल्कि बुरा समझती है तो पका पकाया खाना दिया जाएगा, और अगर दोनों बातों में से कोई बात न हो तो घर का सब काम काज अपने हाथ से करना वाजिब है। यह सब काम खुद करे मर्द के ज़िम्मे केवल इतना है कि चूल्हा, चक्की कच्चा अनाज, लकड़ी, गैस खाने पीने के बर्तन ला दे वह अपने हाथ से पकाए और खाए।

प्रश्न : मर्द के ज़िम्मे क्या घर भी है?

उत्तर : *मर्द के ज़िम्मे वाजिब है कि रहने के लिए कोई ऐसी जगह दे जिसमें शौहर का कोई रिश्तेदार न रहता हो, बिल्कुल खाली हो, हां अगर औरत खुद साझे के घर में रहना पसंद करे तो कोई हर्ज नहीं।*

प्रश्न : क्या अलग मकान देना ही ज़रूरी है ?

उत्तर : *मकान अलग होना ही ज़रूरी नहीं है लेकिन घर में एक जगह या कमरा अलग हो ताकि वह अपना माल व सामान हिफ़ाज़त से रखे और खुद उस कमरे में रहे और उसका ताला चाभी अपने पास रखे किसी और का उसमें दख़ल न हो, तो बस हक़ अदा हो जाएगा।*

प्रश्न : औरत अपने मैके कब–कब जा सकती है ?

उत्तर : *औरत अपने मां बाप को देखने के लिए हफ़्ता में एक बार जा सकती है, और मां बाप के सिवा और रिश्तेदारों से मिलने के लिए साल भर में एक बार उससे ज्यादह का अख्तियार नहीं इसी तरह उसके मां बाप भी हफ़्ता में एक बार आ सकते हैं।*

प्रश्न : अगर मां बाप बीमार हों तो ?

उत्तर : *अगर बाप बहुत बीमार है और उसका कोई देख भाल करने वाला नहीं है तो ज़रूरत के मुताबिक़ वहां रोज जा सकती है चाहे बाप काफिर ही क्यों न हो और चाहे शौहर मना भी करे तब भी जा सकती है लेकिन शौहर के मना करने पर जब तक वहां रहेगी रोटी कपड़े का हक शौहर के ज़िम्मे न होगा।*

खुदा का खौफ़

भोर होने को है। एक दूध बेचने वाली मां अपनी बेटी से कह रही है :–

मां : बेटी दूध में पानी मिला दो ग्राहक आने वाले हैं।

बेटी : ना मां खलीफा (इस्लामिक शासक) घोषित कर चुके हैं कि कोई दूध में पानी न मिलावे।

मां : पगली कहीं की, क्या खलीफा देख रहे हैं ?

बेटी : मां ख़लीफ़ा नहीं देख रहे हैं तो अल्लाह तो देख रहा है। याद रखिए खदा का खौफ एकान्त में भी बुराइयों से रोक देता है।

0522-508982

Mohd. Miyan

Jwellers

एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के जेवरात की दुकान

1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

0522-508982

अनारा मैरेज हाल

बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।

कपूर मार्केट (मलिक मार्किट) विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

इन्सानियत से बग़ावत

अली मियां (रह०)

मानवता का सही अनुमान परीक्षा की घड़ी में और ऐसे अवसर पर होती है कि चोरी, पाप किया जा सके किसी के हक को मारा जा सके, मगर मानव का अन्तःकरण उसका हाथ पकड़ ले। जहां इन्सानियत का गला घोटा जा रहा हो वहां इन्सानियत अपना जौहर दिखाये। इन्सानियतं का अन्दाजा हमारी वर्तमान जीवन पद्धति और भौतिक विकास के मापदण्डों से नहीं हो सकता।

मानवता का स्थान वास्तव में बहुत ऊंचा है परन्तु मानवता के विरुद्ध मानव सदैव स्वयं बग़ावत करता रहा है। उसे मानवता के स्तर पर बने रहना हमेशा दूभर और कठिन मालूम हुआ है। वह कभी नीचे से कतरा कर निकल गया और कभी उसने अपने आप को मानवता से ऊपर समझा अर्थात उस ने कभी मानवता से कहीं ऊंचा कहलवाने और खुदा या पूज्य बनने का प्रयास किया, और सच्ची बात यह है कि लोगों ने खुदा और पूज्य बनने की कोशिश कम की, लोगों ने उन्हें खुदा और पूज्य बनाने का प्रयास अधिक किया, और दर्शन शास्त्र और आध्यात्मवाद का इतिहास हमें बताता है कि लोग मानवता से उच्चतर किसी मर्तबा व प्रतिष्ठा की तलाश में रहे, और इन्सानों को इन्सान का सही स्थान समझाने के बजाए उस से ऊंचा होने की चिंता करते रहे। इसके साथ–साथ दूसरी कोशिश यह रही कि इन्सान को इन्सानियत से गिरा दिया जाये। वह दानवता का आदी बने और दुनिया में मनमाने जीवन का चलन हो।

इन दोनों प्रयासों के परिणाम दुनिया में हमेशा खराब हुए जब इन्सान को इन्सानियत से उठाकर खुदा या पूज्य बना दिया गया तो संसार में अव्यवस्था फैली और बिगाड़ पैदा हुआ। संसार में लोगों ने जब खुदाई का दावा किया और लोगों ने उन्हें यह स्थान दिया तो संसार में बिगाड़ बढ़ता गया और मानव जीवन में नई–नई समस्याएं पैदा हो गईं। जब एक मामूली सी घड़ी किसी अनाड़ी के हाथ पड़ जाती है और वह उसकी मशीन में दखल देता है तो वह बिगड़ जाती है। तो संसार की यह व्यवस्था बनावटी खुदाओं से कैसे चल सकती है, इस संसार की इतनी समस्याएं, इतनी जटिलताएं हैं कि यदि एक मानव इस दुन्या को चलाना चाहे तो निश्चय ही उसका परिणाम बिगाड़ होगा। मेरी मंशा यह नहीं कि इन्सान इन्सानियत के दायरे में तरक्की न करे बल्कि यह कि इन्सान खुदाई की कोशिश न करे।

धर्मों का इतिहास बताता है कि जब इस प्रकार का प्रयास किया गया तो ऐसी जटिलताएं उभर कर सामने आईं जिनका कोई इलाज न था यह प्रयास दुन्या के कोने–कोने में हमेशा थोड़े–थोड़े अन्तराल से होते रहे हैं। ऐसे लोगों ने प्रकृति से ज़ोर आज़माई की है और प्रकृति से लड़कर इन्सान ने हमेशा मात ही खाई है।

दूसरी ओर प्रायः ऐसे इन्सान गुजरे हैं जिन्होंने अपने आप को चौपाया सा जाना, उनको इन्सान की हैसियत से अपनी तरक्की का कोई एहसास नहीं हुआ। अपनी मानवता अपनी आत्मा व आध्यात्मवाद और ईश–भक्ति को तरक्की देने का उनको कभी विचार तक नहीं आया। दुन्या में अधिक संख्या इन्हीं इन्सानों की रही है। इस युग की विशेषता यह है कि इसमें यह दोनों बगावतें, यह दोनों अवगुण और यह दोनों फसाद जमा हो गये हैं। इस समय लगभग पूरी दुनिया इन्हीं दो गुटों में बटी हुई है। कुछ एक आदमी हैं जो खुदाई के दावेदार हैं और जिनको देवता बनने का शौक है, बाकी अक्सर वह इन्सान हैं जो चौपायों और दानव का सा जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इसलिए इस युग का बिगाड़ हर युग से बढ़ गया है और जीवन नरक बन गया है।

इस समय जनगणना के खानों में ऐसा कोई खाना नहीं कि जो लोग इन्सानियत की कदर करते हैं और उसे सही तौर पर इस्तेमाल करते हैं उसमें उनका अंकन किया जाय । आप स्वयं ही इंसाफ़ कीजिए कि आपके चारों ओर जीवन का जो तूफान उमड़ा हुआ है उसमें कितने इन्सान हैं जिनको इन्सानियत का एहसास है जो वह समझते हैं कि हमें सिर्फ एक पेट ही नहीं दिया गया है बल्कि मालिक ने

इन्सान को आत्मा भी दी है, दिल भी दिया है और दिमाग़ भी दिया है जिनकी हम हमेशा अनदेखी करते हैं और उनके सही इस्तेमाल से बचते हैं। हम काम और लोभ के रेले में ऐसे बहे चले जा रहे हैं जैसे एक गाड़ी अपने नियंत्रण से बाहर लुढ़क रही हो जिस पर किसी को कोई क़ाबू न हो। मैं और समझाकर कहूं तो यूं समझए कि इन्सानियत एक साइकिल है और वह साइकिल एक ढलुआं पुल पर से फिसल रही है, उसमें न कोई घण्टी है न ब्रेक और न उसके हैण्डिल पर किसी का हाथ है। भूगोल की पुरानी शिक्षा यह बतलाती थी कि जमीन चपटी है। भूगोल की नई खोज से यह सिद्ध होता है कि जमीन गोल है, लेकिन मुझे भूगोल के अध्यापक और छात्र क्षमा करें, मैं तो यह देख रहा हूं कि जमीन ढलुवां है इसलिए कि सारे राष्ट्र और उनके तमाम लोग नैतिक उत्कर्ष से अनैतिक पतन की ओर लुढ़कते चलेआ रहे हैं और दिन प्रतिदिन उनकी गति तेज़ होती जा रही है। हमारी पृथ्वी अवश्य सूर्य की परिक्रमा कर रही है। पृथ्वी की परिक्रमा का मानव पैसा और पेट की परिक्रमा कर रहा है। पृथ्वी की परिक्रमा का मानव के आचरण व व्यवहार पर कोई असर नहीं पड़ता लेकिन इन्सानों की इस परिक्रमा का तमाम दुन्या के आचरण व हालात पर असर पड़ रहा है। सौर्य मण्डल में वास्तविक केन्द्र सूर्य हो या पृथ्वी किन्तु व्यवहारिक जीवन में मानव का मुख्य केन्द्र पेट और वासना बनी हुई है, और सारी मानवता इसकी परिक्रमा कर रही है। आज दुनिया का सबसे विस्तृत क्षेत्रफल पेट का है। यूं कहने को तो वह मानव शरीर का बहुत छोटा अंग है किन्तु उसकी लम्बाई चौड़ाई और गहराई इतनी बढ़ गयी है कि सारी दुन्या इसमें समाती चली जा रही है। यह पेट इतनी बड़ी खन्धक है कि पहाड़ों से भी नहीं भरता। आज सबसे बड़ा मजहब, सबसे बड़ी फिलास्फी पेट पूजा है। आज युवा पीढ़ी को कामयाब और दौलतमंद बनने की कला सिखायी जाती है। आज दौलत मंद बनने की रेस है। धनवान बनने की लालसा इतनी बढ़ गयी है कि इन्सान को स्वयं अपने तन मन का ध्यान नहीं रहा।

अध्ययन, ज्ञान अर्जन और ललित कलाओं का उद्देश भी यही हो गया है कि इन्सान कहां से अधिक से अधिक रूपया प्राप्त कर सकता है। सबसे बड़ा हुनर और कला यह है कि लोगों की जेबों से किस प्रकार रूपया निकाल कर अपनी जेब भरी जाय। इतना ही नहीं बल्कि कम से कम समय में अधिक से अधिक दौलतमंद बनने का प्रयास किया जाता है। दौलतमंद बनने की कोशिश सभ्यता और समाज के लिए उतनी हानिकारक नहीं जितनी जल्द दौलतमंद बनने की हविस (लालसा) है। यही हविस रिश्वत, ग़बन, चोर बाजारी, और धन जुटाने के अन्य आपराधिक स्रोतों पर आमादा करती है। इसलिए कि इन आपराधिक तरीकों के बिना जल्द दौलतमंद बनना सम्भव नहीं इस सोच के कारण सारी दुनिया में एक मुसीबत बरपा है। दफ्तरों में तूफानहै, मण्डियों में प्रलय का दृश्य है। आज इन्सान जोंक बन गये हैं। और इन्सान का खून चूसना चाहते हैं। आज कोई काम निःस्वार्थ व बे मतलब नहीं रहा। आज कोई व्यक्ति बिना अपने फायदे और मतलब के किसी के काम नहीं आता। आज हर चीज अपनी मज़दूरी और फ़ीस मांगती है। कभी–कभी तो यह विचार होने लगता है कि यदि वृक्ष की छाया में दम लेंगे तो शायद वृक्ष भी अपनी फ़ीस और मज़दूरी मांगने लगेंगे। सब पर दौलत और वासना का नशा सवार है। आज दौलत कमाना ही जीवन का ध्येय बन गया है और सारी दुन्या इसके पीछे दीवानी है। आज जिस इन्सान को ईश भक्त होना चाहिए था ईश्वर के प्रेम व भक्ति से अपने दिल और मन की ज्योतिर्मय और जीवन को सार्थक करना चाहिए था, अफसोस इन्सान सच्चे प्रेम से और ईश भक्ति की दौलत से वंचित है। इसलिए जीवन के सही आनन्द से वंचित है। मानवता से वंचित है। और अफसोस है कि लाखों करोड़ों इन्सानों को इससे वंचित रहने का एहसास भी नहीं। आज जिस मानव को ईश्वर का पुजारी होना चाहिए था वह धन का पुजारी और मन का गुलाम बना हुआ है, और उसको इस स्वाभाविक गुलामी का एहसास भी नहीं।

राजनीतिक मतभेद और प्रशासन व्यवस्था तो फुरसत की बातें हैं। हम तो यह जानते हैं कि शासन प्रशासन के अन्दर कब्ज़ा इच्छाओं का है। सत्ता पर अधिकार चाहे किसी कौम या पार्टी का हो और चाहे कोई अध्यक्ष या मंत्री हो, परन्तु वास्तव में हर जगह मन की चाहत और इच्छाओं का कब्ज़ा है। पहले ब्रिटेन के बारे में कहते थे कि उसके साम्राज्य में सूरज नहीं डूबता किन्तु आज जिस हुकूमत में सूर्यास्त नहीं होता वह मन की चाहत का साम्राज्य है।

समय की मांग यह है कि मन की चाहत पूरी की जाये, दिल की आग बुझाई जाये, चाहे इन्सानों के खून की नहरें बहती हों, चाहे इन्सानों के ऊपर उनकी लाशों को रौंदते हुए गुजरना पड़े, चाहे क़ौमें इस रास्ते पर तबाह हो जायें, चाहे मुल्क उजड़ जायें। लेकिन इसमें तनिक भी आश्चर्य की बात नहीं, सैकड़ों वर्ष से जो शिक्षा इन्सानों को दी जा रही है चाहे वह शिक्षा संस्थाओं के द्वारा हो या सिनेमा के द्वारा अथवा साहित्य व कविता के द्वारा जो हर मुल्क और हर कौम में प्रचलित है, इसका निष्कर्ष यही है कि तुम मन के राजा और वासना के गुलाम हो। इस युग के सारे इन्सानों की आबादियां इस लेहाज से एक स्तर पर हैं और उसके विरोध में कोई आवाज सुनाई नहीं देती। देशों के विरुद्ध बग़ावत करने वाले बहुत हैं, स्थानीय समस्याओं के लिए जान की बाजी लगा देने वाले बहुत हैं लेकिन इन्सानियत के लिए मरने वाले कितने हैं ? कितने ऐसे हैं जिनको सच्ची मानवता की चिन्ता है ? आज दुन्या में अगर किसी को मानवता के पतन का एहसास भी है तो उसमें यह साहस नहीं है कि इन्सानियत के लिए आवाज़ उठाये।

वास्तव में पैगम्बरों और ईश दूतों ही का साहस था, चाहे यह इब्राहिम अ०हों या मूसा अ० हों, ईसा अ० हों या मोहम्मद सल्ल० हों कि उन्होंने सारी दुन्या को चैलेंज करके इन्सानियत के ख़िलाफ़ जो बग़ावत जारी थी उसे रोका। उनके सामने दुनिया की दौलत और सुख–चैन लाया गया मगर उन्होंने सबको ठुकरा दिया और मानवता की पीड़ा में अपनी जान को खतरे में डाला। ईश्वर के परम भक्तों की यह टोली जिसको पैगम्बरों की टोली कहा जाता है, दुन्या को कुछ देने के लिए आई थी, दुनिया से कुछ लेने के लिए नहीं आई थी। उनका कोई निजी स्वार्थ नथा। उन्होंने दूसरों के पनपने की खातिर अपने को मिटाया, उन्होंने दूसरों की आबादी की खातिर अपने घरों को उजाड़ा, उन्होंने दूसरों की खुश हाली के लिए अपने सगे सम्बन्धियों को भूखा रखा, उन्होंने गैरों को नफ़ा पहुंचाया और अपनों को मुनाफा से वंचित रखा। क्या दुनिया के लीडरों में ऐसी निष्ठा और निःस्वार्थ की मिसालें मिल सकती हैं? पैगम्बरों ने अपने–अपने समय में अपनी–अपनी क़ौम में तड़प पैदा की और उनको महसूस कराया कि मौजूदा ज़िन्दगी खतरे की है। जो लोग इतमीनान के आदी थे और मीठी नींद सो रहे थे और मीठी नींद ही सोना चाहते थे उन्होंने पैग़म्बरों की उस पुकार और बुलावे का कड़ा विरोध किया और बड़ी शिकायत की कि उन्होंने हमारी मीठी नींद खराब कर दी। लेकिन जो घर में आग लगी हुई देखता है वह सोने वालों की परवाह नहीं करता और उसको किसी की नींद पर तरस नहीं आता। पैग़म्बर इन्सान के सच्चे हमदर्द थे। वह दुनिया को गफलत की नींद से जगाना अपना फर्ज़ समझते थे। पैगम्बरों ने इन्सानों को झिंझोड़ा और जगाया।

हमारे सामने सर्वाधिक उज्जवल और सर्वोत्कृष्ट व्यक्तित्व हज़रत मोहम्मद सल्ल० का है। अगर हम इस सच्चाई की अभिव्यक्ति न करें तो यह एक खियानत होगी। हमारा अन्तःकरण इस की इजाजत नहीं देता कि उनके उस एहसान को न बतलायें जो उन्हों ने इन्सानियत पर किया।

जब दुनिया में एक इन्सान यह नहीं कह सकता था कि अल्लाह ही इस दुनिया को अकेला चला रहा है ओर वही बन्दगी के लायक़ है। आप ने इस सच्चाई का एलान किया, आज वह आवाज़ तमाम दुन्या में फैल गई है।

आपकी शिक्षा और आपने जो कुछ दुनिया को दिया वह मानवता का सम्मिलित धरोहर और पूंजी है जिस पर किसी कौम की इजारादारी (एकाआद्यपत्य) क़ायम नहीं हो सकती जिस प्रकार हवा, पानी और रौशनी पर किसी को इजादारी का हक़ नहीं और कोई उस पर अपनी मुहर और अपनी छाप नहीं लगा सकता। इसी प्रकार हज़रत मोहम्मद सल्ल० की शिक्षायें सारी दुनिया का हक़ हैं और प्रत्येक व्यक्ति का उसमें हिस्सा है जो उन से फ़ायदा उठाना चाहे। यह दुनिया की तंगनजरी है कि वह इन अधिकारों को किसी कौम या मुल्क की जागीर समझे। हज़रत मोहम्मद सल्ल० जग के मुहसिन (उपकारी) थे और सारी मानव जाति आप की आभारी है। दुनिया में जो कुछ न्याय इस समय मौजूद है और जिन सच्चाइयों को इस समय स्वीकारा जा रहा है वह सब आपका उपकार है।

अनुवाद तथा प्रस्तुति : मो०हसन अंसारी

अपने पढ़ने वालों से !

हम आपके सुझाओं का स्वागत करेंगे। हम आप से "सच्चा राही" के नये खरीदार बनाने का अनुरोध करते हैं।

आप अपनी सामाजिक तथा धार्मिक समस्याएं हम को लिखें हम आप को उचित तथा शुद्ध उत्तर देने का प्रयास करेंगे। लेखकों से अनुरोध है कि वह सरल भाषा में लिखा करें। – सम्पादक

यूरोप की धोखे बाजी और मर्दों की मर्दान्गी ?

सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी

एक ज़माने से औरत को घरेलू ज़िन्दगी के क़ैदखाना से निकाल कर बाहर की दुन्या में हिस्सा लेने, और उसको शिक्षित बनाने का विश्व व्यापी रूजहान पैदा हो गया है, जिसके ज़रिए वह बाहर की दुन्या में हिस्सा ले सकती है, और ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में बेहतर काम अंजाम दे सकती है अतः कुछ मुल्कों में औरतों ने घरेलू ज़िन्दगी की आराम देह ज़िन्दगी को छोड़कर समाजी, हुकूमती, और सियासी समस्याओं में हिस्सा लेना शुरू कर दिया है, और एलेक्शनों, सरकारी कार्यालयों और तिजारती कामों में मर्दों के बराबर खड़ी हो गयीं।

औरत को घरेलू ज़िन्दगी से निकाल कर शिक्षा व दीक्षा के गहवारे से आज़ाद कर के और समाज सुधार और खानदान के निर्माण से अलग कर के नये ज़माने की रंगीलियों में खो जाने, दुन्या की दुकानों, साइन बोर्डों पर उसकी फोटो लगा कर के अपनी तिजारत को बढ़ावा देने से भिन्न–भिन्न प्रकार के फ़साद सामने आ रहे हैं, विभिन्न प्रकार की शरारतें पैदा हो रही हैं, जिसकी वजह से घरेलू ज़िन्दगी ख़त्म हो कर रह गयी है।''

शिक्षा व दीक्षा के मैदान में मुहब्बत व इज़्ज़त नेकी और परहेज़गारी एक नयी नस्ल के निर्माण में बहुत सी कठिनाइयां सामने आ रही हैं, और इस्लामी कलचर व निशान न केवल यह कि बाक़ी नहीं रहता, बल्कि वह बिल्कुल मिटा दिया जाता है।

यूरोप ने मुसलमान औरत के मान सम्मान पर पानी फेरने, घरेलू ज़िन्दगी से निकाल कर बाहरी ज़िन्दगी गुज़ारने में पूरी कोशिश की है।

अतः औरतें देश के एलेक्शनों, रैलियों, तेजारतों, स्कूलों, बैंकों और होटलों की ज़िम्मेदारियों में मर्द के क़दम में कदम मिला कर चलने को अच्छा समझती हैं उसके लिए उसने खूबसूरत हेडिंग, आकर्षित इस्कीन पर दीनी वजह जायज़ करके उसका सहारा लिया है।

जिसका उद्देश्य केवल यही है कि तमाम लोग इसी धोखेबाज़ी के शिकार हों, और उनमें यह ख्याल पैदा हो जाये कि औरत मर्द की पत्नी होने की वजह से पूरे घर के मामले में भी हिस्सा ले सकती है।

यह एक वास्तविकता है कि यूरोप में इस धोखेबाज़ी ने मर्दों की मर्दान्गी ही बिल्कुल खत्म कर दी है। औरतों को बाहरी ज़िन्दगी ने निकाल बाहर किया है, और इस्लामी शर्म व हया को खत्म करने पर मजबूर किया, खास कर नक़ाब और पर्दा को बहुत दूर फेंकने पर ज़ोर दिया कि प्रोग्रामों, रैलियों और मर्दों की मुलाकातों में सामने नज़र आने लगी, और ज्यादहतर वक्त घर से बाहर सड़कों, मेलों और होटलों में गुज़ारने लगीं, न उसे अपने बच्चों की परवाह है न अपने पति की फिक्र, बल्कि वह अपने काम में व्यस्त हैं।

यूरोप इस वास्तविकता को अच्छी तरह जानता है कि औरत ही समाज में रीढ़ की हड्डी के समान है अगर यह खराब हो जाए, तो पूरा समाज ही खराब हो जाएगा और वह समाज इन्सानी ज़रूरतों के पूरा करने की क्षमता नहीं रख पाएगा, मुसलमान औरत ही आज इस आज़ादाना कार्रवाइयों और विभिन्न प्रकार के तजुर्बों का निशाना बनी हुई है, जिनकी यह कामना है कि वह अख़लाक़ी दीवार टूट जाए, जिसको इस्लाम ने मर्द व औरत के बीच क़ायम की है, और औरत तमाम प्रोग्रामों में शर्म व हया को ख़त्म करके उसके साथ बेधड़क रहे।

और यह सच्चाई है कि मर्दों के साथ रहने से ऐसे गुनाह सामने आते हैं, जिनसे बच ही नहीं सकती, और वह समाज की उन्नति में रूकावट बनती हैं, और उसके बदले में इन्सानी समाज को शर्म व हया और बेइज्ज़ती का सामना करना पड़ता है।

समाज के निर्माण में इस्लाम के निश्चित किये हुए कानून को खत्म करने की वजह से बुरे नतीजे सामने आते हैं, यही कारण है कि आज एक मुसलमान औरत इस मैदान में पीछे रहती है, दरिन्दगी और खूंरेजी के हादिसे सामने आते हैं, पूरा इन्सानी समाज व्यवहारिक और दिमाग़ी बीमारियों का शिकार हो जाता है, और पूरी दुन्या जुल्म और बुराईयों का अड्डा बन जाती है, और इन्सानियत के खिलाफ़ बग़ावत और चैलेन्ज सामने आता है।

ऐसी सूरत में क्या इस क़िस्मत मी मारी मुसलमान औरत का कोई ठिकाना है जिसकी ओर वह शरण पा

सके, और अपना इलाज कर सके? और औरत की उन्नति की उम्मीद रखते हुए यह कह सकते हैं कि वह इन्सानी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकती है, जिसकी वजह से इन्सानी ज़िन्दगी का भविष्य सुन्दर होगा।

परन्तु यह उसी वक़्त संभव होगा, जब एक अच्छे इल्मी व दीनी घराने में उसकी शिक्षा का प्रबन्ध हो और खुद उसे अल्लाह तआ़ला की मेहरबानी की सही बुद्धि हो, और जो ज़िम्मेदारियां उसके ऊपर डाली गयी हैं, उसका सही तरीके से एहसास भी हो, यह हक़ीक़त है कि अल्लाह तआ़ला ने औरत को "दुनिया का बेहतरीन सम्पत्ति बनाया है" और घरेलू ज़िन्दगी के निर्माण में अल्लाह की निकटता के लिए एक अच्छा अवसर दिया है परन्तु अंगर औरत का आचरण बुरा होता है, तो ज़िन्दगी और समाज हर क्षेत्र में बुराई–बेहयाई पैदा करने में महत्वपूर्ण किरदार अदा करती है और दुनिया को जहन्नम बना देती है।

आज तहज़ीब के मानने वालों ने औरत को केवल प्रोपेगन्डा का ज़रिया और घटिया उद्देश्य पाने के लिए ज़रिया बना रखा है, अतः न वह घर की देख रेख कर सकती है, और न अपने बच्चों की शिक्षा व दीक्षा और न ही सही ढंग से परवरिश कर सकती है, और न कोई अच्छाई ही उसके अन्दर ला सकती है, और न पति के सुधार में कुछ रोल ही अदा कर सकती है,

बल्कि वह एक ऐसे फलदार और मेवे से लदे हुए पेड़ की तरह है, कि जब तक वह पेड़ फल देता है, उस समय तक लोगों के ध्यान का केन्द्र बना रहता है, परन्तु जब उसकी योग्यता खत्म हो जाती है तो उसको जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया जाता है, यूरोप में आज औरत के साथ यही सुलूक किया जा रहा है, जब तक वह जवान होती है, तो लोगों को उससे दिलचस्पी रहती है परन्तु जब जवानी से निकल कर आगे की मंज़िल में क़दम रखती है तो उसको मजबूर और बूढ़े लोगों के सरकारी घरों में डाल दिया जाता है, न घर वालों को उसकी फ़िक्र होती है और न उसकी संतान ही उस पर दया करती है।

इसके विरुद्ध इस्लाम ने औरत के दर्जे व मर्तबे का पूरा ख्याल रखा है जब वह बूढ़ी हो जाती है तो लोग खास कर उसकी इज्जत करते हैं वह पूरे घर की मालिक होती है, घर के सारे मामले मश्वरह से होते हैं वह इस उम्र में भी काहिलों की तरह बैठी नहीं रहती, बल्कि जब तक उसके बदन में ताकत है वह अपने फ़र्ज़ को अदा करती रहती है, कभी कभी तो वह नेक औरत गांव और मुहल्ला में शिक्षा व दीक्षा का ज़रिया बनती है, और समाज के हालात उसके ज़रिये सुधरते हैं, और इस उम्र में उसकी सरगर्मियां तेज़ हो जाती हैं और वह क़रीब के बसने वाले मुहल्ले के लोगों की आंख का तारा बन जाती है, छोटे बड़े सब का उसके पास आना जाना रहता है, और वह लोग विभिन्न कामों में उससे मश्वरह करते रहते हैं।

ग़ैर मुस्लिम समाज में यह अच्छे आचरण कम ही हैं, क्योंकि वह समाज दुनियावी नफ़ा, सामान, और मुनाफ़ा पर क़ायम है जिसमें आचरण का महत्व नहीं होता है अच्छे अ़मल और इन्सानों से फ़ायदा उठाने और तजुर्बात नाम की कोई चीज़ नहीं होती, उसका असली मक़सद जल्दी अच्छाई आ जाए और वक़्ती फ़ायदा हो जाए, और इसी विचार को लेकर उसके आदमी ज़िन्दगी को आगे बढ़ाते रहते हैं।

रसूल (सल्ल०) ने हम मुसलमानों को औरत के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण बातों से ख़बरदार किया और उसके साथ पति–पत्नी का रिश्ता करने में कुछ बातें बयान फ़रमाई हैं आप (सल्ल०) का इरशाद है औरत से चार चीज़ों का लिहाज़ रखते हुए शादी की जाती है, सुन्दरता, माल, खानदान और दीनदारी, "मुसलमानों ! तुम्हारा भला हो तुम दीन ही पर प्राथ्मिकता दो, आप (सल्ल०) ने आख़िरी बात को दो बार तीन बार बयान फ़रमाया।

और इस रिश्ता को मज़बूत करने में दीन का असली बुनियाद क़रार दिया, क्योंकि सुन्दरता, खूबसूरती, माल व दौलत और ख़ानदान की इस्लाम में ज्यादह मान सम्मान नहीं है। और इन तीनों सबब पर क़ायम होने वाले सम्बन्ध ज़ियादा तर कमज़ोर होते हैं मुहब्बत व रहमत केवल इस्लाम धर्म की विशेषता है और यही दीन सब उन्नति का स्रोत है और यही दीन एक औरत के सुधार व तअ़लीम और खानदान के निर्माण, घर की देख रेख और पति को आराम पहुंचाने जैसे महत्वपूर्ण काम के लिए बनाता है इसी बारे में कुर्आन पाक में है ।

तर्जुमः "और उसकी निशानियों में है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जमाअ़त की पत्नियां बनायीं ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो और उसने तुम्हारे (पति और पत्नी के) बीच मुहब्बत व हमदर्दी पैदा कर दी। बेशक उसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं।"

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(सातवीं क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

ख़ानादारी के लिए सूझ बूझ और सुव्यवस्था की बड़ी ज़रूरत है। बिना व्यवस्था के घर जहन्नम का नमूना बन जाता है। यदि सूझ–बूझ के साथ न करोगी तो तुम्हारा खर्च अधिक होगा और आराम के बजाय तकलीफ उठाओगी, याद रखो घर के लिए यथा सम्भव क़र्ज़ न लो। कम से कम में घर का खर्च चलाओ, अगर पैसा न हो न मंगाओ अगर कर्ज़ होगा तो अगले महीने में फिर तुम ऐसा नहीं कर सकतीं। खाली दाल भी तुम मज़ेदार नहीं पका सकतीं।

जिस जगह जिन्स रखो उसका फर्श पुख्ता और साफ हो। उसी जगह सूप, छलनी, तराजू, बांट सब मौजूद रहें। एक बार में कुल जिन्स तौला कर ताला बन्द कर दो, अगर चूक से कोई चीज़ रह गई हो तो तुम्हीं जाकर निकाल लाओ और जो चीज़ तुम्हारी व्यवस्था से बच जाये उसे अलग रखो । अगर अच्छा इन्तेज़ाम करती रहोगी तो तुम्हें लगभग पन्द्रह दिन की जिन्स फालतू बच जायेगी उसका खर्च तुम्हें बच जायेगा। फिर दूसरा काम कर सकती हो। जो स्त्रियां सुव्यवस्था रखती हैं वह इतना बचा लेती हैं कि उस से अपना ज़ेवर और कपड़े ठीक कर लेती हैं। मगर पुरुषों से छुपा छुपा कर करती हैं। उनसे ज़रूरतें पूरी कराती रहती हैं। कुछ ऐसी होती हैं कि परेशान करके फ़रमाइश पूरी कराती रहती हैं। यह बुरा करती हैं। जब उनको आराम न दिया तो सब बेकार है। मेरा मक़सद तो यह है कि जो कुछ करो उन्हीं के आराम के लिए करो जिस के कारण राहत पहुंचती है। अगर वह न देते तो तुम कहां से करतीं। मैं तुम्हें कुल चीज़ें ज़रूरत की तद्बीर के साथ बता चुकी। अगर इस पर भी तुम न कर सको तो तुम्हारी नालायक़ी है और तुम्हारे घर वालों का दुर्भाग्य है। तुम यह कहो कि सब तो मंगाती हो मगर पूरा नहीं होता, यह बिल्कुल ग़लत है। मैं यही कहूंगी कि तुम में इन्तेज़ाम का माद्दः नहीं, तुम कुछ नहीं कर सकतीं।

घर की सफ़ाई

घर में एक जगह खास अपनी कर लो, एक कोठरी ही सही मगर वह मर्ज़ी के मुआफ़िक हो जिस में आरामदायक चीज़ें मौजूद हों जैसे खूंटियां, अल्मारी हाथ धोने और वज़ू करने की जगह, नाली जिससे पानी निकल सके, रौशनदान और एक चौकी आ सके। तख़्त पर एक साफ़ चादर बिछी हो कि बैठने वाले बैठ सकें और चारपाई पर बिसतर लगा हो कि आराम करने वाले आराम कर सकें। एहतियात के तौर पर पलंग पोश उसपर डाल दिया जाये कि चार दिन में मैली न हो जाये। तख़्त पर सिर्फ चादर ही न हो उसके नीचे दरी या क़ालीन हो। कालीन पर चादर बिछाओ उस पर दाहिने बायें तकिया लगाओ एक चूल्हा, कोयला, गैस या तेल से जलने वाला हो, दिया सलाई आदि मौजूद रखो जब ज़रूरत हो कहीं उठना न पड़े। सब उसी जगा मौजूद रहें। समय पर तुम किसी की बैठे बैठे खातिर कर सको। अल्मारी में चाय का सेट और चाय शक्कर आदि सब ठीक रखो। सुबह सवेरे उठकर चाय नाश्ता आदि तैयाकर कर लो। अगर चाय तैयार करना चाहो तो पानी चढ़ा कर नमाज़ पढ़ सकती हो, कुरान मजीद का पाठ (तिलावत) कर सकती हो। नमाज़ पढ़ कर चाय तैयार कर लो। कमरा बहुत साफ रखो। उगालदान भी जरूर हो। जमीन पर थूकने से गन्दगी और बीमारी पैदा होती है। अगर हो सके तो कई उगालदान रखो, तश्त (थाल या सीनी), लोटा, सुराही, गिलास भी कई हों लोटा तख्त और जमीन पर न रखो, चौकी इसीलिए होती है। तश्त चौकी के पास रखो, वज़ू चौकी पर बैठकर करो। नमाज़ पढ़कर जानमाज़ खूंटी पर लटका दो। खाने पीने का सामान इतना रखो कि कम से कम हफ़्ता के अन्दर किसी चीज़ की ज़रूरत न हो। जब अपने कमरे को साफ रखने की तुम आदी हो जाओगी तो घर भी गन्दा न देखा जायेगा । फिर घर में जो चीज़ बेमौका पाओ उसे करीने से रख दो। झाड़ू दोनों वक़्त लगाई जाये। वज़ू और नमाज़ के लिए साफ सुथरी जगह हो। अगर हर जगह तख्त न हो

(शेष पृष्ठ १३ पर)

हज़रत शुऐब अ० की कहानी

आसिफ अनज़ार नदवी

आपने हज़रत इब्राहीम अ०, हज़रत युसुफ अ०, हज़रत नूह अ०, हज़रत हूद अ०, और हज़रत सालिह अ० के किस्से पढ़ लिए और फिर आप ने हज़रत मूसा अ० का किस्सा तो बड़ी तफ़सील से पढ़ा था सब चीज़ें आपने बड़ी अभिलाषा और बड़ी रुचि से पढ़ीं थीं क़िस्से आप के दिलों को छू गये आप के दिल में घर कर गये और आप के दिमाग में बस गये। ये किस्से आप की जुबान पर भी चढ़े रहे। बहुत से लोगों ने आप को ये किस्से सुनाते हुए देखा ये वाकआ़त आप ने अपने माता पिता, बड़े भाइयों को भी खूब जी लगा कर सुनाये। आप को इसमें बड़ा मज़ा आया। कई बार आप इन किस्सों को सुनाते–सुनाते जोश और जज़्बे से भर गये।

सच और झूठ के बीच लड़ाई की कथा

इसमें कोई शक नहीं कि ये किस्से बहुत ही रोचक और मन मोहक हैं। ये किस्से सत्य और असत्य के बीच जंग की कथा हैं। ज्ञान और अज्ञानता के बीच लड़ाई की दासतान है। अंधकार और ज्योति के बीच भिड़ंत की कहानी हैं। मानवता और बरबरता के बीच मुकाबले की कथा हैं। विश्वास और अविश्वास के बीच भिड़ंत की कहानी हैं। यह किस्से असत्य के विरुद्ध सत्य की। अज्ञानता के खिलाफ ज्ञान की, बलवान के विरूद्ध कमजोरों की, सहायता और सहयोग की कथा हैं। इन क़िस्सों में ज्ञान, इल्म और हिकमत भी है। उपदेश और प्रवचन भी। अल्लाह तआ़ला ने कितनी सच्ची बात कही। "इन (अम्बिया और पूर्व काल के लोगों के क़िस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत (उपदेश) है। ये कुरआन (जिसमें ये किस्से हैं) कोई गढ़ी हुई बात तो नहीं। (कि उसमें इबरत न होती) बल्कि इससे पहले जो आसमानी किताबें नाज़िल हो चुकी हैं। ये उनकी तसदीक (पुष्टि) करने वाला है। और हर ज़रूरी बात की तफसील करने वाला है और ईमान वालों के लिए हिदायत और दया का (रहमत) का जरिया है।

मदियन की ओर उनके भाई शोएब

नबियों के जो किस्से हमने आपको सुनाये सिर्फ यही किस्से कुरआन में नहीं हैं। बल्कि कुरआन में और बहुत से दूसरे किस्से भी हैं। उन्हीं से हजरत शुऐब अ० का क़िस्सा भी है। जिनको अल्लाह तआ़ला ने मदियन और असहाबे ऐका के पास भेजा। वह सब व्यापारी लोग थे। वे यमन और शाम (सीरिया), ईराक और मिश्र के बीच लाल समुद्र (रेड सी) के तट पर एक बड़े व्यापारिक मार्ग पर बसे हुए थे। वे लोग भी दूसरे और नबियों की उम्मतियों की तरह एक अल्लाह के साथ दूसरे अन्य ईश्वर का साझा लगाते थे। "इस करेले को नीम चढ़ाते हुए वह नाप–तौल में भी कमी बेशी किया करते थे। दूसरों को देना होता तो कम देते और खुद लेना होता तो अधिक तौलते। यात्री दलों का रास्ता रोकते उनसे छेड़ छाड़ करते। उनको डराते धमकाते अल्लाह की जमीन में बिगाड़ पैदा करते। सुख–शांति में भंग डालते। उनका हाल उन बलवान धनियों जैसा था। जिन्हें न हिसाब–किताब की उम्मीद थी न वह अज़ाब से डरते। इस कारण अल्लाह तआला ने उनकी ओर शुऐब अ० को रसूल बनाकर भेजा ताकि वह उन्हें एक अल्लाह की तरफ बुलायें उनको डरायें और उनसे कहें "ऐ मेरी कौम तुम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं और नाप–तौल में कमी मत किया करो मैं तुमको खुशहाली की हालत में देखता हूं। मुझको तुम पर ऐसे दिन के अज़ाब का अंदेशा है। जो तरह–तरह की मुसीबतें लिए होगा। और ऐ मेरी कौम तुम इन्साफ से नाप–तौल पूरी–पूरी किया करो और लोगों का उनकी चीज़ों में नुकसान मत किया करो। और ज़मीन में फसाद करते हुए हद से न निकलो।

शुऐब अ० की दावत

हज़रत शुऐब अ० उनको सब बातें साफ–साफ बताते और उनके जी में धन–दौलत के प्रेम से जो गांठ लगी हुई थी। उसे खोलते और कहते। ईमानदाराना नाप–तौल से हासिल किया गया लाभ जुल्म और अत्याचार और बेइमानी से प्राप्त हुए अधिक धन से अच्छा है। और ऐ मेरी कौम जब तुम अपनी जिन्दगी में झाक कर देखोगे या उन लोगों की जिन्दगी में जिन्होंने

खूब धन कमाया। बहुत पैसा जमा किया। तो तुम्हों पता चलेगा कि वह सारी दौलत जो नाप–तौल में कमी–बेशी करके बेइमानी से और हक मारके जुटायी गयी। उनका अंजाम तबाही और बरबादी की सूरत में सामने आया तभी तो वो माल चोरी हो गया। कभी लूट लिया गया। या ऐसी जगह पर खर्च हुआ जो अल्लाह तआला को नापसन्द थी। या उस पर ऐसे लोग मुसल्लत हो गये। जिन्होंने उसको खराब कर दिया। थोड़ी सी लाभदायक चीज ढेर सारी फालतू और बेकायदा चीज़ों से बेहतर है। कुर्आन में है। "आप कह दीजिए कि खबीस (नापाक माल, हराम माल) और तैय्यिब (हलाल माल) बराबर नहीं हो सकते। अगर चे हराम माल की ज़ियादती तुम्हें अच्छी ही क्यों न लगे और मैं जो तुम्हें यह नसीहत कर रहा हूं। यह बिल्कुल साफ–सुथरी पवित्र और बेगरजाना है। अल्लाह ही तुम्हारा अकेला निगरां है। यह सब बातें हज़रत शुऐब अ० बड़े प्रेम बुद्धिमान्ता ज्ञानऔर बसीरत से कहते। "अल्लाह का दिया हुआ जो कुछ बच जाए वह तुम्हारे लिए बदरजहा बेहतर है। अगर तुमको यकीन हो और मैं तुम्हारा पहरेदार तो हूं नहीं।

बहरबान बाप ज्ञानी अध्यापक

हज़रत शुऐब अ० ने अपनी कौम एक कृपालु पिता और मेहरबान बाप और ज्ञानी शिक्षक के अनुसार तरह–तरह समझाते और उनसे कहते। "ऐ मेरी कौम तुम अल्लाह तआला की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुम्हारे पास रब की तरफ से खुली हुई दलील आ चुकी है। तो तुम नाप और तौल पूरी–पूरी किया करो। और लोगों का उनकी चीजों में नुकसान मत किया करो। और जमीन में सुधार के बाद फसाद न फैलाओ। यह तुम्हारे लिए लाभदायक है। अगर तुम मोमिन हो और तुम सड़कों पर इस लिए न बैठा करो कि अल्लाह पर ईमान लानेवालों को धमकियां दो। और अल्लाह के रास्ते से रोको। और उसमें टेढ़ेपन की तलाश में लगे रहो। और उस हालत को याद करो। जबकि तुम थोड़े थे। फिर अल्लाह तआला ने तुमको ज़ियादा कर दिया और ये भी देखते रहो कि फसादियों का क्या अंजाम हुआ।

कौम का जवाब

उनकी कौम के बुद्धिमानों उस दावत की तफसीर और तावील खूब सोच–विचार के बाद बड़ी मूर्खता और घमंड से की। गोया कि उन्होंने कोई बड़ा भेद खोल दिया हो या कोई पहेली बूझ गये हों। वह लोग कहने लगे। "ऐ शुऐब क्या तुम्हारा तकद्दुस तुमको यह तालीम कर रहा है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें। जिनकी पूजा हमारे पुरखे करते आये हैं। या इस बात को छोड़ दें कि हम अपने माल में जो चाहें तसररुफ (अधिकार) करें। वाकई आप हैं बड़े अक्लमंद, दीन पर चलने वाले।

शुऐब अपनी दावत को खोल कर बयान करते हैं

हज़रत शुऐब अ० ने अपनी कौम से बड़ी नरमी का बरताव किया न उन पर सख्ती की और न ही गुस्सा हुए।

आप (शुऐब अ०) ने कौम को यह समझाने का प्रयास किया कि लम्बे समय की खामोशी के बाद जो मैंने तुमको बुरे कामों से रोकने और भले कामों को करने का संदेश दिया है। यह केवल अल्लाह की कृपा और उसके इनआम के कारण से हुआ कि उसने मुझको नुबूवत और अपनी वही से सम्मानित किया है। मेरा सीना इस काम के लिए खोल दिया है और अपने पास से हिदायत की रोशनी प्रकाशित की है।

शुऐब अ० उनको ये जताने की कोशिश करते कि उनको इस काम पर किसी लालच ने नहीं उकसाया। अल्लाह ने उनको माल और दौलत दे रखी है। उनके पास पाक और हलाल रिज्क है। इस प्रकार से वे बड़े नेक, बड़ी अच्छी तबीअत के मालिक, शुद्ध स्वाभावी, कृपा कारी, कोमल हृदय वाले थे। इस पर वे ज़बान और दिल से ईश्वर का शुक्र करते थे। फिर वे कौम को किसी ऐसे कार्य से नहीं रोकते थे जिसको वे खुद करते हों कि किसी बुराई से रोकें और खुद ही उसमें पड़ जायें। वह उन लोगों की तरह नहीं थे। जो दूसरों को नेकी पर उभारते हैं। और अपने आप को भूल जाते हैं। और न ही उन लोगों में से थे जो ऐसी बात कहते हैं जिस पर वह खुद अमल नहीं करते थे। उनको उस अजाब से बचाना चाहते थे। जो उनके सरों पर मंडला रहा था। इन तमाम कामों की उत्तमता और अच्छाई अल्लाह की ओर लौटती है और अल्लाह ही पर उनको भरोसा था। शुऐब अ० ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम भला ये तो बतलाओ कि अगर मैं अपने रब की जानिब से दलील पर हूं और उसने मुझको अपनी तरफ से एक उम्दा दौलत यानि नुबूवत दी हो। (तो फिरकैसे तबलीग न करूं) और मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे बरखिलाफ उन कामों को

करूं। जिनसे तुमको मना करता हूं। मैं तो सुधार चाहता हूं। जहां तक मेरे बस में है और मुझको जो कुछ तौफीक हो जाती है। केवल अल्लाह ही की मदद (सहायता) से है। उसी पर मैं भरोसा रखता हूं और उसी की तरफ रूजू (प्रयागमन) करता हूं।"

हम तो तुम्हारी बहुत सी बात समझते ही नहीं

हज़रत शुऐब अ० की सारी बातों से वे ऐसे अनजान बने रहते जैसे वे उनसे किसी अपरिचित भाषा में बात कर रहे हों। हालांकि वे उसी देश के सपूत और उनके भाई थे। और जैसे उनकी बात उलझी हुई और असाहित्यिक हो। हालांकि वो उनमें सबसे ज़ियादा अच्छी ज़बानवाले और सब से ज़ियादा सुभाषनी थे। लोगों को जब उपेदश बुरा मालूम होता है और काम – काज कठिन लगने लगता है। तो इसी प्रकार की बातें सामने आती हैं।

शुऐब का आश्चर्य

हज़रत शुऐब अ० कौम में तनहा थे। परन्तु वे उनका कुछ भी नुकसान न कर सके। तो कहने लगे कि अगर उनका घराना उनके रिश्तेदार न होते तो उनको पत्थर मार–मार के हलाक कर देते। और उनसे छुटकारा पा लेते। हज़रत शोएब अ०को इस पर बड़ा आश्चर्य हुआ। तो उन्होंने अपनी नाराजगी और नफ़रत का इज़हार किया कि अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त कादिर महाबलवान है। परन्तु उनके नज़दीक बिरादरी और खानदान से कमज़ोर है। उनकी ये सोच उनकी हलाकत का सबब बन जायेगी। वह लोग कहने लगे ऐ शुऐब तुम्हारी कही हुई बहुत सी बातें तो हमारी समझ में नहीं आतीं हम तुमको अपने में कमज़ोर देख रहे हैं। और अगर तुम्हारा खानदान न होता। तो हम तुमको संगसार (पत्थर मार कर हलाक करना) कर देते। और हमारी नजर में तुम्हारीकोई प्रतिष्ठा ही नहीं। शुऐब अ़० ने कहा ऐ मेरी क़ौम क्या मेरा खानदान तुम्हारे नजदीक अल्लाह से भी ज़ियादा प्रतिष्ठावान (इज़्ज़त और दबदबे वाला) है। और उसको तुमने पीठ के पीछे डाल दिया है। बेशक मेरा रब तुम्हारे सारे करतूतों को घेरे हुए है।

आखिरी तीर

जब उनकी सारी दलीलें बेकार हो गयीं तो उन्होंने अन्तिम तीर चलाया उन्होंने कहा ऐ शुऐब हम आप को और आप के साथ जो ईमान वाले हैं। उनको अपनी बस्ती से निकाल देंगे। या फिर तुम हमारे मजहब में लौट आओ।

मुंह तोड़ जवाब

शुऐब अ़० का जवाब अपने दीन पर फक्र महसूस करने वाले का जवाब था। जिसको अपने श्रद्धा और आस्था और ज़मीर पर गर्व है। "शुऐब अ़० ने कहा क्या (हम तुम्हारे मजहब में आ जाएं) अगर चे हम उसको (अल्लाह की प्रदान की हुई शिक्षा की रोशनी में) मकरूह समझते हैं फिर तो हम अल्लाह पर बड़ी झूठी तुहमत लगाने वाले बन जायेंगे। अगर हम तुम्हारे मजहब में आ जाएं। हालांकि अल्लाह तआ़ला ने हमें उससे नज़ात दे दी है। और हमसे मुमकिन नहीं कि हम उसमें (यानि तुम्हारे मज़हब में) लौट आये। लेकिन हां ये अल्लाह ही ने जो हमारा मालिक है हमारे मुकद्दर में लिख दिया हो। हमारे रब का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। हम अल्लाह तआ़ला ही पर भरोसा रखते हैं। यह हमारे परवरदिगार हमारे और हमारी इस कौम के दरमियान हक़ के साथ फैसला कर दी जिए। और आप सबसे अच्छा फैसला करने वाले हैं।"

उन्होंने वही बात कही जो उनके पुरखे कहते आये थे।

शुऐब अ़०शुऐब अ़० की नसीहतों ने उनको कोई फायदा न पहुंचाया बल्कि वो लोग वही राग अलापते रहे जो उनके पूर्वज अलापते थे। "वह लोग कहने लगे कि तुम पर तो किसी ने बड़ा भारी जादू कर दिया है और तुम तो हमारी ही तरह के एक (मामूली) आदमी हो। और हम तो तुमको बिल्कुल झूठा ही समझते है। अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आसमान का कोई टुकड़ा गिरा दो।

अपने नबी को झुठलाने वाली उम्मत का अंजाम

वह तमाम उम्मतें जो अपने नबी की झुठलाती हैं। और अल्लाह के निआ़मत का इनकार करती हैं। उनका अंत एक तरह का होता है। यही दुर्दशा हज़रत शुऐब अ़० के उम्मतियों की भी हुई "उनको जलजलें ने आ पकड़ा सो वो अपने घर में औंधे के औंधे पड़े रह गये जिन्होंने शोएब को झुठलाया था उनकी ये हालत हो गयी जैसे इन घरों में कभी बसे ही न थे। जिन लोगों ने शोएब को झुठलाया वही खसारे (नुकसान) में पड़ गये।

हज़रत शुऐब ने अल्लाह का पैगाम पहुंचा दिया और अमानत अदा कर दी

शुऐब अ़० भी उन नबियों की

(शेष पृष्ठ ४० पर)

बाबे करम

अमतुल्लाह तस्नीम

इलाही वास्ता तुझ को करम का
कभी मुझ पर पड़े साया न ग़म का
नज़र हो तेरी रहमत की इधर भी
करम हो साथ मैं जाऊं जिधर भी
ज़ियारत हो मुहम्मद मुस्तफ़ा की
मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लि अ़ला की
यही ख़्वाहिश यही है जुस्तुजू भी
ज़ियारत भी करूं और गुफ़्तुगू भी
इलाही मुझ पे शफ़क़त की नज़र हो
इसी में ज़िन्दगी मेरी बसर हो
गुनह के बोझ से कुचली पड़ी हूं
उमीदो–यास में बेखुद खड़ी हूं।
खुदा या तू बहुत है रहम वाला
ख़ता पोश–ओ–निहायत रहम वाला
तू है मां बाप से बढ़कर मेहरबां
सिफ़त है रहम तेरी तू है रहमां
ख़लिश दुन्या कि दिल से दूर कर दे
गुनह को बख्श कर मसरूर कर दे
दमे आखिर तेरा कल्मा हो जारी
हो तेरी ही महब्बत दिल पे तारी
महब्बत में फ़ना हो जाऊं बिल्कुल
अ़ज़ाबे क़ब्र से मुझ को बचाना
इलाही मुझ को दोज़ख से बचाना
मेरी हो क़ब्र ठन्डी और कुशादा
हो उस में रोशनी बे हद ज़ियादा
हों मुझ पर मुनकशिफ़ अनवारे जन्नत
नुमायां मुझ पे हों अनवारे जन्नत
फ़िरिश्ते बोलें अब आराम से सो
न होगा अब कभी ग़म कोई तुम को
फुंके जब सूर आएं सब निकल कर
हो मेरा नश्र भी और हश्र बेहतर
हो मुझ पर हश्र में रहमत का साया
मेरे सर अ़र्शे रफ़अ़त का हो पाया

● ● ●

सच्चा राही

क़ारी हिदायतुल्लाह 'हिदायत'

अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।
भेद भाव जो ख़त्म कराए वही तो सच्चा राही है
भूली भटकी दुन्या अपनी राह अलग अपनाये है
शैतानों का साथी यह सब देख देख मुस्काये है
वह जो सीधा मार्ग दिखाये वही तो सच्चा राही है

अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।
परखो इसको जांचो इसको देखो क्या बतलाता है
रस्ता कैसा है वह आखिर जिसको यह दरशाता है
सीधे पथ को जो दरशाये वही तो सच्चा राही है।
अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।

चार दिनों का जीवन है पथ पाप का न अपनाओ तुम
तन मन धन से गैरों के भी संकट में काम आओ तुम
पापी को जो पाक बनाये वही तो सच्चा राही है
अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।

झूठ दगा मक्कारी रिश्वत खोरी पाप की बातें है
चोरी डाका और ज़िना सब शरमाने की बाते हैं
पापों से जो सब को बचाये वही तो सच्चा राही है
अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।

छोड़ के इस संसार को यारो पास खुदा के जाना है
काम करो वह जो हो अच्छा क्योंकि मुंह दिखलाना है
प्यार से तुम को जो समझाये वही तो सच्चा राही है
अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।

कुरआनी बातें हैं इसमें जिससे जी ललचाये है
प्रेम महब्बत दीन की बातें लेकर के यह आये है
राहे हिदायत जो दिखलाए वही तो सच्चा राही है
अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।

जुल्म हिदायत कब तक होगा चार दिनों बस राजा है
मज़लूमों की आहों से बज जाता उस का बाजा है
पुन्न की बातें जो बतलाये वही तो सच्चा राही है
अम्न का जो पैगाम सुनाये वही तो सच्चा राही है।

● ● ● ● ●

इंसानी जीवन में जज़्बात की भूमिका

हबीबुल्लाह आज़मी

जज़्बे और विचार इंसान की ज़िन्दगी में बहुत शक्ति रखते हैं। यह ज़ज़बात ही है जो असम्भव कार्य को भी सम्भव बना देते हैं। जज़्बात की रौ में आदमी बड़े से बड़ा काम कर जाता है। जज़्बात जो मन में उत्पन्न होता है यह एक रूहानी शक्ति है जो शरीर के रक्षा तंत्र को सुदृढ़ रखती है।

जज़्बे और विचार की शक्ति : मन हमारे शरीर पर हुकूमत करता है। विभिन्न धर्मों में इंसानी शरीर पर मन के प्रभाव को स्वीकार किया गया है। विचारों और जज़्बात तथा विश्वास का सम्बन्ध विभिन्न सूरतों में देखा जा सकता है। तावीज़, गंडे जादू टोने टोटके आदि की बुनियाद विश्वास और विचारों पर निर्भर है। इन्हीं जज़्बात और विश्वास की रूहानी शक्ति का आधार बनाकर पीर, फ़क़ीर और ओझा पुराने ज़माने में हमारे देश में विभिन्न बीमारियों का इलाज करते थे और इन्हीं जज़्बाती और रूहानी विश्वास के फलस्वरूप कुछ बीमारियां ठीक भी हो जाती थीं। यूनानी तिब में मिज़ाज को किसी रोग के इलाज में खास महत्व दिया जाता है परन्तु लगभग तीन सौ साल पहले एक फ्रांसीसी दार्शनिक (फलसफी) रेनी विकारत ने मन और शरीर को दो अलग अलग चीज़ें क़रार देकर वर्तमान अंग्रेजी इलाज के तरीके की बुनियाद रखी। इससे लाभ तो बहुत हुआ परन्तु उसने मन और शरीर के सम्बन्ध को बहुत ही रहस्यमय बना दिया।

डा० हनिमन का सिद्धान्त : लगभग एक सौ साल पहले डा० हनिमन ने मेडिकल साइंस में एक चौंका देने वाला नजरिया (सिद्धान्त) पेश किया। उसने एक तजुर्बा किया कि विभिन्न दावाओं को कम से कम मात्रा में इतना सूक्षम बनाया कि उस के भौतिक (मादी) प्रभाव समाप्त हो गए और प्रभावी अंश एक अदृश्य शक्ति में तबदील हो गया और जब यह दवाएं एक स्वस्थ इंसान को दी गईं तो उसमें इक निश्चित लक्षण पैदा हो गए। इस तजुर्बे से हनिमन ने यह नतीजा निकाला कि इंसान बीमार उस समय होता है जब बीमारी के सूक्ष्म प्रभाव उसकी जीवन शक्ति अर्थात रूह को प्रभावित कर देता है। फिर यह बीमार रूह अपनी बीमारी को शारीरिक लक्षण से प्रकट करती है। इस सिद्धान्त के अनुसार बीमारी रूह से शुरू होती है ओर फिर शरीर तक पहुंचती है। इसी लिए होमियो पैथिक दवाए शरीर को जीवन शक्ति अर्थात रूह की रक्षा शक्ति को ठीक करके शरीर से बीमारी के लक्षण को दूर कर देती है। डा० हनिमन ने रूह को कंट्रोलिंग सेंटर करार दिया जो शरीर पर पूरी तरह हावी है।

डाक्टरों के तजुर्बे में यह भी बात आई है कि गम्भीर बीमार मरीज़ों को केवल सादा मिल्क आफ सूगर की पुड़ियां दी जाएं तो भी उनमें से बहुत से इस खयाल से अच्छे हो जाते है कि उन्हें दवा दी गई है। इस प्रकार मन और रूह की ताकत ने अपने आप को तस्लीम करा लिया है।

वर्तमान युग में शरीर और मन के प्रभाव का अध्ययन वैज्ञानिक रूप से किया जा रहा है और इस ने एक नई सांइस **Neuroimmunology** को जनम दिया है।

अनुसन्धान से यह मालूम हुआ कि शरीर और मन एक आश्चर्यजनक समी तक एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। हमारे मनोदशा शरीर की ग्रंथियों की कोशिकाओं (**Cells**) और शरीर के अंगों पर बहुत ही जटिल और गहरे प्रभाव छोड़ती है। इससे हमारी जीवन शक्ति (रूह) पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

जज़्बात और शरीर :

जिन लोगों के निकटतम सम्बन्धी हितैशी मित्र या जीवन साथी बिछुड़ जाते हैं दुख के कारण उनके शरीर का रक्षातंत्र कमज़ोर पड़ जाता है और अकेले पन का एहसास उन्हें बीमार कर देता है। एक प्रशिक्षण से यह बात सामने आई है कि ऐसी महिलाओं और पुरुषों में जिनके सगे सम्बन्धी या मित्र नहीं रहे उनकी मृत्यु दर तीन गुना अधिक है।

ओहायू यूनिवर्सिटी कालेज आफमेडिसिन के मनो वैज्ञानिक जे.के. गलीज़र का कहना है कि "हमें मन और शरीर में आशा से कहीं अधिक मजबूत सम्बन्ध के साक्ष मिले हैं। ऐसा महसूस होता है जैसे शरीर की तमाम कोशिकाओं (cells) की भी आखें होती हैं और वह प्रसन्नता, शोक, आशा और

निराशा की दशा का प्रत्यक्ष ज्ञान रखती है।

तजुर्बे से मालूम हुआ कि दिमाग़ और स्वतः स्वचालित रक्षा तंत्र व्यवस्था अपनी सीमा में अपनी अनुभूति के अनुसार सन्देश बराबर एक दूसरे को भेजते रहते हैं। तनहाई, बेबसी और उदासीनता के कारण गुर्दे की ग्रन्थियों का हारमोन खून अधिक मात्रा में पम्प करने पर विवस कर देता है। यह रसायनिक सन्देश हर रक्षा तंत्र व्यवस्था को रोक देता है ओर जेहनी दशा इंसान को बीमार बना देती है।

दूसरी तरफ़ जार्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के बायो केमिस्ट एलेन गोल्डस्टीन ने पता लगाया है कि रक्षातंत्र व्यवस्था के कुछ पदार्थ अपने प्रभाव से डिपरेशन पैदा कर देते है। इससे साबित हुआ कि रक्षा तंत्र के खास भौतिक साधन अपने प्रभाव से दिमाग़ को प्रभावित करते हैं।

दिमाग़ और रक्षा तंत्र व्यवस्था की वास्तविकता ज्यों ज्यों सामने आ रही है उनसे यह बात स्पष्ट हो रही है कि हम एक और रहस्यमय संसार में पहुंच गये हैं। शरीर और मन इस प्रकार एक दूसरे से गुथे हुए हैं कि उनको दो अलग अलग एकाई मानना कठिन नज़र आता है। वर्षों पुराने इस विचार को नकारा जा चुंका है कि शरीर और मन का इलाज अलग अलग होना चाहिए। अब यह निश्चित हो चुका है कि एक की दशा दूसरे को प्रभावित करती है। यह भविष्य में ही पता चल सकेगा कि उपचार या इलाज पद्धति पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि रक्षा तंत्र को अपनी इच्छानुसार प्रयोग करके हर प्रकार की बीमारी का उपचार केवल मन की शक्ति से किया जा सकेगा।

एक दिन आएगा कि हर बीमारी का इलाज मन को ही प्रभावित करके किया जाने लगेगा क्योंकि यह मन ही है जो शरीर पर नियंत्रण रखता है और इसे बीमार या स्वस्थ करता है।

मन और शरीर की कलीनिक: मन की शक्ति शरीर पर साबित होने के बाद अमरीका में तेज़ी से **Mind and body clinic** (मन और शरीर की क्लीनिक) स्थापित होना शुरू हो गयी है। उन का नारा है कि स्कार्आत्मक विचार आप को स्वस्थ कर सकते हैं। यह चिकित्सक सर के दर्द से लेकर कैंसर तक के इलाज का दावा करते हैं। एक डाक्टर ने सरजरी और पेंसलीन के बाद मन के शरीर पर स्वास्थ लाभ प्रभाव के अनुसन्धान को मेडिकल साइंस की तीसरी बड़ी खोज क़रार दिया है। यह चिकित्सा पद्धति अभी प्रारम्भिक स्टेज में है परन्तु भविष्य में अच्छी सम्भावनाओं से इन्कार नहीं किया जा सकता।

ज़ेहनी (मन के) लक्षण का महत्व :– ज़ेहन (मन) और शरीर के सम्बन्ध की इस खोज ने एक इन्कलाब पैदा कर दिया है। पहले ज़ेहनी लक्षण को केवल होमियोपैथिक डाक्टर भी हर प्रकार के मरीज़ों की ज़ेहनी लक्षण (केस–हिस्ट्री) लिखने लगे हैं।

इन सब का निचोड़ यह है कि अच्छी और रचनात्मक सोच शरीर के तमाम अंगों पर अच्छा प्रभाव डालती है और दवाओं के प्रभाव को तेज़ करती है। जिससे मरीज़ शीघ्र स्वस्थ हो जाता है।

निष्कर्ष :–

अतः इंसान को हमेशा सकारात्मक विचार रखना चाहिए। मरीज़ की अयादत, उस से हमदर्दी उस में जीने की लगन और मन को संतोष देती है। लोगों के जज़्बात को समझने और उसकी क़द्र करनी चाहिए। बदगुमानी से बचना किसी का अपमान न करना ऐसे जज़्बात और विचार हैं जो मनुष्य के उच्चतम श्रेणी तक पहुंचा देते हैं।

यह जज़्बा–ए–शहादत था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश पर बद्र के मैदान में ३१३ सहाबियों ने एक हज़ार मक्का के दुशमनों की फौज को प्रास्त कर दिया। इसी जज़्बे की शक्ति ने एक नौजवान सहाबी को यह हौसला दिया कि एक हाथ कट जाने के बावजूद वह दिन भर दूसरे हाथ से तलवार चलाता रहा और कटाहुआ हाथ खाल से लगा होने के कारण लड़ने में रूकावट महसूस हुई तो पैर के नीचे दबाकर अलग कर दिया। इंसानी इतिहास ने ऐसे जज़्बात रखने वाले आशावान इंसान न देखे होंगे ।

इस्लाम इंसानियत की भलाई और कामयाबी की शिक्षा देता है। इस्लाम सिद्धान्त और नियमों की पाबन्दी पर बल देता है। अमन, शांति और सत्य के मार्ग पर चलने का जज़्बा पैदा करने दीन दुखियों, असाहय व्यक्तियों की सहायता तथा सत्य के मार्ग पर चलने का उपदेश देता है और इस जज़्बे को सुदृढ़ करता है कि इन कर्मों के बदले में मरने के बाद स्वर्ग में हमेशा हमेश रहने का स्थान प्राप्त होगा।

जब तक यह गुण मुसलमानों में थे वह संसार के मार्गदर्शक और विजयी रहे। आवश्यकता है कि हम इन जज्बात और विचारों को अपने अन्दर फिर पैदा करें और इंसानियत को उसकी उच्चतम मंज़िल तक ले जाएं।

सत्य में मोक्ष है।

फास्ट फूड के चलते बच्चे भी हो रहे

मधुमेह के शिकार

डा० अगरवाल

फास्ट फूड संस्कृति बच्चों में भी मधुमेह का रोग पैदा कर रही है। तेजी से बदल रही जीवन शैली, उससे उपज रहा मानसिक तनाव, नगरीकरण व औद्योगिकीकरण लोगों को इसका शिकार बनाने में अहम भूमिका अदा कर रहे हैं।

मधुमेह दिवस के तहत विभागाध्यक्ष डा.सी.जी. अग्रवाल ने कहा कि आधुनिकीकरण के तहत लोगों का शरीर श्रम कम हो गया है। उन्होंने कहा कि बढ़ते दबाव के कारण लोगों के शरीर में काउण्टर इंसुलिन हार्मोन उत्पन्न होने से शरीर में शुगर की मात्रा बढ़ जाती है। इसकी रोकथाम के लिए विशेषज्ञों की सलाह पर अमल करना चाहिए। वर्जिश या शारीरिक श्रम बढ़ाना चाहिए, खान–पान की आदत में बदलाव लाना होगा। उन्होंने कहा कि फास्ट फूड संस्कृति अब बच्चों में इस बीमारी को बढ़ावा दे रही है।

देश में एक आकलन के अनुसार ढाई से तीन करोड़ा लोग मधुमेह की चपेट में हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष २०२५ में यह संख्या छह करोड़ से अधिक हो जाएगी। डा० सी.जी. अग्रवाल ने कहा कि इस रिपोर्ट से इत्तिफाक नहीं रखते हैं, जो ट्रेंड चल रहा है उस लिहाज से आने वाले दस वर्षों में ही छह करोड़ का आंकड़ा पार हो जाना चाहिए।

इस अवसर पर न्यूरॉलॉजी के डा. अतुल अग्रवाल ने कहा कि मधुमेह के रोगी की नसों पर भी इसका असर पड़ता है। नसों पर असर पड़ने के साथ ही दिमाग की स्थिति बदलती है। यह खतरनाक स्थिति है। इसकी रोकथाम के लिए चिकित्सीय संरक्षण में उचित प्रयास किए जाने चाहिए।

बचने के लिए कुछ टिप्स

- भोजन में देर होने पर फल, मलाईरहित दूध या फल का जूस लें
- टीवी देखते, पढ़ते या रेडिया सुनते समय खाना न खाएं।
- धीमे–धीमे भोजन करें। इससे कम भोजन में भूख शांत होगी।
- मधुमेह का उपचार करा रहे लोग शराब से परहेज करें।
- अत्यधिक मीठे पदार्थों से परहेज करें। समय पर रक्त परीक्षण कराएं।
- लो शुगर वाले मरीज़ अपने साथ पिसी हुई शक्कर रखा करें।
- ऐसे लोगों को अत्यधिक भूख लगने पर, अचानक पसीना आने पर, घबराहट, बेहोशी, कमजोरी, हृदय स्पंदन बढ़ने, होंठ थरथराने, सिरदर्द होने, धुंधली या दोहरी दृष्टि होने, कार्य क्षमता में कमी आने, मतिभ्रम होने या आलस्य आने की स्थिति में फौरन पिसी शक्कर का इस्तेमाल करना चाहिए।
- पैरों की उचित देखभाल करनी चाहिए और तलुओं और पैर की अंगुलियों को साफ रखना चाहिए।
- आंख में दिक्कत आने पर चिकित्सक की सलाह लेनी चाहिए।
- चरणबद्ध तरीके से व्यायाम करना चाहिए।

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Dealer :

FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Dealer in :

Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

बच्चे और माहौल

हबीबुल्लाह आज़मी

बच्चों की तर्बियत की ज़िम्मेदारी मां बाप, क़रीबी रिश्तेदारों और समाज पर है। यदि घर, सगे सम्बन्धियों और दोस्तों तथा समाज का माहौल बच्चे को साफ़ सुथरा और स्वच्छ मिलेगा तो वह नेक, सभ्य और समाज का हितैषी बनेगा। अगर माहौल ख़राब मिला तो वह असामाजिक व्यक्ति बनकर अपने खान्दान और समाज को दूषित करेगा।

वास्तव में बच्चे का ज़ेहन एक कोरे कागज जैसा है घर और समाज का माहौल जैसा होगा उसके ज़ेहन पर वैसी ही छाप पड़ेगी और पूरे जीवन में उसका प्रभाव नज़र आएगा। हर प्रकार का नैतिक और शारीरिक प्रदूषण रहित माहौल बच्चे का जन्म जाति अधिकार है। हर हाल में मां बाप और समाज को उसे यह अधिकार देना चाहिए। यदि इस में तनिक भी कोताही बर्ती गई तो समाज और खान्दान का भविष्य अन्धकार में डूब जाएगा।

वर्तमान युग के आपाधापी जीवन में मां बाप को बच्चों को समय देने का अवसर नहीं मिलता जो बच्चों का मौलिक अधिकार है। मां बाप को चाहिए कि वह अपने व्यस्त समय में से थोड़ा समय बच्चों को रोज़ाना दें ताकि बच्चे समझें कि उनको महत्व दिया जा रहा है, उनसे प्रेम और लगाव रखा जा रहा है उनकी समस्याओं पर ध्यान दिया जा रहा है। उन्हें उपेक्षा का आभास न होने पाए। बच्चे में भी आत्मसम्मान की भावना होती है। उस के साथ नर्मी और मधुर व्यवहार किया जाए ताकि उनके आत्मसम्मान को ठेस न लगे अगर उस से कोई ग़लती हो जाए तो नर्मी से समझा देना चाहिए। डांट फटकार और मारने से उसके दिल में प्रतिरोध की भावना उत्पन्न होती है। दूसरों के सामने तो कदापि न झिड़कना चाहिए। ऐसा करने से बच्चे हीन भावना का शिकार हो जाते हैं जो जीवन भर उनका पीछा नहीं छोड़ती।

घर में तमाम बच्चों के साथ एक जैसा व्यवहार करना चाहिए। इस्लाम ने तो यह शिक्षा दी है कि बच्चों में बराबरी का ध्यान रखना चाहिए अन्यथा दूसरे बच्चों में निराशा पैदा होगी और अपने भाई या बहन से नफ़रत तथा ईर्ष्या करने लगेंगे।

बच्चा मां बाप को आईडियल समझता है। वह उनके कार्यों को ध्यान पूर्वक अध्ययन करता और उसी के अनुसार अपने को ढालने की कोशिश करता है। अतः बच्चे के सामने कभी कोई अशलील हरकत नहीं करना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए। अगर आप चाहते हैं कि आप का बच्चा सच बोले, ईमानदार, करमठ बने तो आप को भी सच्चा, ईमानदार और करमठ बन कर दिखाना होगा।

शिक्षकों को चाहिए कि यदि बच्चा किसी विषय में कमज़ोर है तो उस विषय को रोचक बना कर उसे पढ़ाएं, मारने पीटने से बच्चे को उस विषय, से नफरत हो जाएगी। नर्मी और शालीनता से आप बच्चे को अच्छी तरह समझा सकते हैं और वह इस प्रकार जल्द सीख जाएगा।

यहां एक बच्चे की मिसाल देना उचित होगा जो एक मदरसे में आम पारा पढ़ने जाता था। वहां जो अध्यापक पढ़ाते थे वह किसी प्रकार की फीस आदि नहीं लेते थे परन्तु पढ़ाने में इतने सख़्त थे कि यदि बच्चों को सबक़ याद नहीं रहता तो बेंत से खूब धुनाई कर देते थे। उस बच्चे का डर से और पिटाई से यह हाल था कि वह दो तीन सूरः से आगे न बढ़ सका और मदरसे से ग़ैरहाज़िर रहने लगा खास कर उस दिन जब पीछे का पाठ सुनाना होता। उस के बड़े भाई एक दूसरे मदरसे में पढ़ते थे। उसके जी में आया कि वह खुद क्यों न उसी मदरसे में जाए और एक दिन वह अपना बस्ता लेकर उस मदरसे में पहुंच गया। वहां अध्यापक ने स्नेह से बैठाला और उसको जहां तक याद था उसके आगे सबक़ दिया। उस बच्चे की काया पलट गई और वहां उसने कुछ ही दिनों में पूरे कुर्आन का नाज़रा ख़त्म कर लिया। यह स्नेह और प्रेम से पढ़ाने का परिणाम था। यह कोई मनगढंत कहानी नहीं बल्कि एक सच्ची घटना है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन है "जो व्यक्ति नर्मी के गुण से वंचित किया गया सारे कल्याण (खैर) से वंचित किया गया"

घर का माहौल अगर दीनी है तो उसके मन पर दीनी प्रभाव पड़ेगा। उसकी उठान नैतिक मूल्यों (एखलाक़ी कदरों) पर होगी और वह जीवन में

उच्च स्थान प्राप्त करेगा। बच्चों को सबसे पहले कलमा सिखाएं। सात साल के होने पर नमाज़ सिखाएं और नमाज पढ़ने में दिलचस्पी पैदा कराएं। दस साल कि उम्र में ताकीद से नमाज़ पढ़वाएं। अगर मां बाप और घर के दूसरे लोग पाबन्दी से नमाज़ पढ़ें तो बच्चा भी नमाज़ की तरफ़ स्वाभाविक तौर पर आकर्षित होगा। दस साल के बच्चों को अलग बिस्तर पर सुलाएं।

बच्चे क़ौम का सरमाया हैं। देश को यदि उन्नति के शिखर पर ले जाना है तो समाज को बच्चों की तर्बियत पर अधिक ध्यान देना होगा। समाज के ग़रीब बच्चे होटलों और कारखानों में काम करते देखे जा सकते हैं। उनका बचपन ही उनसे नहीं छीन लिया गया है बल्कि उन्हें हीन भावना में मुबतिला कर दिया गया है जब वह अपने उम्र के बच्चों को अच्छे कपड़ों में चमचमाती कार पर बैठे देखते हैं तो निराशा की तस्वीर बन जाते हैं।

विकलांग और यतीम बच्चों की दशा तो हमारे यहां दैनीय है। ऐसे बच्चों की शिक्षा दीक्षा के लिए ऐसी संस्थाएं नाम मात्र की हैं, जहां हर वर्ग के बच्चे समान रूप से लाभान्वित हों। कुर्आन मजीद में ऐसे इबादत गुज़ार लोगों को भी हलाकत की ख़बर दी गई है जो यतीमों को धक्के देते और लाचार लोगों की ख़बरगीरी नहीं करते। अल्लाह तआला का कथन है कि :

"तुम लोग यतीम की कुछ कद्र और ख़ातिर नहीं करते और दूसरों को भी निर्धन को खाना खिलाने पर उत्साहित नहीं करते" (सूरतुल फ़ज्र)

हमें यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि आर्थिक नाबराबरी में परवान चढ़ी क़ौम रचनात्मक नहीं बल्कि विनाशकारी होगी जिसके चिन्ह हम वर्तमान समाज में देख रहे हैं।

अतः खान्दान, समाज और देश को ऊपर उठाना है तो बच्चों को जो इस देश के भावीनागरिक होंगे उनकी शिक्षा दीक्षा (तालीमोतर्बियत) पर शुरू से ही ध्यान देना होगा। मुसलमानों को अगर अपनी मिल्ली पहचान क़ाइम रखना है तो अपने बच्चों को दीनी माहौल और नैतिक वातावरण प्रस्तुत करना होगा।

परिपीड़ा का आभास

मनुष्य के पास सब से अनमोल चीज़ यह है कि वह दूसरे की पीड़ा से प्रभावित होता है उसके भीतर प्रेम की भावना है। उसको प्रभावित करने वाली कोई चीज़ मिल जाए तो वह प्रभावित होकर गतिशील हो जाता है। फिर वह यह नहीं देखता कि पीड़ित किस धर्म या किस समुदाय का है, किस वर्ग या किस क्षेत्र का है, अपने देश का है या विदेशी है। मनुष्य, मनुष्य का हृदय देखता है। उसकी पीड़ा का अनुभव करता है। जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है और वह खिंचने के लिए विवश है उसी प्रकार मानव के हृदय का चुम्बक मानव के हृदय को खींचता है।

प्रेम की सम्पत्ति

यदि मनुष्य से प्रेम की सम्पत्ति छिन जाए तो वह दीवालिया हो जाएगा। जिस देश से प्रेम का धन ले लिया जाए तो वह देश दरिद्र हो जाएगा। यदि किसी देश में अमरीका का धन हो, रूस की व्यवस्था हो, अरब देशों के पेट्रोल के कुएं हों, सोने चांदी की गंगा बहती हो, हुन बरसता हो परन्तु प्रेम का सोत सूख गया हो तो वह देश कंगाल है। वह देश अल्लाह की दया तथा कृपा से वंचित रहेगा।

(सय्यिद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी के एक भाषण से)

MOHD. ASLAM

(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

] अमरीकी राष्ट्रपति बुश ने नवम्बर ०४ में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के ाले से अपने चुनावी चन्दे के लिए ूयार्क का दौरा किया। उनके साथ पराष्ट्रपति डाकचेनी भी थे। रिपोर्ट अनुसार न्यूयार्क के दौरे में उनको ० लाख डालर का चन्दा मिला। परन्तु ार्ज बुश को अपने समर्थकों के तिरिक्त हजारों ऐसे प्रदर्शनों का भी ामना करना पड़ा जो उनके प्रशासन आंतरिक और न्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विरुद्ध प्रदर्शन र रहे थे। मुख्यतः इराक के विरुद्ध द्ध की वैधानिक हैसियत के हवाले से जारों प्रदर्शनकारियों की एक बड़ी ख्या No more Bush के नारे लगा ह थे। इस के अतिरिक्त सड़कों के ानों तरफ बहुत से लोग हाथों में बुश ारोधी बैनर लिए खड़े थे। भीड़ में क व्यक्ति ट्रेफिक सिंगनल पर राष्ट्रपति ार्जबुश का मास्क चेहरे पर चढ़ाए पने हाथ में बड़ा सा ग्लोब लिए खड़ा ा।

संयुक्त राष्ट्र के चीफ़ इंस्पेक्टर ीर इराक़ में हथियारों की जांच कर्ता ा० हैन्स बलक्स ने एक मर्तबा फिर मरीका और ब्रिटेन पर आरोप लगा है क इराक़ पर हमला करने में जल्दबाज़ी ा काम लिया गया है। उन्होंने कहा क यह अजीब बात है कि इराक़ पर मरीकी हमले से पहले उनकी टीम ो केवल चन्द हफ़्तों का समय दिया गया लेकिन अब अमरीका इन हथियारों की खोज के लिए समय मांग रहा है। उन्होंने कहा कि इस मामले में इन देशों ने दोषपूर्ण शहादतों की बुन्याद पर नतीजा निकाला। डा० बलक्स ने कहा कि यह बात समझ में आने वाली नहीं है कि दोनों देशों को हथियारों की मौजूदगी के बारे में सतप्रतिशत यक़ीन था मगर उन्हें कहां रखा गया है अब इस मामले में अमरीका और ब्रिटेन को कोई सूचना नहीं है। बलक्स ने यह बयान न्यूयार्क में एक थिंक टैंक के सामने दिया। इराक़ पर हमले से पहले अमरीकी सरकार को इनके बयानों से विशेष निराशा हुई जिन में उन्होंने कहा था कि उनकी टीम को इराक में सार्वजनिक विनाषकारी हथियारों के बारे में किसी तरह के कोई साक्ष नहीं मिले। इन दिनों अमरीका और ब्रिटेन की पार्लियामेंट कमेटियां इस बात की जांच कर रही हैं कि इनकी सरकारों ने गुप्तचर विभाग की रिपोर्टों को अपने उद्देश्य के लिए प्रयोग किया।

मलेशिया के प्रधान मंत्री महातिर मुहम्मद ने कहा है कि इस्लामी दुन्या संयुक्त और समान विचार अपना कर ही अंतर्राष्ट्रीय शक्ति बन सकती है। यह बयान उन्होंने मलेशिया के दौरे पर आए हुए तुर्की के प्रधानमंत्री तैयब अर्दगान के सम्मान में दिये गये भोज में दिया। उन्होंने कहा कि इस्लामी दुन्या को एकताबद्ध और संगठित होकर आगे बढ़ना होगा ताकि वह इस्लामी दुन्या के विरुद्ध चैलेंज का मुकाबला कर सकें। उन्होंने कहा ऐसा तभी सम्भव होगा जब एक अरब मुस्लिम बिरादरी के माली साधनों और तेल की प्राकृतिक दौलत के साधनों से भरपूर लाभ उठाया जाए। इराक़ की तरफ संकेत करते हुए उन्होंने मुसलमानों से अपील की है कि वह इस संकट से शिक्षा ग्रहण करें और कहा कि मुस्लिम देशों में एका न होने के कारण इराकी जनता पर अत्याचार हुआ।

मलेशिया के प्रधानमंत्री महातिर मुहम्मद का यह विचार बिल्कुल सही है कि पूरा पश्चिम इस्लाम के विरुद्ध संयोजित साजिश करके इस्लाम को आतंकवाद से जोड़ने की कोशिश कर रहा है। और केवल मुस्लिम देशों और धार्मिक गुरू को ही आतंकवादी करार दिया जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि मुसलमान देशों और उनके लीडर इस्लाम के विरुद्ध इस साजिश को समझने और उसका मुक़ाबले की तैयारी करें अन्यथा एक के बाद दूसरा मुसलमान देश इस साजिश का निशाना बनता चला आएगा।

(पृष्ठ ३३ का शेष)

तरह थे जिन्होंने अल्लाह का पैगाम और उसकी दी हुई अमानत लोगों तक पहुंचा दी और हुज्जत कायम कर दी। अपनी कौम की बरबादी के बाद शुऐब अ० उनसे मुंह मोड कर चले और कहने लगे। ऐ मेरी कौम मैं तुमको अपने पालनहार के अहकाम (आदेश) पहुंचा दिये थे और मैंने तुम्हारी खैरख्वाही की। फिर मैं काफिरों पर क्यों रज करूं।